Zilhijjah 1431

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block,
REGALIA HEIGHTS, Ahmadabad Palace Road,
KOHE-FIZA, BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
44, Ganesh Niwas, Shamla Hills Road
Near AAKASHWANI
BHOPAL (MP)
0755-4224261

ईदुल-अज़हा मुबारक

इस्लाम की सबसे अहम इबादतों में से एक, हज है। हज के आमाल में से एक वाजिब काम मिना में क़ुरबानी करना है, वह क़ुरबानी जो हाजियों के तक़वे और ख़ुलूस की निशानी है। क़ुरबानी जो यह बताती है कि हाजी ,ख़ुदा के एहकाम के सामने हज़रत इब्राहीम[अ॰] और हज़रत इस्माईल[अ॰] की तरह पूरी तरह हाज़िर हैं। ख़ुदा ने हज़रत इब्राहीम[अ॰] का इम्तिहान लेने के लिए उनके बेटे इस्माईल[अ॰] की क़ुरबानी पेश करने का हुक्म दिया। हज़रत इब्राहीम[अ॰] ने ख़ुशी-ख़ुशी इस हुक्म को क़ुबूल कर लिया और बाप ने बेटे के गले पर छुरी रख दी। ख़ुदा ने उस ख़ुलूस और बंदगी को इतना पसंद किया कि हज़रत इब्राहीम[अ॰] पर दरूदो सलाम भेजा और बशारत सुनाई कि वह इस अज़ीम इम्तिहान से सर बुलन्दी के साथ गुज़र गए हैं और एक दुम्बा, हज़रत इस्माईल[अ॰] की जगह क़ुरबानी के लिए भेज दिया और फिर इस इब्राहीमी सुन्नत को सारे इंसानों के लिए रहती दुनिया तक इताअत की निशानी के तौर पर ज़िंदओ जावेद बना दिया। यक़ीनन ये क़ुरबानी उसी ख़ुलूस और जज़्बे की निशानी है। हमें सोचना चाहिए कि हमारा 'इस्माईल' कौन है, हम ख़ुदा की बारगाह में क्या क़ुरबान कर रहे हैं? काश हम इस मौक़े पर ख़ुदा की रिज़ा के लिए अपनी ख़्वाहिशात की क़ुरबानी पेश कर सकें तो शायद यह क़ुरबानी बंदगी की मेराज बन जाए।

ये ईद दस ज़िलहिज्जा को बड़ी धूम-धाम से मनाई जाती है, यह वही दिन है जिस रोज़ हाजी मिना में अपनी क़ुरबानियां पेश करते हैं। इस दिन ख़ुदा ने हज़रत इब्राहीम[अ॰] की सुन्नत को न सिर्फ़ हाजियों के लिए वाजिब बल्कि तमाम मुसलमानों के लिए सुन्नत और मुस्तहब कर दिया है। ईदे क़ुरबान के दिन हर मुसलमान क़ुरबानी पेश कर सकता है। ख़ुद रसूले इस्लाम[स॰] ने आख़िरी हज के मौक़े पर सौ ऊँट ज़िबह किए थे। क़ुरबानी का वक़्त 10 ज़िलहिज्जा को सूरज निकलने के बाद से 12 ज़िलहिज्जा को सूरज डूबने तक रहता है। दरअस्ल ईद ख़ुशी के लौट आने को कहते हैं। मतलब ये है कि ईद वह दिन है जो हर साल अपने साथ ख़ुशियों का पैग़ाम लाता है। इस्लाम में ईद और बक़राईद दो ऐसी ईदें हैं जो सारे मुसलमानों के बीच बहुत धूम-धाम से मनाई जाती हैं। इन दोनों ईदों में ख़ुदा का शुक्र अदा करने के लिए नमाज़ में गुनाहों की माफ़ी मांगी जाती है। इस नमाज़ की ख़ुसूसियत यह है इसकी अदाएगी के लिए पूरे शहर के लोग एक जगह पर जमा होकर ख़ुदा के सामने सजदे में सर रखते हैं। नमाज़ ख़त्म होने पर इमामे जमाअत ख़ुतबा भी देता है जिसमें तक़वे और परहेज़गारी की नसीहत के साथ क़ुरबानी की फ़ज़ीलत और इस्लामी दुनिया के समाजी इश्युज़ पर बात की जाती है। इस सिलसिल में हमें ख़ुलूस पर ख़ास ध्यान देना चाहिए। क़ुरबानी करना सवाब है लेकिन इसमें दिखावा, आपसी मुक़ाबला या बड़ाई शामिल हो जाए तो सवाब बर्बाद हो जाता है। कुछ जगहों पर लोग क़ुरबानी के जानवर की ख़रीदारी और एक से बढ़कर एक ख़रीदने बल्कि कभी-कभी सिर्फ़ अपनी बड़ाई के लिए फ़ुज़ूलख़र्ची से भी काम ले लेते हैं और मशहूर होने के लिए बड़ी-बड़ी क़ीमत के जानवर ख़रीदते हैं जो सही नहीं है। अगर यही पैसा अपने दीनी भाईयों की ख़ुशहाली और भलाई के लिए ख़र्च किया जाए तो ज़्यादा सवाब मिलेगा। ख़ुशी के इज़हार के लिए इस दिन आपस में मुस्कुराते हुए गले मिलने, आपसी रंजिशों और नफ़रतों को भुला देने का बहुत सवाब है। ख़ुदा मुसलमानों के इन्हीं पाकीज़ा जज़्बात को देखकर फ़रिश्तों के बीच फ़ख़्र करता है बल्कि ख़ुश होकर बंदों के गुनाहों को माफ़ भी कर देता है। इस ईद के समाजी फ़ायदे यह हैं कि दूर-दराज़ के लोग एक दूसरे से मिलने आते हैं और एक दूसरे के दुख-दर्द में शरीक होते हैं जिसके बड़े अच्छे नतीजे सामने आते हैं। ग़रीबों के साथ हमदर्दी का जज़्बा ज़्यादा हो जाता है। और समाजी बदहाली भी दूर होती है। ●

November
December
2010

Monthly Magazine

मरयम

MARYAM

A Socio-Cultural & Religious Monthly Magazine

Chief Editor
M. Hasan Naqvi

Editorial Board
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Abid Raza Noashad
Azmi Rizvi
Fatima

Graphic Designer
Siraj Abidi
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

इस महीने आप पढ़ेंगी...

शादी: आसमानी तोहफा	5
नजिस चीज़े	38
ईदे ग़दीर	22
घर को जन्नत बनाईए	19
इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ]	16
हज	18
शादी में मुश्किलें और रूकावटें	24
मियाँ बीवी के झगड़े	29
ईदुल अज़हा	3
प्लीज़! मेरी मदद कीजिए	21
इस्तेख़ारा	32
कुरआन में शादी का मक़सद	28
शादी में जल्दी के फ़ायदे...	12
तलाक़	34
जनाबे ज़हरा[स] की शादी	10
यह रस्में	40
रिश्ता ज़रूर टूटेगा...	15
इमाम खुमैनी और बीवी का एहतेराम	20
ईदे मुबाहिला	31
घर का सुकून सोसाइटी का सुकून	8
बीवी: खुदा की नेमत...	6

हिजरी सन् में ज़िलहिज्जा का महीना बड़ा ख़ास और मुक़द्दस महीना माना जाता है। यही वह महीना है जिसमें हर साल मक्के में हज की ख़ूबसूरत और दिल को छू लेने वाली इबादत होती है जिसमें दुनिया के कोने-कोने से ख़ुदा से मुहब्बत करने वाले बंदे इस अज़ीम बारगाह में हाज़िर होने और हज करने के लिए आते हैं। यही वह महीना है जिसकी 18वीं तारीख़ को ख़ुदा के आख़िरी नबी[स] ने हज़रत अली बिन अबी तालिब[अ] को ग़दीरे ख़ुम में लाखों हाजियों के मजमे में अपना जांनशीन और ख़लीफ़ा बनाने का एलान किया था। इसी महीने की 24 तारीख़ को मुबाहिला में बातिल पर हक़ की जीत हुई थी और फिर ईदे क़ुरबान तो है ही जो सारी दुनिया में मनाई जाती है।

'मरयम' का चौथा इश्यु इस वक़्त आपके हाथों में है इसमें हमने अपनी सोसाइटी के एक बहुत ख़ास मसले को उठाया है और वह है शादी, शादी की बरकतें, सही वक़्त पर शादी न होने से होने वाले नुक़्सान और इसी से जुड़े दूसरे मसले। 'मरयम' का ये इश्यु अपनी बात कहने में किस हद तक कामयाब हुआ है ये तो आपके लैटर्स और ई-मेल ही हमें बताएंगे जिनका हमें शिद्दत से इंतिज़ार रहेगा...

ग़दीरे ख़ुम और ईदे मुबाहिला के ख़ुश्यिों भरे इस मौक़े पर पूरी 'मरयम टीम' की तरफ़ से आप सब को बहुत-बहुत दिली मुबारकबाद!

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer & publisher Nazar Abbas Rizvi printed at Imagine Grafix, 4-Valmiki Marg,Lalbagh, Lucknow and published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9453826444
email: maryammonthly@gmail.com

शादी : आसमानी तोहफ़ा

शादी शरीअत का बताया हुआ एक ऐसा रिलेशन है जो मर्द-औरत के बीच निकाह के ज़रिए पैदा होता है और यह निकाह इन दोनों को आपस में सेक्चुअल डिज़ायर्स को पूरा करने का हक़ देता है।

शादी की अहमियत

इंसान पैदाइशी तौर पर मुहब्बत और सुकून चाहता है। इसलिए उसे हमेशा मुहब्बत और सुकून की तलाश रहती है। मुहब्बत और सुकून के बग़ैर वह ज़िंदगी में एक तरह का अधूरापन महसूस करता है। इसी तरह वह अकेले ज़िंदगी गुज़ारना भी पसंद नहीं करता। यही वजह है कि अपनी पूरी ज़िंदगी में इस तन्हाई को दूर करने की कोशिश करता रहता है। ज़िंदगी की शुरूआत में उसकी ये तन्हाई माँ-बाप के ज़रिए दूर होती है। फ़िर कुछ वक़्त के बाद वह इस ज़रूरत को एक और अंदाज़ से महसूस करता है इसलिए वह दोस्ती का रास्ता अपनाता है। जब वह जवानी में क़दम रखता है तो मुहब्बत और सुकून की ये ख़्वाहिश एक नया रुख़ अपना लेती है और ऐसे वक़्त में एक अलग अंदाज़ के साथी की ज़रूरत महसूस करता है। इस ज़रूरत को पूरा करने का सिर्फ़ एक रास्ता है जिसे शादी कहते हैं।

शादी ही वह रास्ता है जिससे इंसान इस मुहब्बत और सुकून तक पहुंच सकता है। इसीलिए ख़ुदा ने अपने बंदों की इस नेचॅरल ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए उन्हें मर्द और औरत की शक्ल में पैदा किया है ताकि वह एक दूसरे से आराम और सुकून हासिल कर सकें और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि ख़ुदा ने मर्द और औरत के बीच मुहब्बत और उल्फ़त भी पैदा कर दी और इसे अपनी निशानी बनाकर पेश किया। क़ुराने मजीद में इरशाद है, ''उसकी निशानियों में से ये भी है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम्हीं में से पैदा किया है ताकि तुम्हें उससे सुकून हासिल हो और फिर तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत पैदा की है। इसमें ग़ौर करने वालों के लिए बहुत सी निशानियां हैं।''

इसके अलावा क़ुरान मजीद में कई जगहों पर ख़ुदा वंदे आलम ने लोगों को शादी का हुक्म दिया है जिससे शादी की अहमियत का भरपूर अंदाज़ा होता है। इरशाद होता है, ''अपने ग़ैर शादी शुदा आज़ाद लोगों और अपने ग़ुलामों और कनीज़ों में से बासलाहियत लोगों के निकाह का इंतेज़ाम करो। अगर वह फ़क़ीर भी होंगे तो ख़ुदा अपने फ़ज़ल और करम से उन्हें मालदार बना देगा कि ख़ुदा बड़ी गुंजाइश वाला और इल्म वाला है।''

बीवी ख़ुदा की नेमत शौहर का सुकून

मासूमीन[अ०] ने इस ज़रूरत को अलग-अलग अंदाज़ से बयान किया है। पैग़म्बरे अकरम[स०] ने फ़रमाया है, "जिसने शादी की उसने अपने आधे दीन को बचा लिया है। उसे चाहिए कि बाक़ी दीन के लिए अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करे।" [1]

शादी करना पैग़म्बर[स०] की सुन्नत है। इसलिए पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने उन लोगों के बारे में जो शादी करने में आनाकानी करते हैं, फ़रमाया है, "शादी करना मेरी सुन्नत है। जो भी मेरी सुन्नत से मुंह फेरेगा वह मुझसे नहीं है।" [2]

इसके अलावा शादी की अहमियत को बताने के लिए पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने ये भी फ़रमाया है, "शादी शुदा इंसान अगर सो भी रहा हो तो ख़ुदा के नज़दीक उन ग़ैर शादी शुदा लोगों से बेहतर है जो रोज़ेदार हों और सुबह तक ख़ुदा की इबादत करते रहे हों।" [3]

शादी का मक़सद और फ़ाएदा

शादी करना और घर बसाना, इंसानी समाज की अहम और बेहतरीन रस्मों में से है। यह बहुत ही पाक, मुक़द्दस और फ़ाएदेमंद सुन्नत है और पूरी हिस्टरी में इंसान ने इस रस्म को दिल खोल के सीने से लगाया है और यह उसका मनपसंद तरीक़ा रहा है। शादी के कुछ फ़ाएदों को यहां बयान किया जा रहा है:-

1-पाकदामनी और पकीज़गी की हिफ़ाज़त

सेक्चुअल डिज़ायर्स इंसान के नेचॅर में पाई जाती हैं। शादी की वजह से यह ज़रूरत और ख़्वाहिश क़ुदरती तौर पर और अच्छे तरीक़े से पूरी हो सकती है और उसकी वजह से इंसान गुनाहों से दूर रहता है। शायद इसी वजह से रसूले ख़ुदा[स०] ने फ़रमाया है कि जो भी शादी करेगा वह अपना आध दीन महफ़ूज़ कर लेगा।

जो कोई भी चाहता है कि ख़ुदा से पाक और पाकीज़ा हालत में मुलाक़ात करे, उसको शादी ज़रूर करना चाहिए। कुछ लड़के और लड़कियां अपनी एजुकेशन की वजह से या मुनासिब रिश्ते के न आने की वजह से मुनासिब वक़्त पर शादी नहीं कर पाते और तलाश में रहते हैं कि कोई मुनासिब रिश्ता मिल जाए ताकि वह जल्दी से शादी कर सकें और अपने को गुनाहों के रास्ते पर जाने से रोक सकें। आज कल के दौर में मीडिया, कम्प्यूटर और सेटेलाईट की वजह से ख़ुद को गुनाहों से बचाना बहुत मुश्किल हो गया है। इसलिए नौजवानों को चाहिए वक़्त पर शादी करके अपने आप को पाकदामन बनाए रखें।

2-तरक़्क़ी और परफ़ैक्शन

लड़का हो या लड़की, जब उसकी दीनी, अख़्लाक़ी, समाजी और रूही ज़रूरतें पूरी होती हैं

शादी इंसान की इबादत की क़ीमत बढ़ाती है

शादी इंसान पर गहरा असर छोड़ती है और इस तरह उसकी क़ीमत को बढ़ाती और उसकी पर्सनॉलिटी को निखारती है कि उसकी बंदगी और इबादत भी ख़ुदा और उसके फ़रिश्तों की निगाह में अहम हो जाती है। जैसे इस हदीस को ही देखिए। इमाम सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं, "शादी शुदा इंसान की दो रकअत नमाज़, ग़ैर शादी शुदा की सत्तर रकअत नमाज़ से बेहतर है।"

ख़ुदा के नज़दीक बेहतरीन घर

शादी के बाद जो घर आबाद होता है वह ख़ुदा के करम और उसकी इनायतों का सेंटर बन जाता है। ख़ुदा उसे मुहब्बतो-मेहरबानी की नज़र से देखता है। रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं, "इस्लाम में रखी जाने वाली बुनियादों में से ख़ुदा के नज़दीक सबसे बेहतरीन बुनियाद, शादी है।" [2] इससे बढ़कर और कौन सी नेमत और बरकत होगी कि ख़ुदा इंसान को मुहब्बतो-मेहरबानी की निगाह से देखे !

दीन भी मुकम्मल हो जाता है

हज़रत अली[अ०] शादी की अहमियत के बारे में फ़रमाते हैं, "रसूल[स०] के सहाबियों में से जो भी शादी करता था उसके बारे में पैग़म्बर[स०] फ़रमाते थे, 'उसका दीन पूरा हो गया'।" [3]

पैग़म्बर[स०] की इस हदीस से मालूम होता है कि जब तक इंसान शादी नहीं करता उस वक़्त तक उसका दीन ख़तरे में रहता है क्योंकि सेक्चुअल डिज़ायर्स, स्ट्रेस, तंहाई का एहसास, एक सेक्योर पनाहगाह का न होना, समाजी ज़िम्मेदारियों से बेपरवाई वग़ैरा, ये सब कुंवारे लोगों में ज़्यादा देखने को मिलते हैं जिनसे इंसान के ईमान की बुनियाद कमज़ोर पड़ जाती है। लेकिन एक अच्छी और हमदर्द बीवी के साथ ज़िंदगी गुज़ारने में सेक्चुअल डिज़ायर्स पर भी क़ाबू हो जाता है और दिली सुकून भी मिलता है। साथ ही ख़ुदा पर इंसान का भरोसा भी बढ़ जाता है और वह बहुत सी परेशानियों से निजात पा जाता है, अपनी एक पहचान बना लेता है, उसका ध्यान और नज़र इधर-उधर नहीं भटकती, बल्कि अब उसका सारा ध्यान अपनी ज़िंदगी के साथी और अपने बच्चों पर हो जाता है और समाज के लिए भी अच्छा सोचने लगता है। नतीजे में वह ख़ुदा के बहुत क़रीब हो जाता है और ख़ुदा भी उस पर अपनी बेपनाह रहमतों का साया कर लेता है। सबसे बड़ी बात ये कि उसका ईमान भी मुकम्मल हो जाता है।

लेकिन याद रहे...

ये सारी ख़ूबियां उस वक़्त मिलेंगी जब बीवी या शौहर को सोच समझ कर और अच्छी क्वॉलिटीज़ को नज़र में रखकर चुना जाए। कहीं ऐसा न हो कि मुहब्बत का जुनून उसकी सारी बुराईयों को आपकी नज़रों से ओझल कर दे। कहा जाता है कि 'इश्क़ इन्सान को अंधा और बहरा बना देता है' इसलिए... सोचिए, समझिए और फिर चुनिए।

1.वसाएल, 14/6, 2.मकारिमुल अख़्लाक़/99

तो वह तरक़्क़ी और परफ़ैक्शन की तरफ़ बढ़ता है। अकसर मर्दों की कामयाबी के पीछे औरतों का हाथ होता है। औरतें मौक़े फ़राहम करती हैं ताकि मर्द अपनी ज़िंदगी में आगे बढ़ सकें। जब इंसान की अहम ज़रूरतें पूरी होती हैं तो इंसान सुकून और इत्मिनान के साथ इस्लाम पर अमल कर सकता है। इसीलिए कहा गया है कि ग़ैर शादी शुदा की 70 रकअत नमाज़ का सवाब शादी शुदा की एक रकअत नमाज़ के सवाब के बराबर होता है।

3- नस्ल को बढ़ाना

शादी का सबसे बड़ा और ख़ूबसूरत फ़ाएदा और मक़सद नस्ल का बढ़ना है। औलाद का वजूद एक ख़ानदान के लिए जोश-ख़रोश और मुहब्बत की वजह होता है और ज़िंदगी गुजारने के लिए एक जज़्बा और उमंग पैदा करता है। इस्लाम की नज़र में नेक औलाद को माँ-बाप के नेक आमाल का अज्र समझा जाता है जो कि दुनिया और आख़िरत दोनों में उनके लिए फ़ाएदेमंद होता है।

4-खुदा की इताअत और सवाब का ज़रिया

इस्लाम की नज़र में शादी करना एक मुक़द्दस, पाक और क़ीमती काम है। अगर उसको अल्लाह के लिए अंजाम दिया जाए तो इबादत माना जाता है और आख़िरत में इसका सवाब मिलता है। अगर एक मोमिन इंसान की बीवी, मोमिना और सलीक़ेमंद हो तो वह अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में अपनी बीवी की मदद से फ़ाएदा उठा सकता है और इबादत और नेक आमाल के अंजाम देने में अपनी बीवी से मदद ले सकता है। इसलिए मोमिन और लाएक़ शौहर या बीवी, ख़ुदा की बड़ी नेमतों में से है जो इंसान की दुनिया और आख़िरत दोनों के लिए फ़ाएदेमंद साबित होते हैं।

5-इंडिपेंडेंट होना

लड़का और लड़की शादी से पहले अपने माँ-बाप के घर के मेम्बर्स समझे जाते हैं और अपनी ज़िंदगी के हर काम में अपने पैरेंट्स पर डिपेंड होते हैं। हर इंसान शुरू ही से अपनी ज़िंदगी के बारे में ख़ुद फ़ैसले लेना चाहता है और अपनी मर्ज़ी से जीना चाहता है लेकिन उसकी ये तमन्ना पूरी नहीं हो पाती। अगर शादी से पहले अपनी ख़ुद की इन्कम भी हो तो उसको सही तरीक़े से सही जगह पर ख़र्च नहीं कर पाता, शादी से पहले ख़ुद कोई बाक़ाएदा फ़ैसला नहीं ले पाता या अपने आपको इस लाएक़ नहीं समझता कि फ़ैसले ले सके। लेकिन शादी के बाद लड़के और लड़की की ज़िंदगी बदल जाती है। शादी के बाद समाज की एक छोटी सी इकाई इन से वजूद में आती है। अब इनकी अपनी फ़ैमिली होती है, अपने बारे में ख़ुद फ़ैसले करते हैं और उस परफ़ैक्शन तक पहुंच जाते हैं जिसकी कमी वह शादी से पहले जगह-जगह महसूस करते थे।

> *शादी के बाद लड़के और लड़की की ज़िंदगी बदल जाती है। शादी के बाद समाज की एक छोटी सी इकाई इन से वजूद में आती है। अब इनकी अपनी फ़ैमिली होती है, अपने बारे में ख़ुद फ़ैसले करते हैं और उस परफ़ैक्शन तक पहुंच जाते हैं जिसकी कमी वह शादी से पहले जगह-जगह महसूस करते थे।*

6-मुहब्बत और सुकून की ख़्वाहिश शादी से पूरी होती है

इंसान की एक ख़ासियत मुहब्बत और उलफ़त है। इंसान के लिए अकेले ज़िंदगी बसर करना बहुत सख़्त और दर्दनाक है। हर इंसान एक दूसरे इंसान का मोहताज होता है जो उसका ग़मख़्वार और उसके लिए मेहरबान और हमराज़ हो ताकि उससे अपने दिल की बातें कर सके जो मुश्किलों के वक़्त उसे तसल्ली दे और उसकी दिलजोई करे जिससे उसको इत्मिनानो-सुकून हासिल हो सके। इसलिए इंसान एक मुख़्लिस दोस्त की तलाश में रहता है ताकि वह उस पर अपनी पुर-ख़ुलूस मुहब्बतों को निसार करे और वह दोस्त भी उसकी मुहब्बत की ख़ातिर, ईसार करने में कोई कमी न करे।

लेकिन कोई भी दोस्त पूरी तरह से अपने दोस्त से मुहब्बत नहीं कर सकता। सबसे अच्छी तरह अगर कोई इंसान की इस ज़रूरत को पूरा कर सकता है तो वह शौहर और बीवी हैं क्योंकि तमाम मुहब्बतें और दोस्तियां वक़्ती और महदूद होती हैं लेकिन शौहर और बीवी के दरमियान जो मुहब्बत होती है वह हमेशा रहने वाली और इतनी ज़्यादा होती है कि जिसका तसव्वुर नहीं किया जा सकता। जिसकी आसान सी वजह ये है कि इन दोनों के इरादे और मक़सद एक होते हैं। इसलिए वह दोनों किसी दूसरे से कहीं ज़्यादा एक दूसरे के मोहताज होते हैं।

जो सुकून, आराम, लज़्ज़त और मुहब्बत शादी से हासिल होती है, उसकी अहमियत इतनी ज़्यादा है कि ख़ुदा वंदे आलम ने इस चीज़ को अज़ीम निशानियों में से एक निशानी बताते हुए फ़रमाया है, "उसकी निशानियों में से ये भी है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम्हीं में से पैदा किया है ताकि तुम्हें उससे सुकून हासिल हो और फिर तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत पैदा की है। इसमें ग़ौर करने वालों के लिए बहुत सी निशानियां हैं।" [4]

इमाम अली रज़ा अ० फ़रमाते हैं, "ख़ुदा के बंदे को मुनासिब और लायक़ बीवी से अच्छा कोई

फ़ाएदा हासिल नहीं होता जो ऐसी हो कि जब वह बंदा उसको देखे तो वह उस को ख़ुशहाल करे और जब मर्द घर में न हो तो अपनी और उसके माल की हिफ़ाज़त करे।'' [5]

7-सेक्चुअल डिज़ायर्स का पूरा होना

यह एक नेचॅरल और कुदरती ख़्वाहिश है जो कि ख़ुदा ने इंसान के अंदर रखी है ताकि इंसान की नस्ल की हिफ़ाज़त हो सके और यह ज़रूरत शादी के ज़रिए पूरी होती है। यह ज़रूरत और ख़्वाहिश वक़्ती होती है और कुछ देर में ख़त्म हो जाती है। इसलिए जो लोग सिर्फ़ सेक्चुअल डिज़ायर्स को पूरा करने के लिए शादी करते हैं वह बाद में बहुत सी मुश्किलों का शिकार हो जाते हैं।

कभी-कभी मियां-बीवी के बीच मुश्किलों की अस्ल वजह सेक्चुअल डिज़ायर्स का सही तरीक़े से पूरा न होना भी होता है। अगर कुछ वक़्त गुज़र जाए और शौहर और बीवी एक दूसरे से दूर रहें तो दोनों के मिज़ाज में फ़र्क़ आ जाता है, ख़ास कर मर्द के मिज़ाज में तो बहुत फ़र्क़ आ जाता है। अगर मर्द की सेक्चुअल डिज़ायर्स मुनासिब तौर पर पूरी हो रही हों तो मर्द के क़दम कभी नहीं बहकेंगे और जब जिन्सी तौर पर सेटिस्फ़ॉईड होगा तो मज़हब और इबादत की तरफ़ भी ज़्यादा ध्यान दे सकेगा।

8-ज़हनी सुकून का मिलना

स्कॉलर्स ने लिखा है कि सही वक़्त पर सेक्चुअल डिज़ायर्स को पूरा करना आदमी के जिस्म और जान की सलामती के लिए ज़रूरी है और ऐसा न करने से बहुत सी ज़हनी बीमारियां और कभी-कभी जिस्मानी बीमारियां भी पैदा हो जाती हैं। अगर वक़्त पर कुदरती तरीक़े से जिन्सी ख़्वाहिश पूरी न की जाए साइकॉलॉजिकल काम्पलेक्स, इज़्तेराब, मायूसी, चिड़चिड़ापन, बदअख़लाक़ी, अकेले रहना और कभी-कभी मेदे में ज़ख़्म, बदहज़मी और सरदर्द जैसी बीमारियां भी पैदा हो जाती हैं। सेक्चुअल डिज़ायर्स को पूरा करने का कुदरती और शरई रास्ता शादी है। इसके अलावा ग़ैर फ़ितरी और नाजाएज़ रास्ते भी हैं जो इंसान को गुनाहों का शिकार बना देते हैं। इसलिए अगर कोई अपने जिस्म, रूह और नफ़्स की सलामती चाहता है तो उसे चाहिए कि पहली फ़ुरसत में शादी कर ले।

1-वसाएल, किताबुन्निकाह, बाब-1, हदीस-11-12, 2-वसाएलुश किताबुन्निकाह, बाब-2, हदीस-6, 3-जामेउल अख़बार/101, 4-सूरए रूम/21, 5-वसाएल, किताबुन्निकाह, बाब 2, हदीस 5

घर का सुकून सोसाइटी का सुकून

इस्लाम में फ़ैमिली यानी एक ऐसी जगह जहां दो इंसान ज़ेहनी सुकून के साथ ज़िंदगी गुज़ारते हैं, एक दूसरे से नज़दीक होने और एक दूसरे की आपसी मदद के ज़रिए परफ़ैक्ट बनने की कोशिश करते हैं, साथ ही जहां दोनों को दिली सुकून भी मिलता है।

इंसान मशीन नहीं है

फ़ैमिली स्ट्रक्चर की इस्लाम में बहुत अहमियत है। फ़ैमिली इंसान के सुकून, इत्मिनान और ज़िंदगी के रूहानी स्ट्रेस से निजात पाने की जगह है। ज़िंदगी का मैदान कम्पीटीशन और स्ट्रगल का मैदान है जिसमें इंसान हमेशा एक तरह के स्ट्रेस का शिकार रहता है और यह एक अहम बात है। ऐसी सूरत में अगर इंसान अपने घर में ही सुकून हासिल कर सके तो उसकी ज़िंदगी ख़ुशियों से भर जाती है, ऐसे घर में औरत और मर्द दोनों ख़ुश रहते हैं, ऐसे घर में जो बच्चे पलते हैं वह कम्पलेक्सेस से महफ़ूज़ रहते हैं और इस तरह घर के हर मिम्बर के लिए ख़ुशबख़्ती का माहौल मिल जाता है।

इंसान कोई मशीन तो है नहीं बल्कि उसके अंदर रूह है, उसके अंदर एहसासात और इमोशंस हैं, इंसान एक रूहानी मख़लूक़ है, अब अगर यह इंसान सुकून चाहता है तो कहां से हासिल करेगा? सुकून हासिल करने की असली जगह घर का माहौल है।

एक दूसरे का सहारा

जब मियाँ-बीवी रोज़ाना का काम ख़त्म करके एक दूसरे से मिलते हैं और एक दूसरे को देखते हैं तो दोनों इस उम्मीद के साथ मिलते हैं कि घर का माहौल ख़ुशी और सुकून से भरा हुआ होगा जहां दिन भर की थकन और स्ट्रेस मिंटों में दूर हो जाएगा। अगर फ़ैमिली मिम्बर्स मिलकर ऐसा करने में कामयाब हो गए तो ज़िंदगी ख़ुशियों और मसर्रतों से भर जाती है।

घरः पनाह लेने की जगह

इंसान रोज़ाना की मुश्किलों से जन्म लेने वाले ज़िंदगी के हंगामें में एक ऐसी जगह की तलाश में होता है जहां वह पनाह ले सके। अगर वह मियाँ-बीवी हों तो एक दूसरे के पास पनाह ले सकते हैं। हर मर्द रोज़ाना की ज़िंदगी की गहमागहमी के बाद थोड़ी देर के लिए सुकून चाहता है ताकि दूसरे दिन फिर से तरो-ताज़ा होकर अपने घर से निकल सके। ये सुकून का लम्हा कब आता है? उस वक़्त जब वह ख़ुद को घर के मुहब्बत और एहसासात से भरे हुए माहौल में पाता है, जब वह अपनी बीवी के पास होता है जिससे वह इश्क़ करता है।

ज़िंदगी एक स्ट्रगल

घर के अंदर मियाँ-बीवी एक दूसरे को एर्नजी दे सकते हैं, एक दूसरे के हौसले को बढ़ा सकते हैं। ज़िंदगी स्ट्रगल करने का नाम है, एक बहुत लम्बा स्ट्रगल...नेचरल रुकावटों के सामने स्ट्रगल, सोशल रुकावटों के सामने स्ट्रगल, अपने अंदर मौजूद कुव्वतों के मुक़ाबले में स्ट्रगल...इसी को तो दीन की ज़बान में ''जिहाद बिन्नफ़्स'' कहते हैं यानी अपने आपसे लड़ना। इंसान कहते ही उसको हैं जो हमेशा स्ट्रगल करने वाला हो। जिस तरह उसका जिस्म भी हमेशा नुक़्सानदेह और ख़तरनाक एलिमेंट्स से मुक़ाबला करता रहता है और जब तक जिस्म में इस स्ट्रगल और मुक़ाबले की ताक़त मौजूद है वह महफ़ूज़ रहता है वरना इंसान मर जाता है। इस स्ट्रगल भरी ज़िंदगी के सफ़र में इंसान को आराम की ज़रूरत भी होती है। आराम करने की जगह घर और फ़ैमिली है। इस्लाम चाहता है कि इंसान अपनी इस ज़रूरत को घर के अंदर ही पूरा करे।

जिस्मानी ज़रूरतेंः एक मज़बूत सपोर्ट

इस्लाम में जिस्मानी ज़रूरतों को भी फ़ैमिली स्ट्रक्चर को मज़बूत करने का एक ज़रिया बताया गया है। जब मर्द और औरत दोनों पाकीज़ा, दीनदार, ख़ुदा से डरने वाले हों और सेक्चुअल डिज़ायर्स को पूरा करने में गुनाह से बचने वाले हैं तो इस का नेचरल नतीजा यह होगा कि इस ज़रूरत को पूरा करने में वह आपस में एक दूसरे के ज़्यादा मोहताज होंगे और जिससे मियाँ बीवी के रिश्तों और फ़ैमिली की बुनियाद में मज़बूती आएगी। इस्लाम चाहता है कि रिश्ते की यह मज़बूती और फ़ैमिली की बुनियादें कमज़ोर न होने पाएं।

हज का सियासी-समाजी पहलू

■ इमाम खुमैनी

अब हज का वह चेहरा देखने को नहीं मिलता जो हज़रते इब्राहीम[अ॰] और रसूले खुदा[स॰] ने पेश किया था। अब हज का रूहानी, सियासी और समाजी पहलू नज़र नहीं आता। सारे हाजियों को चाहिए कि हज के रूहानी पहलू के अलावा उसके सियासी और समाजी पहलू पर ध्यान रखें। यह बात मानना पड़ेगी कि हम इससे कोसों दूर हैं। इस नुक़सान की भरपाई करना हमारी ज़िम्मेदारी है। हज़रत इब्राहीम[अ॰] और रसूले खुदा[स॰] की दावत पर की जाने वाली यह सियासी कांफ्रेंस जिसमें दुनिया के कोने-कोने के लोग जमा होते हैं, इन्सानों के फ़ायदे और इंसाफ़ को फैलाने के लिए है। यह कांफ्रेंस हज़रत इब्राहीम[अ॰] और रसूले इस्लाम[स॰] की बुत शिकनी और जनाबे मूसा[अ॰] का फ़िरऔनियत को धूल चटाने का सिलसिला है। आज साम्राजी ताक़तों और सुपर पावर माने जाने वाले मुल्कों से बड़े और कौन से बुत हो सकते हैं जो दुनिया के तमाम दूसरे इन्सानों पर अपनी ताक़त की धौंस जमाते हैं और अल्लाह के आज़ाद बंदों को अपना गुलाम समझते हैं।

हज, हक़ की आवाज़ पर लब्बैक कहने और अल्लाह की तरफ़ पलटने का नाम है। यह शैतान के सपूतों से दूरी का ऐलान करने की जगह है। आज के साम्राजी बुतों से बड़ा और कौन सा बुत हो सकता है! हमें लब्बैक-लब्बैक कह कर इस तरह के हर बुत का इंकार करना चाहिए और तमाम छोटे बड़े शैतानों के ख़िलाफ़ 'नहीं' की आवाज़ बुलंद करना चाहिए। हज का ज़माना वह ज़माना होता है जब मुसलमान दुनिया के कोने-कोने से काबे की ज़ियारत के लिए जमा होते हैं। इस मौक़े पर ज़रूरी है कि हज के आमाल के दौरान इस बड़े प्रोग्राम के एक बहुत बड़े फ़ैक्टर की तरफ़ ध्यान देते हुए इस्लामी मुल्कों की समाजी-सियासी सिचुएशन का जाएज़ा लिया जाए और अपने ईमानी भाईयों की मुश्किलों को जानकर उन्हें हल करने की कोशिश की जाए। मुसलमानों की मुश्किलों और मसलों के हल के लिए कोशिश करना हम सब का एक अहम दीनी फ़र्ज़ है।

हर जगह, हर शहर और हर देहात में होने वाले इस तरह के प्रोग्रामों में समाजी और सियासी पहलू पाए जाते हैं। मक़सद यह है कि एक आबादी के लोग मस्जिदों में जमा हों और उस आबादी के अपने मसलों को हल करें। नमाज़े जुमा भी इसी तरह की एक सियासी-समाजी इबादत है। इसका मक़सद भी यही है कि हफ़्ते में एक बार लोग बड़ा इजतेमा करें और वहां अपने मसलों को हल करें। काबे का इजतेमा सबसे बड़ा इजतेमा है। कोई हुकूमत ऐसा इजतेमा नहीं कर सकती। अल्लाह तआला ने ऐसा इन्तेज़ाम किया है कि मुलसलमान वहां जमा हो जाते हैं और हुकूमतों पर भी इसका ख़र्च नहीं पड़ता। अब अगर इससे फ़ाएदा न उठाया गया तो बड़े अफ़सोस और बहुत बड़े नुक़सान की बात होगी।

जनाबे फ़ातिमा अ० की शादी

जनाबे फ़ातिमा स०, पैग़म्बरे ख़ुदा स० की बेटी और सारी औरतों की सरदार हैं। आपके अंदर सारी नेक और अच्छी इंसानी सिफ़तें कूट-कूट कर भरी हुई थीं। उधर आपके वालिद की शख़्सियत भी रोज़-बरोज़ लोगों की निगाहों में बढ़ती ही जा रही थी इसलिए आपकी स० बेटी की ज़ात कुरैश के इज़्ज़तदार और दौलतमंद लोगों की निगाहों में अपना एक मुक़ाम बना चुकी थी। तारीख़ में लिखा है कि अक्सर कुरैश के इज़्ज़तदार और दौलतमंद लोग आपके लिए रिश्ता लेकर आते थे लेकिन पैग़म्बरे इस्लाम स० उन लोगों से इस तरह पेश आते थे कि उन्हें अंदाज़ा हो जाता था कि आप स० को उनका रिश्ते के लिए आना पसंद नहीं है क्योंकि पैग़म्बरे इस्लाम स० को ख़ुदा की तरफ़ से हुक्म दे दिया गया था कि नूर का अक़्द नूर से ही हो सकता है।

हज़रत अली अ० की पेशकश

पैग़म्बर स० के सहाबियों को अंदाज़ा हो गया था कि पैग़म्बरे ख़ुदा स० फ़ातिमा अ० का अक़्द अली अ० से करना चाहते हैं लेकिन हज़रत अली अ० की तरफ़ से अभी तक ऐसी कोई पेशकश नहीं हुई थी। हज़रत अली अ० भी जानते थे कि हज़रत फ़ातिमा अ० जैसी औरत और कहीं नहीं मिल सकेगी।

एक दिन रसूले ख़ुदा स० जनाबे उम्मे सलमा के घर में थे। हज़रत अली अ० ने दरवाज़ा खटखटाया और पैग़म्बरे अकरम स० ने जनाबे उम्मे सलमा से फ़रमाया कि दरवाज़ा खोल दो, दरवाज़ा खटखटाने वाला वह शख़्स है कि जिसको ख़ुदा और रसूल स० दोस्त रखते हैं और वह ख़ुदा और उसके रसूल स० को दोस्त रखता है। जनाबे उम्मे सलमा अपनी जगह से उठीं और घर का दरवाज़ा खोल दिया। हज़रत अली अ० घर में दाख़िल हुए, सलाम किया और पैग़म्बरे ख़ुदा स० के सामने बैठ गए। शर्म की वजह से सर झुकाए हुए थे और अपनी बात नहीं कह पा रहे थे। थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे और आख़िर में पैग़म्बरे इस्लाम स० ने इस ख़ामोशी को तोड़ा और फ़रमाया, "ऐ अली! शायद किसी ऐसे काम से मेरे पास आए हो जिसको कह नहीं पा रहे हो। परेशान न हो! बग़ैर किसी हिचकिचाहट के कह दो।"

हज़रत अली अ० ने अर्ज़ किया, "या रसूल अल्लाह! मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान हों! मैं आपके घर में जवान हुआ हूं। आपने ही मेरी परवरिश भी की है। या रसूल अल्लाह! ख़ुदा की क़सम! मेरी दुनिया और आख़िरत दोनों की पूंजी बस आप हैं। अब वह वक़्त आ गया है कि अपना घर बसा लूं। अगर आप मुनासिब समझें तो अपनी बेटी फ़ातिमा का अक़्द मेरे साथ कर दीजिए जो मेरे लिए बहुत फ़ख़्र की बात होगी।"

पैग़म्बरे इस्लाम स० तो इस तरह की पेशकश के इन्तिज़ार में थे ही। आपका चेहरा ख़ुशी से जगमगा उठा और फ़रमाया कि सब्र करो! मैं फ़ातिमा से इस बारे में बात कर लूं। पैग़म्बरे इस्लाम स० जनाबे फ़ातिमा अ० के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया, "क्या तुम मुझे इजाज़त देती हो कि मैं तुम्हारी शादी अली से कर दूं?" जनाबे फ़ातिमा अ० शर्म की वजह से ख़ामोश रहीं और कुछ नहीं बोलीं। पैग़म्बरे इस्लाम स० ने बेटी की ख़ामोशी को रज़ामंदी मानकर इस रिश्ते को क़ुबूल कर लिया।[1]

पैग़म्बरे ख़ुदा स० बेटी से बात करने के बाद हज़रत अली अ० के पास आए और मुस्कुराते हुए फ़रमाया, "या अली! शादी के लिए तुम्हारे पास क्या है?" हज़रत अली अ० ने जवाब दिया, "या रसूल अल्लाह! आप मेरे बारे में अच्छी तरह से जानते हैं। मेरी सारी दौलत एक तलवार, एक ज़िरह और एक घोड़ा है।" आपने फ़रमाया कि तुम एक मुजाहिद हो। बग़ैर तलवार के ख़ुदा की राह में जिहाद नहीं कर सकते। घोड़े की भी तुम्हें ज़रूरत है। बस एक चीज़ है जिसको बेच सकते हो और वह है ज़िरह। जाओ! इसे बेचकर घर का सामान ले आओ।

उसके बाद फ़रमाया कि ऐ अली! अब जब मामला यहां तक आ पहुंचा है तो क्या तुम चाहते

हो कि तुम्हें एक बशारत दूं और एक राज़ की बात बताऊं?

हज़रत अली[अ०] ने कहा, "जी हां, या रसूल अल्लाह!"

आपने फ़रमाया, "तुम्हारे मेरे पास आने से पहले जिब्रील नाज़िल हुए थे और मुझसे कहा था कि जिस ख़ुदा ने आपको रिसालत के लिए चुना है उसी ने अली[अ०] को आपका भाई और वज़ीर भी बनाया है। आप उनसे अपनी बेटी का निकाह कर दीजिए! ख़ुदा वन्दे आलम दो पाको-पाकीज़ा और नेक बेटे उन्हें अता करेगा। ऐ अली! अभी जिब्रील वापस भी नहीं गए थे कि तुमने मेरे घर का दरवाज़ा खटखटा दिया था।"

अक़्द का ख़ुतबा

शादी की तैयारियां पूरी हो गई थीं। हमेशा की तरह तय यही पाया कि निकाह मस्जिद में होगा। सब लोग आ चुके थे। पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] भी तशरीफ़ ले आए जिनका चेहरा ख़ुशी और शादमानी से चमक रहा था। आपने[स०] ख़ुदा की तारीफ़ के बाद फ़रमाया, "ऐ लोगो! गवाह रहना कि जिब्रील मुझ पर नाज़िल हुए हैं और ख़ुदा वन्दे आलम की तरफ़ से पैग़ाम लाए हैं कि अली[अ०] और फ़ातिमा[स०] की शादी अर्श पर फ़रिश्तों के बीच हो चुकी है और मुझे हुक्म दिया है कि यहां ज़मीन पर भी यह शादी अंजाम दे दी जाए।"

इसके बाद आप बैठ गए और हज़रत अली[अ०] से फ़रमाया कि उठो और ख़ुतबा पढ़ो। हज़रत अली[अ०] ख़ड़े हुए और फ़रमाया कि मैं ख़ुदा वन्दे आलम का उसकी नेमतों पर शुक्र अदा करता हूं और ऐसी गवाही देता हूं जो उसे पसंद हो कि उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं और ऐसा दरूद हो जनाबे रसूले इस्लाम[स०] पर जो आपके मुक़ाम और दर्जे को बालातर कर दे। लोगो! मेरी और फ़ातिमा की शादी से अल्लाह राज़ी है। ऐ लोगो! रसूले ख़ुदा[स०] ने फ़ातिमा का अक़्द मुझसे कर दिया है और मेरी ज़िरह को बतौर महेर क़ुबूल किया है। तुम सब उनसे पूछ लो और गवाह हो जाओ।

मुसलमानों ने पैग़म्बरे इस्लाम[अ०] की ख़िदमत में अर्ज़ की कि या रसूल अल्लाह[स०]! आपने फ़ातिमा[अ०] का रिश्ता अली[अ०] से कर दिया है? रसूले ख़ुदा[स०] ने जवाब में फ़रमाया कि हां। जिसपर सब ने दुआ के लिए हाथ उठाए और कहा कि ख़ुदा इस शादी को आप सब के लिए मुबारक करे!

जिस दिन ये शादी हुई वह पहली ज़िलहिज्जा की तारीख़ थी।

हज़रत ज़ेहरा[अ०] का मेहर

एक ज़िरह, यमनी कतान का एक जोड़ा और एक भेड़ की खाल रंगी हुई।[2]

> "इस्लाम कहता है कि अगर कोई जवान तुम्हारी लड़की के रिश्ते के लिए आए तो तुम हर चीज़ से पहले उसकी दीनदारी और अख़लाक़ के बारे में जानकारी लो। अगर वह बाईमान, पाकदामन और ख़ुश अख़्लाक़ हो तो उससे रिश्ता कर दो।"

दामाद का इंतेख़ाब

इस्लाम मुसलमानों से कहता है कि अगर कोई जवान तुम्हारी लड़की के रिश्ते के लिए आए तो तुम हर चीज़ से पहले उसकी दीनदारी और अख़लाक़ के बारे में जानकारी लो। अगर वह बाईमान, पाकदामन और ख़ुश अख़्लाक़ हो तो उससे रिश्ता कर दो। इस्लाम का मानना है कि शादी के लिए माल और दौलत को पैमाना नहीं बनाना चाहिए क्योंकि माल-दौलत से कोई बड़ा नहीं बनता है बल्कि अगर कोई चीज़ इंसान को बड़ा बनाती है तो वह है ख़ुश-अख़लाक़ी, तक़्वा और नेक किरदार। ईमानदार और ख़ुश-अख़लाक़ इंसान अगर ग़रीब भी होगा तो एक अय्याश, हवसबाज़ और लाउबाली दौलतमंद से कहीं अच्छा होगा।

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने फ़रमाया है, "जब कोई तुम्हारी लड़की के रिश्ते के लिए आए और तुम्हें उसका अख़्लाक़ और दीनदारी पसंद हो तो उससे रिश्ता कर दो। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो इससे तुम्हारे लिए बहुत सी मुसीबतें खड़ी हो जाएंगी।[3]

पैग़म्बर[स०] ने यह बात सिर्फ़ लोगों को बताई ही नहीं बल्कि ख़ुद भी उस पर अमल करके दिखाया। आपने हज़रत अली[अ०] के फ़ज़ाएल और अख़्लाक़ को देख कर दूसरे बहुत से बड़े-बड़े दौलतमंदों को ठुकरा दिया था और अपनी बेटी का निकाह आपसे ख़ुशी-ख़ुशी कर दिया था।

अमली सबक़

इस्लाम ज़्यादा महेर को बिल्कुल पसंद नहीं करता है। पैग़म्बरे अकरम[स०] फ़रमाते हैं, "मेरी उम्मत की बेहतरीन औरतें वह हैं जो ख़ूबसूरत हों और जिनका महेर कम हो।[4]

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है, "ये चीज़ औरत के लिए बहुत बुरी है कि उसका महेर बहुत ज़्यादा हो।[5]

इस्लाम का मानना है कि ज़्यादा महेर ज़िंदगी को सख़्त कर देता है जिससे समाज को बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने लोगों को ख़ुद अमल करके समझा दिया कि ज़्यादा महर इस्लामी समाज ही नहीं बल्कि हर समाज के लिए नुक़्सानदेह है। इसीलिए तो आपने अपनी प्यारी बेटी के मामूली महेर पर भी उनकी शादी हज़रत अली[अ०] से कर दी थी, यहां तक कि कोई चीज़ बतौर क़र्ज़ के भी हज़रत अली[अ०] के ज़िम्मे नहीं सौंपी। इसी तरह आपने[स०] अपनी बेटी को भी ज़रूरत की बहुत कम और मामूली चीज़ें ही जहेज़ में दी थीं।

1-बिहार, 43/127, 2-वाफ़ी किताबुन्निकाह/15, 3-वाफ़ी किताबुन्निकाह,15, 4-वाफ़ी, किताबुन्निकाह-15, 5-वाफ़ी किताबुन्निकाह/15

शादी में जलदी के फ़ायदे और देर के नुक़्सान

वक़्त पर शादी करने में बहुत से फ़ायदे हैं और देरी के बेहद नुक़्सान हैं, कुछ फ़ायदे जैसे :

1-ईमान की हिफ़ाज़त

शादी, ईमान के दुश्मनों के मुक़ाबले में एक मज़बूत ढाल की तरह है। नौजवानी के ज़माने में एक तरफ़ तो रूह की पाकीज़गी और अच्छाईयों की ख़्वाहिश बढ़ जाती है और उन में से हर चीज़ इंसान को अपनी तरफ़ खींचती है और दूसरी तरफ़ सेक्चुअल डिज़ायर्स सर उठाती हैं और इंसान को अपनी तरफ़ खींचती हैं। इन दोनों ताक़तों का होना ज़रूरी है और ख़ुदा वंदे आलम ने इंसान की भलाई के लिए यह ताक़तें उसमें रखी हैं ताकि वह दोनों को पॉज़िटिव तरीक़े से पूरा करे और दोनों ही की प्यास बुझाए लेकिन अगर इन ख़्वाहिशों को आज़ाद छोड़ दिया गया और उन पर लगाम नहीं कसी गई तो वह ख़तरनाक हो जाएंगी। इसी ख़तरे से बचने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिए बेहतरीन और आसान रास्ता शादी है।

समाज में ऐसे जवानों की कमी नहीं है जिनका ईमान उनकी ग़लत ख़्वाहिशों के सामने कमज़ोर पड़ गया हो। काश उनको सही गाइडेंस मिल गई होती और वक़्त पर शादी हो गई होती।

एक अफ़सोसनाक कहानी

मसऊद जब इंटर में पढ़ रहा था उस वक़्त तक एक दीनदार और पाकीज़ा इंसान था। वह दूसरे जवानों के लिए अच्छाई की एक मिसाल था। मैं भी उसके ईमान और अच्छाईयों को दिल ही दिल में सराहा करता था और उसके जैसा बनना चाहता था और अपने आपसे कहता था कि मसऊद हम से बाज़ी ले गया। उसके ईमान के क्या कहने, कालेज में वह कल्चरल एक्टिविटीज़ में आगे-आगे रहता था। बहुत नमाज़ी और परहेज़गार था। जब इंटर पास कर चुका तो मैंने उसके अम्मी अब्बू से कहा कि अब मसऊद की शादी कर दीजिए लेकिन उन्होंने कहा कि अभी बच्चा है। एम०ए० वग़ैरा कर ले और रोज़गार से लग जाए, उसका अपना घर हो जाए, ज़िन्दगी की ज़रूरी चीज़ें इखट्ठा कर ले, अपने पांव पर ख़ड़ा हो जाए तो हम उसकी शादी के बारे में सोचें।

मसऊद ने यूनिवर्सिटी में दाख़िला ले लिया। मैं भी मौक़े-मौक़े से मसऊद के अम्मी अब्बू से कहता रहा कि अब उसकी शादी कर दीजिए लेकिन वह पहला ही जवाब देते रहे। ऐसे ही काफ़ी टाईम गुज़र गया। आहिस्ता-आहिस्ता मसऊद के पर निकल आए, शक्ल-सूरत और पहनावे का अंदाज़ धीरे-धीरे बदल गया। उसकी निगाहें मासूम और पाक थीं। कभी हराम चीज़ों की तरफ़ नहीं उठती थीं लेकिन अब उसने इशारेबाज़ी शुरू कर दी थी और फिर...

यहां तक कि मसऊद यूनिवर्सिटी से भी क्रास कर गया लेकिन अब वह मसऊद, पहले वाला मसऊद नहीं रहा था बल्कि 'मंहूस' हो गया था और मां बाप, रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए कलंक का टीका।

एक बेहतरीन मिसाल

मसऊद का एक दोस्त जाफ़र था। वह भी दीनदार और परहेज़गार था। जब वह इंटर में था तो उसी वक़्त उसके मां-बाप ने उसके मिज़ाज की एक दीनदार लड़की से उसकी मंगनी कर दी थी और फिर कुछ दिनों के बाद शादी भी हो गई थी। अब उसने यूनिवर्सिटी में एडमीशन ले लिया था। वह शादी शुदा ज़िंदगी और एजुकेशन दोनों में कामयाब था। यूनिवर्सिटी का ज़माना सलामती से गुज़र गया था और अब आगे की तरफ़ बढ़ रहा था। जैसे-जैसे वह तरक़्क़ी कर रहा था वैसे-वैसे उसका ईमान, तक़वा और अख़लाक़ भी और ज़्यादा मज़बूत होता जा रहा था। वह अब पोस्ट ऑफ़िस में एक अच्छी पोस्ट पर है। उसकी ज़िंदगी कामयाब है और वह मां बाप, दोस्तों और समाज का नाम रौशन करने वाला माना जाता है।

यह बात भी बता दूं कि मसऊद के मां-बाप जाफ़र के घर वालों से ज़्यादा मालदार थे। यह बात

इसलिए लिख रहा हूं ताकि पढ़ने वालों के ज़ेहन में यह ख़्याल पैदा न हो कि जाफ़र के घर वाले पैसे वाले थे तो उन्होंने अपने लड़के की शादी कर दी और मसऊद के घर वाले ग़रीब थे तो वह उसकी शादी न कर सके...अफ़सोस कि हम तमाम चीज़ों को पैसे से तौलने लगे हैं और यह चीज़ हमारे समाज में जड़ पकड़ चुकी है।

2- जवानी की बहार का लुत्फ़

हर चीज़ की एक बहार होती है और शादी की बहार जवानी का ज़माना है इस ज़माने में इन्सान बहुत एक्टिव रहता है। अगर इस ज़माने से ज़रूरी फ़ाएदा हासिल न किया जाए तो बहुत जल्दी पतझड़ का ज़माना आ जाता है और यह बहार बिल्कुल ख़त्म हो जाती है और अगर ख़त्म न हो तो कम तो बहरहाल हो ही जाती है और फिर इंसान शादी के बहुत से फ़ायदे नहीं उठा सकता।

आम तौर पर वही शख़्स ज़िंदगी को ऐश और मुहब्बत से भर सकता है जिसमें ख़ुद जवानी की बहार पाई जाती हो।

कलियों को देखिए, ताज़गी से हमें उम्मीद और आरज़ू का पयाम देती हैं लेकिन मुरझाई कलियां नाउम्मीदी, सुस्ती और मौत की बातें करती हैं। नौजवान भी फूलों ही की तरह होते हैं, उन्हें चाहिए कि वह इस ज़माने के निकल जाने से पहले इससे फ़ायदा उठा लें और अपनी शादी शुदा ज़िंदगी के ख़ूबसूरत महल को मज़बूत बुनयादों पर ख़ड़ा करें।

इस सिलसिले में पैग़म्बरे अकरम[स०] की एक बहतरीन हदीस है जो किसी भी बहाने की गुंजाईश नहीं छोड़ती है, "लोगो! अल्लाह की तरफ़ से जिब्रील मेरे पास आए और कहा, "कुंवारी लड़कियां ऐसी हैं जैसे पेड़ों के फल। अगर उन्हें सही वक़्त यानी उस फ़स्ल में जिसमें पकते हैं न तोड़ा जाए तो सूरज की गर्मी उन्हें ख़राब कर देगी और पतझड़ की हवा गिरा देगी। इसी तरह जब जवान लड़कियां औरतों की उम्र को पहुंच जाएं तो उनकी शादी करने के अलावा कोई चारा नहीं है और अगर शादी न की तो यह उम्मीद नहीं रखना चाहिए कि वह महफ़ूज़ रहेंगी क्योंकि वह भी इंसान हैं (और इंसान में सेक्चुअल डिज़ायर्स मौजूद हैं जो शौहर बीवी एक दूसरे के ज़रिए पूरा करते हैं)। लड़कों के बारे में भी ऐसा ही है।" [1]

रसूले अकरम[स०] जो हुक्म और क़ानून बयान फ़रमाते हैं वह ख़ुदा की तरफ़ से होता है। ख़ुदा के हुक्म के मुक़ाबले में किसी के नज़रिए और ख़्याल की कोई हैसियत नहीं है और हर वह क़ानून, रस्मो रिवाज और नज़रिया बातिल है जो ख़ुदा के क़ानून और उसके हुक्म के ख़िलाफ़ हो।

> *रसूले अकरम[स०] जो हुक्म और क़ानून बयान फ़रमाते हैं वह ख़ुदा की तरफ़ से होता है। ख़ुदा के हुक्म के मुक़ाबले में किसी के नज़रिए और ख़्याल की कोई हैसियत नहीं है और हर वह क़ानून, रस्मो रिवाज और नज़रिया बातिल है जो ख़ुदा के क़ानून और उसके हुक्म के ख़िलाफ़ हो।*

जो लोग किसी भी वजह से नौजवानी के ज़माने में शादी नहीं करते हैं वह यक़ीनन अपना नुक़्सान करते हैं और उन्हें इसका नुक़्सान भुगतना पड़ सकता है। अगर हम समाज की स्टडी करें तो ऐसे बहुत से लोग मिल जाएंगे जिन्होंने शादी में देरी की वजह से नुक़्सान उठाया है।

एक और अफ़सोसनाक कहानी

नासिर का सोचना था कि जब तक इन्सान के पास ज़ाती घर, गाड़ी और बहुत सी रक़्म जमा न हो उस वक़्त तक शादी नहीं करना चाहिए। इस सिलसिले में वह किसी की नसीहत नहीं सुनता था। उसने अपनी सोच के मुताबिक़ अमल किया और इतनी ज़्यादा मेहनत की कि उसने घर, गाड़ी और बेपनाह दौलत जमा कर ली और उसके बाद शादी का प्लान बनाया। मगर अफ़सोस वक़्त निकल चुका था। उसकी उम्र 30 साल की हो गई थी। तन्हाई, जिंसी बेराह रवी और ज़्यादा मेहनत ने उसके जिस्म और रूह को कमज़ोर और बीमार बना दिया था। चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई थीं। सर के कुछ बाल भी झड़ गए थे...यानी अब वह दस साल पहले का नासिर नहीं था। जवानी का जोश ख़त्म हो चुका था। उसने अपने लिए किसी लड़की की तलाश शुरू की लेकिन कोई नौजवान लड़की उससे शादी के लिए तैयार नहीं हुई। शादी के सिलसिले में उसकी जो शर्तें थीं वह एक-एक करके उसके दिमाग़ से निकल गईं, उसकी बड़ी-बड़ी तमन्नाएं, धीरे-धीरे ख़ाक में मिल गईं। बड़ी कोशिशों के बाद एक लड़की मिली मगर उसी की तरह। वह लड़की भी डिग्रियां हासिल करने, हुनर सीखने और अपनी ग़लत सोच की वजह से शौहर पाने में नाकाम रह गई थी। शादी में देर की वजह से

साई कोलोजिकल मरीज़ भी हो गई थी। उसकी उम्र भी 30 साल थी।

दोनों ने शादी कर ली मगर जिस लड़के-लड़की में जोश और वलवला न हो वह कैसे ऐशो-आराम और सुकून-चैन की ज़िंदगी गुज़ार सकते हैं?!

शुरू ही से झगड़ों और बहानेबाज़ियों का सिलसिला शुरू हो गया। अब उनकी ज़िंदगी जहन्नम बनी हुई है। रोज़ाना लड़ाई और हंगामा रहता है। बच्चे भी पैदा हो गए हैं, ऐसे मज़लूम बच्चे कि जिनके मां बाप में न उनकी अच्छी परवरिश का शौक़ है न उनके ख़र्चों को पूरा करने का हौसला। रोज़ाना बस अपने मां-बाप के बीच होने वाली जंग को देखते रहते हैं। ऐसे बच्चे रहम के क़ाबिल हैं।

3- ग़लत रास्तों पर भटकने से बचाव

जिंसी बेराह रवी से ज़्यादा नौजवानों को शायद ही कोई चीज़ बर्बाद करती हो। यह ग़ल्तियां जवान लड़के-लड़कियों की ज़िंदगी को अंधेरा बना देते हैं। ऐसा ज़ख़्म देती हैं कि जिसकी कसक रहती ज़िन्दगी तक बाक़ी रहती है। लड़के-लड़की के ग़लत रिलेशन और जिंसी बेराह रवी से समाज को भयानक नुक़्सान पहुंचता है। ख़ुद ऐसे जवान लड़के लड़कियां भी आख़िरी उम्र तक इस गुनाह के अज़ाब को महसूस करते हैं और अपने किए पर पछताते हैं।

शादी का एक बेहतरीन फ़ायदा यह है कि इंसान इस तरह की ग़लतियों और निजासतों से पाक रहता है।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ] फ़रमाते हैं, "बाप की भलाई इसमें है कि उसकी लड़की उसके घर में महीना (पीरियड्स) न देखे।" [2]

मैं अपने दिल में सोचता हूं कि इस उम्र में लड़की की शादी कैसे मुमकिन है?! लेकिन जब मैंने समाज के बुरे हालात को देखा तो इस हदीस को अच्छी तरह समझ गया। याद रहे कि इस हदीस का यह मतलब नहीं है कि लड़की की शादी उसी उम्र में करना ज़रूरी है बल्कि इसका मतलब यह है कि शादी में जल्दी की जाए और देर न हो। ख़ुदा न-ख़ास्ता लड़की के हाथ से निकलने से पहले ही उसकी शादी कर दी जाना चाहिए।

हमें इस कड़वी सच्चाई को मान लेना चाहिए कि हमारे समाज में भी जवानों की ख़राबी के लिए बहुत सी चीज़ें मौजूद है। अगर मां-बाप नहीं जानते, अगर टीचर, स्कूल-कालेज वग़ैरा के ज़िम्मेदार नहीं जानते तो वह जान लें कि यह मुश्किल बहुत बड़ी मुश्किल है। इसके हल के लिए हम सब को कोशिश करना चाहिए।

> *हमें इस कड़वी सच्चाई को मान लेना चाहिए कि हमारे समाज में भी जवानों की ख़राबी के लिए बहुत सी चीज़ें मौजूद है। अगर मां-बाप नहीं जानते, अगर टीचर्स, स्कूल-कालेज वग़ैरा के ज़िम्मेदार नहीं जानते तो वह जान लें कि यह मुश्किल बहुत बड़ी मुश्किल है। इसके हल के लिए हम सब को कोशिश करना चाहिए।*

हमें चाहिए कि अपनी उम्र के इस बेहतरीन ज़माने में ख़ुद को पाक रखने की कोशिश करें। अपनी इज़्ज़त और पाकीज़गी के मोती को ऐसे ही न गंवा दें। दीन, अख़लाक़ और इंसानियत के नाते इस मोती की हिफ़ाज़त वाजिब है। अगर शादी में देर भी हो जाए तब भी इसकी हिफ़ाज़त वाजिब रहेगी।

यक़ीन कीजिए कि इस मोती को गंवा देने या इसमें ख़तरे पैदा करने से शर्मिंदगी और अफ़सोस के सिवा कुछ नहीं मिलता। ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस मोती को गंवा देने या इसकी चमक कम करने के बाद डिप्रेशन और शर्मिंदगी का शिकार हुए हैं। ख़ास तौर से लड़कियां क्योंकि लड़कियां नाज़ुक मिज़ाज होती हैं और हया और पाकीज़गी उनमें ज़्यादा होती है। उनका यह मोती सबसे ज़्यादा क़ीमती होता है। उनके लिए इस अनमोल मोती को गंवा देना या इसकी थोड़ी सी चमक भी खोना बहुत नुक़्सान उठाने और पछतावे की वजह बन जाता है। हां, अगर कोई बिल्कुल ही बे हया हो, गुनाहों में डूब चुकी हो और जिसकी हिस मर गई हो उसकी बात दूसरी है।

ख़ुदा न-ख़ास्ता हम में से किसी का ये पाकीज़गी का मोती गंदा हो जाए तो सोचिए कितना पछतावा होगा, कितनी शर्मिंदगी होगी? हमें ख़ुदा का शुक्र करना चाहिए कि हमारा ये मोती अभी महफ़ूज़ है और दुआ करना चाहिए कि हमेशा इसी तरह महफ़ूज़ रहे।

क्या कोई इस बात को पसंद करेगा कि उसके जवान बच्चों को गुनाहों की दलदल में धंसाया जाए?! क्या ये जवान ख़ुदा की अमानत नही हैं?! क्यों फ़ुज़ूल बहानों से उनकी शादी में देर कर दी जाती है?! हम अपने ही हाथों ख़ुद को क्यों बर्बाद कर रहे हैं?! आईए थोड़ा सा ग़ौर करें और सच्चाइयों को सामने रखें। जवानों की सेक्चुअल डिज़ायर्स से जंग नहीं की जा सकती बल्कि इसका हल ढूंढ़ना हम सब की ज़िम्मेदारी है। अपने जवान लड़के लड़कियों की सही उम्र में सही तरीक़े से शादी इसका सबसे अच्छा हल है।

1. वसाएल, 14/39, तहरीरुल वसीला इमाम ख़ुमैनी, जि० 2, किताबुन्निकाह

ऐसा किया तो रिश्ता ज़रूर टूटेगा

अभी तक की रिसर्च के मुताबिक़ 21 ग़लतियाँ ऐसी हैं जिनका बार-बार रिपीट करना किसी भी रिश्ते को तोड़ने और घर को बरबाद करने के लिए काफ़ी है।

- हमेशा अपने आपको ही सही समझना, यहां तक कि उस वक़्त भी जब आपके पास अपनी बात को साबित करने के लिए कोई दलील न हो।
- कभी माफ़ी ना मांगना, ख़ास कर उस वक़्त जब आपकी ग़लती साबित हो चुकी हो।
- अपने लाइफ़-पार्टनर की ग़लतियों को बेरहमी के साथ दूसरों के सामने बयान करना।
- अपने लाइफ़-पार्टनर की सोच और ख़्यालात के बारे में दावा करना कि हम तुमसे बेहतर तुम्हारे बारे में जानते हैं।
- यह उम्मीद करना कि आपका लाइफ़-पार्टनर आपकी ज़रूरतों को बग़ैर बताए समझ ले और उन्हें फ़ौरन पूरा भी करे।
- अपने लाइफ़-पार्टनर के प्रिफ़्रेंसेस और उसकी ज़रूरतों को नज़र अन्दाज़ करते हुए सिर्फ अपने प्रिफ़्रेंसेस पर ज़ोर देना।
- यह ख़्याल करना कि लाइफ़-पार्टनर की और हमारी जिस्मानी ज़रूरतें एक जैसी हैं।
- नाराज़गी का इज़हार न करके फ़ौरन गुस्से का इज़हार करना।
- अपने लाइफ़-पार्टनर की कमियों और ग़लतियों और इसी तरह उसके घरेलू राज़ों को मालूम करना ताकि आपसी झगड़ों में कामयाबी के लिए उनसे फ़ायदा उठाया जा सके।
- अपने टारगेट को हासिल करने या लाइफ़-पार्टनर का मज़ाक उड़ाने या उसको तकलीफ़ पहुंचाने के लिए उसके एहसासे गुनाह से फ़ायदा उठाना।
- अपने लाइफ़-पार्टनर की गलतियों और बुराइयों पर नज़र रखना और बार-बार दोहराना और उसकी अच्छाइयों को कभी ज़बान पर न लाना।
- आपसी झगड़े की सूरत में किसी भी तरह पीछे न हटना और झगड़े को इतना बढ़ाना कि किसी एक को घर छोड़ना पड़ जाए।
- गुज़रे हुए कड़वे वाक़ेआत को न भूलना और उनको बार-बार दोहराना।
- अपने लाइफ़-पार्टनर के साथ हद से ज़्यादा मुहब्बत का इज़हार करना और ये ज़ाहिर करना कि उसके बग़ैर या उसकी बेतवज्जोही की सूरत में मेरी मौत हो जाएगी।
- आपस में गहरा रिश्ता न होने की सूरत में एक दूसरे से फ़िज़िकल और इमोशनल दूरी पैदा करना।
- वादा करना और उस पर कभी अमल न करना।
- किसी हद तक मुनाफ़ेक़ाना ज़िंदगी जीना कि आपके लाइफ़-पार्टनर को यह मालूम न हो सके कि आपके ज़हन में क्या चल रहा है।
- अपनी बुरी आदतों के लिए हमेशा बहाने ढूंढना।
- हमेशा इस बात पर ज़ोर देना कि जो बात आप कहना चाह रही हैं वह उससे ज़्यादा अहम है जो आपका लाइफ़-पार्टनर कहना चाहता है और इस वजह से उसकी बातों को काट देना।
- ये ज़ाहिर करना कि अपने लाइफ़-पार्टनर की सारी बातें आप समझ गई हैं जबकि उसकी बातों को आपने ज़रा सा भी नहीं समझा है।
- इस तरह का बर्ताव करना कि जैसे ऊपर बयान की गई बुराइयों में से आपके अंदर कोई बुराई पाई ही नहीं जाती। ●

इमाम मुहम्मद बाक़िर अ०

हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० 1 रजब 57 हिजरी को जुमे के दिन मदीने में पैदा हुए थे। आपका नाम 'मुहम्मद' है। आपकी कुन्नियत 'अबू जाफ़र' और आपके अल्क़ाब बाक़िर, शाकिर, हादी वग़ैरा हैं।

इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० को 'बाक़िर' लक़ब इसलिए दिया गया था कि आपने इल्म को बहुत फैला दिया था, हक़ीक़तों, एहकाम और मालूमात के वह ख़ज़ाने खोल दिए थे कि लोग उन्हें जानते भी नहीं थे।

करबला में इमाम बाक़िर अ०

आपकी उम्र अभी तीन साल ही की थी कि आपको इमाम हुसैन के साथ अपना वतन मदीना छोड़ना पड़ा। फिर मदीने से मक्के और वहां से करबला तक के सफ़र की परेशानियां बर्दाश्त करना पड़ीं। इसके बाद अपनी आंखों से करबला के वाक़ेए की मुसीबतें देखीं, कूफ़े और शाम के बाज़ारों और दरबारों का हाल देखा। एक साल शाम में क़ैद रहे, फिर वहां से छूट कर 8 रबीउल अव्वल 62 हिजरी को मदीने वापस हुए।

इमाम बाक़िर अ० और जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी की आपसी मुलाक़ात

रसूले ख़ुदा स० एक दिन अपनी गोद में इमाम हुसैन अ० को लिए हुए प्यार कर रहे थे। तभी आपके एक ख़ास सहाबी जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी हाज़िर हुए। आपने जाबिर को देख कर फ़रमाया कि ऐ जाबिर! मेरे इस बेटे की नस्ल से एक बच्चा पैदा होगा जो इल्म और हिकमत का ख़ज़ाना होगा। ऐ जाबिर! तुम उस ज़माने तक ज़िंदा रहोगे। ऐ जाबिर! देखो, जब तुम उससे मिलना तो मेरा सलाम कह देना!

जाबिर ने इस ख़बर को बड़ी ख़ुशी के साथ सुना और उसी वक़्त से इस ख़ुशी की घड़ी का इन्तिज़ार करना शुरू कर दिया, यहां तक कि इन्तिज़ार में आंखें पथरा गईं और आंखों की रौशनी जाती रही।

जब तक आप आंख वाले थे, हर जगह तलाश करते रहे और जब आंख की रौशनी जाती रही तो ज़बान से पुकारना शुरू कर दिया। आपकी ज़बान पर जब हर वक़्त इमाम मुहम्मद बाक़िर का नाम रहने लगा तो लोग यह कहने लगे कि जाबिर का दिमाग़ बुढ़ापे की वजह से बेकार हो गया है। बहरहाल वह वक़्त आ ही गया कि आप रसूल स० का सलाम पहुंचाने में कामयाब हो गए। रावी का बयान है कि हम जनाबे जाबिर के पास बैठे हुए थे कि इतने में इमाम ज़ैनुल आबिदीन अ० तशरीफ़ लाए। आपके साथ आपके बेटे इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० भी थे। इमाम अ० ने अपने बेटे से फ़रमाया कि चचा जाबिर की पेशानी का बोसा लो। बेटे ने फ़ौरन अमल किया। जाबिर ने उनको अपने सीने से लगा लिया और कहा कि ऐ रसूल के बेटे! आपको आपके दादा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स० ने सलाम फ़रमाया है।

हज़रत ने कहा कि ऐ जाबिर! उन पर और तुम पर मेरी तरफ़ से भी सलाम हो। इसके बाद जाबिर ने आपसे शिफ़ाअत के लिए ज़मानत की दरख़्वास्त की। आपने उसे मंज़ूर फ़रमाया और कहा कि मैं तुम्हारे जन्नत में जाने का ज़ामिन हूं।

इमाम बाक़िर अ० का इल्म

इमाम बाक़िर अ० की इल्मी बरकतों से कोई भी इंकार नहीं कर सकता। इसी वजह से आपके बारे में कहा जाता है कि आप 'बाक़िरुल उलूम' यानी इल्म के फ़ैलाने वाले हैं।

उस वक़्त के सारे उलमा और इस्लामी स्कालर्स आपके इल्म और अमल की

वजह से आपका बेहद एहतेराम करते थे और अपनी हर मुश्किल में आपसे आकर सवाल करते थे।

आपकी इबादत

आप अपने बाप-दादा की तरह बेपनाह इबादत करते थे। रातों में इबादत करना और सारा दिन रोज़े से गुज़ारना आपकी आदत थी। आपने बहुत परहेज़गारी के साथ ज़िंदगी गुज़ारी थी। बोरिए पर बैठते थे, जो तोहफ़े आते थे उन्हें ग़रीबों में बांट देते थे। ग़रीबों पर बेहद मेहरबानी फ़रमाते थे और उनकी बड़ी इज़्ज़त करते थे। यहां तक कि आपकी सारी आमदनी ग़रीबों पर ही ख़र्च होती थी।

आपके एक ग़ुलाम का बयान है कि एक दिन आप काबे के क़रीब तशरीफ़ ले गए। आपकी जैसे ही काबे पर नज़र पड़ी आप चीख़ मार कर रोने लगे। मैंने कहा कि हुज़ूर सब लोग देख रहे हैं, ज़रा आहिस्ता से गिरया कीजिए। इरशाद फ़रमाया कि ऐ अफ़लह! शायद ख़ुदा भी इन्हीं लोगों की तरह मेरी तरफ़ देख ले और मेरी बख़्शिश का सहारा हो जाए। उसके बाद आप सजदे में तशरीफ़ ले गए और जब सर उठाया तो सारी ज़मीन आंसुओं से तर थी। [1]

इमाम बाक़िर[अ॰] और हिशाम बिन अब्दुल मलिक

यह वह ज़माना था जिसमें अगर किसी बच्चे का नाम हज़रत अली के नाम पर होता था तो वह क़त्ल कर दिया जाता था। इसके बाद 101 हिजरी में यज़ीद बिन अब्दुल मलिक ख़लीफ़ा बनाया गया और 105 हिजरी में हिशाम बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान बादशाह बना।

हिशाम बिन अब्दुल मलिक एक चालाक, कंजूस बहुत तास्सुब वाला, चालबाज़, सख़्त मिज़ाज, घमंडी, लालची और कानों का कच्चा इंसान था। हद दर्जे का शक्की भी था। कभी किसी का ऐतबार नहीं करता था। अक्सर सिर्फ़ शक की वजह से किसी को भी क़त्ल करा देता था। उसने ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह क़शरी को 105 हिजरी से 120 हिजरी तक ईराक़ का गवर्नर बनाया था। क़शरी का हाल यह था कि हिशाम को रसूलुल्लाह[स॰] से अफ़ज़ल बताता और उसी का प्रोपेगंडा किया करता था।

हिशाम आले मुहम्मद का बहुत बड़ा दुश्मन था। उसी ने ज़ैद शहीद को निहायत बुरी तरह से क़त्ल किया था। उसी ने अपने ज़माने में फ़रज़दक़ शायर को इमाम ज़ैनुल आबेदीन की तारीफ़ करने के जुर्म में क़ैद कर दिया था।

हिशाम का सवाल और उसका जवाब

तख़्ते सलतनत पर बैठने के बाद हिशाम बिन अब्दुल मलिक हज के लिए गया। वहां उसने इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ॰] को देखा कि मस्जिदुल हराम में बैठे हुए लोगों को नसीहत कर रहे हैं। यह देख कर हिशाम की दुश्मनी ने करवट ली और उसने दिल में सोचा कि इन्हें ज़लील करना चाहिए और इसी इरादे से उसने एक शख़्स से कहा कि जाकर उनसे कहो कि ख़लीफ़ा पूछ रहे हैं कि क़यामत के दिन आख़िरी फ़ैसले से पहले लोग क्या खाएं-पिएंगे। उसने जाकर इमाम[अ॰] के सामने ख़लीफ़ा का सवाल पेश कर दिया। आपने फ़रमाया कि जहां आख़िरी फ़ैसला होगा वहां मेवेदार पेड़ होंगे, वह लोग उन्हीं चीज़ों को इस्तेमाल करेंगे। बादशाह ने जवाब सुनकर कहा कि यह बिल्कुल ग़लत है क्योंकि क़यामत में लोग मुसीबतों और अपनी परेशानियों में फंसे होंगे, उनको ख़ाने पीने का होश कहां होगा? क़ासिद ने बादशाह की बात फिर से जाकर नक़्ल कर दी। हज़रत ने क़ासिद से फ़रमाया कि जाओ और बादशाह से कहो कि तुमने क़ुरआन भी पढ़ा है या नहीं। क्या क़ुरआन में यह नहीं है कि 'जहन्नम' के लोग जन्नत वालों से कहेंगे कि हमें पानी और कुछ नेमतें दे दो कि खा-पी लें। उस वक़्त वह जवाब देंगे कि काफ़िरों पर जन्नत की नेमतें हराम हैं। जब जहन्नम में भी लोग खाना पीना नहीं भूलेंगे तो आख़िरी फ़ैसले के वक़्त कैसे भूल जाएंगे जिसमें जहन्नम से कम सख़्तियां होंगी। यह सुनकर हिशाम शर्मिन्दा हो गया। [2]

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ॰] की शहादत

आप अगरचे अपने इल्म की बरकतों से इस्लाम को बराबर फ़ाएदा पहुंचा रहे थे लेकिन उसके बावजूद हिशाम बिन अब्दुल मलिक ने आपको ज़हर के ज़रिए शहीद करा दिया और आप 7 ज़िलहिज्जा 114 हिजरी को मदीने में 57 साल की उम्र में शहीद हो गए और आपको जन्नतुल बक़ी में दफ़्न किया गया।

1-कशफ़ुल गुम्मा/95, 2-तारीख़ अईम्मा/414

हज

दिल की पाकीज़गी का ज़रिया

■ असद रज़ा

हज बुराईयों से भरी हुई इस दुनिया में निजात की एक उम्मीद है। हम जानते हैं कि हम जिस दुनिया में रह रहे हैं वहां इंसान की उन रूहानी वेल्युज़ को बर्बाद किया जा रहा है जो इंसान की इज़्ज़त और इंसानियत का पैमाना हैं। हालात ऐसे हैं कि आज शरीफ़ और नेक इंसान एक तरह की मायूसी वाली ज़िंदगी जी रहे हैं और इस माहौल में सांस लेने की वजह से ज़िंदगी उनके लिए बहुत तक्लीफ़देह हो गई है। इसलिए वह हमेशा एक रूहानी आवाज़ को सुनने के लिए बेक़रार रहते हैं, एक ऐसी आवाज़ जो उनकी मायूसी को दूर करके उन्हें एक ऐसे माहौल में ले जाए जहाँ हर तरफ़ बस खुदा ही खुदा हो। ये एक ऐसा ख़्वाब है जो हज के मैदान से आने वाली 'लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक' की सदाओं को सुनकर ही पूरा हो सकता है क्योंकि हज से रूह पाक और दिल नूरानी हो जाते हैं। हज दिलों को खुदा से मुलाक़ात के लिए जोश और जज़्बे से भर देता है, वह जोश जो हमें खुदा की अज़मत और मन्ज़िलत को काफ़ी हद तक पहचनवा देता है।

काबा वह जगह है जहां मुर्दा दिलों को रूहानी ग़िज़ा मिलती है। बुराईयों और अंधेरों से भरी हुई इस दुनिया में काबा इंसानी समाज के लिए एक रूहानी पनागाह है। हम में से वह लोग जो मुनाफ़े-नुक़सान के परेशान कर देने वाले हिसाब-किताब से थक चुके हैं, वह जो अपने और दूसरों के लिए एक खुशहाल ज़िंदगी चाहते हैं, उन्हें काबे में एक ऐसा सुकून मिलता है कि उनका दिल हक़ीक़ी खुशियों से भर जाता है। यहां आकर एक सच्चे हाजी को सबसे बड़ा एहसास जो होता है वह ये है कि वह खुदा के अलावा किसी भी चीज़ की ज़रूरत महसूस नहीं करता।

हज खुदा के एहसानों का शुक्र है

क़ुरआन फ़रमाता है, "इसमें खुली हुई निशानियां मुक़ामे इब्राहीम है और जो इसमें दाख़िल हो जाएगा वह महफ़ूज़ हो जाएगा और अल्लाह के लिए लोगों पर इस घर का हज करना वाजिब है अगर इसकी ताक़त रखते हों..." (1)

ये आयत बंदों पर खुदा के हक़ को बयान कर रही है। खुदा ने अपने बंदों पर इतने एहसान किए और इतनी नेमतें नाज़िल की हैं कि बंदों पर वाजिब हो जाता है कि वह इन अनगिनत नेमतों का शुक्र अदा करने के लिए उसके घर तक का सफ़र करें। एक दूसरी जगह खुदा फ़रमाता है, "जो कुछ तुमने माँगा तुमको दिया और अगर तुम उसकी नेमतों को गिनना चाहोगे तो हरगिज़ नहीं गिन सकते।" (2)

ऐसे एहसान करने वाले का हम पर यही हक़ बनता है कि उसके घर पर जाकर उसका शुक्र अदा करें और ये शुक्रगुज़ारी भी ऐसी शुक्रगुज़ारी है कि इसमें भी हमारा ही फ़ायदा है क्योंकि हम जब अपने पालने वाले का शुक्र अदा करते हैं तो इससे हमारी नेमतें ही बढ़ती हैं। साथ ही जब हम उसका शुक्र और उसकी हम्द करते हैं तो इससे हमारे और जानवरों के बीच एक फ़र्क़ भी पैदा हो जाता है। सच ये है कि खुदा ने इंसान को अपने मुक़द्दस घर पर बुलाकर अपनी इबादत का मौक़ा अता करके उस पर बहुत बड़ा फ़ज़्ल किया है क्योंकि यही वह चीज़ है जो इंसानों और हैवानों में एक दीवार खींच देती है।

इमाम बाक़िर(अ०) फ़रमाते हैं, "जब कोई हज पर जाने का इरादा करता है तो अपने सफ़र की तैयारी में उसके उठे हुए हर क़दम के बदले में अल्लाह उसके लिए दस नेकियां लिखता है और दस बुराईयों को मिटाता है और उसको दस दर्जे बुलंदी अता करता है जब तक कि वह इन कामों का पूरा नहीं कर लेता।"

इमाम बाक़िर(अ०) एक दूसरी हदीस में फ़रमाते हैं, "हज और उमरह आख़िरत के बाज़ारों में से दो बाज़ार हैं। जो इनमें दाख़िल होते हैं वह अल्लाह के मेहमान होते हैं। अगर अल्लाह अपने मेहमान की ज़िंदगी को बाक़ी रखता है तो वह गुनाहों से पाक ज़िंदगी जिएगा और अगर वह उसको मौत देता है तो वह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।"

अगर कोई हज कर सकने के बावजूद हज न करे तो ये गुनाहे कबीरा है। इमाम अली(अ०) से रसूले इस्लाम(स०) ने फ़रमाया, "ऐ अली! जो हज की ताक़त रखने के बावजूद हज न करे वह मुसलमान नहीं है...ऐ अली! जो कोई भी हज में इतनी देर करे कि उसे मौत आ जाए तो खुदा क़यामत में उसे यहूदी या नसरानी की सूरत में उठाएगा।"

हमें ये बात ज़रूर याद रखना चाहिए कि हमारे हज और दूसरी इबादतों के क़ुबूल होने की शर्त हमारा खुदा के लिए ख़ुलूस है। हम कोई भी इबादत करें, उसके मक़सद और फ़ल्सफ़े को समझके अंजाम दें। तभी हमें अपनी इबादतों से सही फ़ाएदा मिल पाएगा। अगर हम अपनी इबादतों को उनके मक़सद को समझे बग़ैर अंजाम देगें तो इनसे हमें कोई रूहानी फ़ाएदा नहीं मिल पाएगा, जबकि इबादतों का अस्ल मक़सद ही रूहानियत को हासिल करना है।

इमाम सज्जाद(अ०) ने एक ऐसे शख़्स से ये सवाल पूछे जो हज करके आया था, "जब तुम अहराम पहन कर लब्बैक कहते हुए दाख़िल हुए तो क्या तुमने आख़िरी वक़्त तक गुनाहों को छोड़ने और परहेज़गारी की ज़िंदगी जीने के बारे में सोचा था? जिन आमाल को तुम अंजाम दे रहे थे, क्या तुमने उनके मक़सद पर ग़ौर किया था? जब तुम तवाफ़, वुक़ूफ़, अल-मशअर, रमी और मिना में थे, अपना सर मुंडवा रहे थे और क़ुर्बानी दे रहे थे तो क्या तुमने वहां की ख़ास नियतें की थीं और उस अमल के मक़सद की तरफ़ ध्यान दिया था?"

उसने कहा कि नहीं। ये सुनकर इमाम ने फ़रमाया, "सच ये है कि तुमने हज ही नहीं किया है क्योंकि तुमने हज के आमाल के मक़सद को समझकर उन्हें अंजाम नहीं दिया।" (हदीस का ख़ुलासा)

1-आले इमरान/97, 2-इब्राहीम/34

घर को जन्नत बनाईए...

शादी शुदा ज़िंदगी में सुकून और जन्नत जैसा आराम मयस्सर होना किसी भी तरह मुमकिन नहीं है। शादी का मतलब आज़ादी और अपनी मर्ज़ी का छिन जाना है, बात-बात पर मियाँ-बीवी की नोक-झोंक ज़िंदगी को जहन्नम बना देती है। एक खुशहाल ज़िंदगी क्या सिर्फ़ फ़िल्मों और सीरियल्स में ही नज़र आ सकती है? हक़ीक़ी और बाहर की दुनिया में क्या कोई फ़ैमिली ऐसी देखने को मिलती है जिसको सभी मायनों में हंसती-खेलती और खुशहाल फ़ैमिली कहा जा सके?

बहुत से लोग तो यही समझते हैं कि शादी के बाद इंसान खुश नहीं रह सकता, जबकि ये सच नहीं है। सच्ची बात तो ये है कि जब दो अलग-अलग ज़हन एक हो जाते हैं तो उनकी अलग-अलग आदतें, अलग-अलग सोचने का अंदाज़, पसंद-नापसंद का फ़र्क़ और बहुत सी चीज़ें जो एक दूसरे से मेल नहीं खातीं, वह उनको एक दूसरे से टकरा देते हैं। जिसकी वजह से ज़िंदगी की खुशियां धीरे-धीरे ख़त्म होती जाती हैं। लेकिन अगर ज़रा सूझ-बूझ से काम लिया जाए और उन चीज़ों को देखने के बजाए जो पसंद नहीं हैं उन्हें देखा जाए जो हमारी पसंद की हैं तो ज़िंदगी में सुकून ही सुकून पैदा हो सकता है। कुछ चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें अगर ध्यान में रखा जाए तो मियाँ-बीवी के रिश्ते मज़बूत हो सकते हैं और प्यार-मुहब्बत बढ़ सकता है।

(1) ख़ुद को अपने लाइफ़-पार्टनर की जगह पर रख कर देखिए: अगर आप अपने आपको अपने शौहर की जगह पर रखकर देखेंगी तो आपको उसकी फ़ीलिंग्स का एहसास हो सकता है। जब भी आप लोगों के बीच कोई लड़ाई-झगड़ा या बहस हो तो अपनी फ़ीलिंग्स पर ग़ौर करने के बजाए अपने शौहर की फ़ीलिंग्स को समझने की कोशिश कीजिए।

(2) आपसी नोक-झोंक को अहमियत न दें: क्योंकि आप और आपके शौहर दो अलग-अलग इंसान हैं जिनकी सोच और ज़हन भी अलग-अलग हैं। जिसकी वजह से कभी-कभार आपस में नोक-झोंक होना ज़रूरी है। बस आपको ये ध्यान रखना है कि ये छोटी-छोटी लड़ाईयां आपके दिलों को एक दूसरे से दूर न कर दें। ये ख़्याल ज़रूर रखिए कि ये सोचने का अलग-अलग अंदाज़ आपकी ज़िंदगी को जहन्नम न बना दे। आपको एक दूसरे को समझ कर एक दूसरे के हिसाब से चलना चाहिए ताकि आपस में मुहब्बत बनी रहे।

(3) अपनी फ़ीलिंग्स को एक दूसरे के साथ शेयर कीजिए: लड़ाई-झगड़े और बेकार की बहसों से बचने के लिए अगर आप अपने एहसास और गुस्से को दबाती रहेंगी और अपने शौहर को अपनी परेशानी के बारे में नहीं बताएंगी तो आप दोनों धीरे-धीरे एक दूसरे से दूर होते जाएंगे। इसलिए आपको अपनी परेशानी को गुस्से के बग़ैर अपने शौहर को ज़रूर बताना चाहिए जिसके लिए आप कुछ तरीक़े इस्तेमाल कर सकती हैं:-

- अगर किसी बात पर आप और आपके शौहर की सोच अलग हो जाए तो अपनी बात को मनवाने या साबित करने के लिए कभी भी कोई

ऐसी बात न करें जिससे आपके शौहर की तौहीन होती हो या उसे लगे कि आपकी नज़र में उसकी कोई हैसियत नहीं है।

● अगर कभी गुस्सा ज़्यादा आ जाए और आपको लगे कि आपका कंट्रोल ज़ुबान पर नहीं रह गया है तो बिल्कुल ख़ामोश हो जाईए और जब आपको लगे कि अब आपको अपने आप पर थोड़ा कंट्रोल हो गया है तब बहुत आराम से आपसी बात-चीत से मसले को सुलझाईए। किसी भी क़ीमत पर गुस्से की हालत में कुछ भी न कहिए वरना आपको बाद में पछताना पड़ेगा।

● अगर आप चाहती हैं कि अपने शौहर को कुछ करने से रोकें तो इसके लिए कोई ऐसी बात मत कहिए जिससे उसकी तौहीन होती हो या ऐसा लगे कि आप उसको ग़लत साबित करना चाहती हैं। इसके बजाए आप ये कर सकती हैं कि उससे कहें कि अगर आपने ये किया तो मैं नाराज़ हो जाऊँगी या मुझे तक्लीफ़ होगी।

(4) कुछ वक़्त अपने शौहर से दूर भी गुज़ारा करें: शादी शुदा ज़िंदगी में ये बहुत ज़रूरी चीज़ है कि एक दूसरे से कुछ वक़्त दूर गुज़ारा जाए। सही है कि एक दूसरे का साथ खुशियां देता है लेकिन ये भी ज़रूरी है कि कुछ वक़्त अपने शौहर से अलग रह कर भी गुज़ारा जाए। मतलब ये है कि ये वक़्त आप अपने दूसरे अज़ीज़ों और रिश्तेदारों के साथ रह कर गुज़ार सकती हैं।

(5) एक दूसरे से रिश्ता बनाए रहें: ध्यान रहे कि काम और घरेलू मसरूफ़ियत की वजह से आप दोनों एक दूसरे से दूर न होते जाएं। हालांकि ज़्यादातर लोग आपसी रिश्तों में दूरियां नहीं आने देते लेकिन कुछ मियाँ-बीवी काम-काज और घर के मसलों में इतना घिर जाते हैं कि एक दूसरे से पहले वाले रिश्ते बाक़ी नहीं रख पाते। अगर आपको लगता है कि आपके शौहर के साथ आपकी पहले वाली बात बाक़ी नहीं रही है तो इस पर ख़ास ध्यान दीजिए और बेकार के सीरियल्स या दूसरे प्रोग्राम देखने के बजाए दिन में कुछ न कुछ वक़्त अपने शौहर के साथ बात-चीत के लिए ज़रूर निकालिए और ये वक़्त अपने शौहर के साथ शेयर कीजिए। इससे आपके आपसी रिश्तों की गरमाहट बनी रहेगी।

(6) घूमने भी जाईए: एक ही जैसी ज़िंदगी गुज़ारते-गुज़ारते भी आपसी रिश्तों में मुहब्बत की कमी होना शुरू हो जाती है। हर दिन अगर एक ही जैसा गुज़रता रहे तो उकताहट होने लगती है और उकताहट के आलम में झुंझलाहट भी पैदा हो जाती है। जिससे नोंक-झोंक और फिर लड़ाई-झगड़े तक की नौबत आ जाती है। अगर हफ़्ते में एक दिन एक दूसरे के साथ कुछ वक़्त तन्हा गुज़ारा जाए तो इस उकताहट और एक सी ज़िंदगी में काफ़ी बदलाव आ सकता है। जिससे रिश्तों में मज़बूती भी आ जाएगी।

इसके अलावा और भी कुछ बहुत छोटी-छोटी बातें हैं जिनसे आपसी रिश्तों को मज़बूत और अटूट बनाया जा सकता है:-

1-शौहर को अपनी बीवी से दिन में एक बार मुहब्बत का इज़हार ज़रूर करना चाहिए। रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया है कि शौहर का अपनी बीवी से *'मैं तुम्हें प्यार करता हूँ'* कहना बीवी कभी नहीं भूलती है।

2-घर से बाहर जाते वक़्त एक दूसरे को ख़ुदा हाफ़िज़ कहकर और अपनी मुहब्बत का इज़हार करके ही बाहर जाना चाहिए।

3-हर वह चीज़ जो आपके शौहर को नापसंद हो उसे करने से बचिए।

4-अपने शौहर की कमज़ोरियों को बार-बार अपनी ज़बान पर मत लाया कीजिए या इसी तरह अगर आपके शौहर के किसी रिश्तेदार में कोई ऐब है तो उसे बीच-बीच में बयान मत किया कीजिए।

5-अपने शौहर का एहतेराम कीजिए और दूसरों के सामने उसकी बुराई मत किया कीजिए।

आपकी ख़ुशहाल शादीशुदा ज़िंदगी
हमारी दिली आरज़ू है... ●

इमाम ख़ुमैनी और बीवी का एहतेराम

इमाम ख़ुमैनी अपनी बीवी का बहुत एहतेराम और उनसे बहुत मुहब्बत करते थे। आपकी पूरी ज़िंदगी ख़ास कर अपना वतन छोड़ने के बाद आपने जो ख़त उनको लिखे हैं उनसे इस बात को अच्छी तरह समझा जा सकता है।

ख़ुद उनकी बीवी का उनके बारे में कहना है, "मैं उनसे राज़ी हूं क्योंकि वह हमेशा मेरा एहतेराम करते थे और मुझे बहुत अहमियत देते थे। शादी की शुरूआत में ही उन्होंने मुझसे कह दिया था कि मैं तुमसे सिर्फ़ इतना चाहता हूं कि वाजिबात पर अमल करो। घर के कामों में मुझे कभी रोकते-टोकते नहीं थे बल्कि सब कुछ मेरे इख़्तियार में था मगर यह कि किसी बहुत ज़रूरी जगह पर कोई बात कही हो। उन्होंने पूरी ज़िंदगी में कभी मुझसे पहले खाना नहीं खाया। दस्तरख़्वान पर बैठ कर चाहे जितनी देर इन्तिज़ार करना पड़े लेकिन वह मेरा इन्तिज़ार करते थे। चाहे कितना ही गुस्सा क्यों न हों लेकिन कभी मुझसे तन्ज़िया लहजे में बात नहीं करते थे। कभी-कभी घर के काम वह ख़ुद भी करते थे। मैंने उनसे 8 साल तक अरबी और फ़िकह पढ़ी है। पैदाईश के बाद बच्चे रात में बहुत रोते थे और रात भर जागते रहते थे। इमाम ख़ुमैनी ने अपना एक टाइम-टेबेल बना लिया था जैसे रात में दो घंटे वह बच्चों की देखभाल करते थे और मैं सोती थी और दो घंटे ख़ुद सोते थे और मैं बच्चों को संभालती थीं। इसी तरह दोपहर में पढ़ाने के बाद बच्चों से मिलकर उनके साथ खेलते भी थे।"

इमाम ख़ुमैनी की बेटी कहती हैं, "अगर हमारी मां का पकाया हुआ खाना कभी ख़राब भी हो जाता था तब भी वह उनसे कुछ नहीं कहते थे।" इसी तरह उनके बच्चों का कहना है कि हमने अपनी ज़िंदगी में कभी नहीं देखा कि उन्होंने हमारी मां को किसी चीज़ का हुक्म दिया हो। जब हमारी मां आपके पास होती थीं तब भी अगर कोई सामान उठाना होता था या दरवाज़ा बंद करना होता था तो आप उनसे नहीं कहते थे बल्कि ख़ुद उठकर वह काम करते थे। वह हमेशा हम लोगों से कहा करते थे कि अपनी मां का हर तरह से ख़्याल रखो। यहां तक कि एक बार वह दोनों बीमार हो गए। हम लोग आपके पास खड़े हुए आपकी देखभाल में लगे हुए थे। जैसे ही आपने ये देखा तो फ़ौरन कहा कि तुम लोग अपनी मां के पास जाओ, जाकर उनका ख़्याल रखो। मुझे किसी की ज़रूरत नहीं है।" ●

प्लीज़! मेरी मदद कीजिए...

शादी देर से और फिर बहुत देर से करना इस वक़्त हमारा बल्कि हर सोसाइटी का एक ऐसा मसला बन गया है जो किसी तरह हल होता नहीं दिख रहा है। जिससे समाज में कितनी मुश्किलें पैदा हो रही हैं उसका हमें अंदाज़ा भी नहीं है और अगर है तो हमने इस तरफ़ से अपनी आँखें मूँद ली हैं। सोसाइटी की इसी मुश्किल की तरफ़ हल्का सा इशारा करने के लिए हम यहां एक ख़त पेश कर रहे हैं जिसको एक ऐसी लड़की ने लिखा है जो देर से होने वाली शादी की मार को झेल रही है। ये ख़त शादी-शुदा ज़िंदगी के मसलों को सुलझाने में एक्सपर्ट, शहरे कुम के बहुत मशहूर आलिमे दीन, हुज्जतुल इस्लाम अली अकबर हुसैनी को लिखा गया था। इस ख़त के साथ-साथ हम यहां अली अकबर हुसैनी साहब का जवाब भी पेश कर रहे हैं:-

मौलाना साहब!

ऐसा लगता है कि मैं इस दुनिया में बिल्कुल अकेली हूँ और ख़ुदा के सिवा मेरा कोई नहीं है। मैं आपका वक़्त बर्बाद करने के लिए माफ़ी चाहती हूँ लेकिन सिर्फ़ मजबूरी में आपको ये ख़त लिख रही हूँ। मैं बाईस साल की हो चुकी हूँ। मेरे पापा दीनदार और बहुत नेक इंसान हैं लेकिन मेरी मम्मी थोड़ी गुस्सेवर हैं और घर में उनकी हैसियत एक डिक्टेटर की सी है। उनका फ़ैसला घर में आख़िरी फ़ैसला होता है। मेरी मुश्किल ये है कि मेरे जो भी रिश्ते आते हैं, उनमें मेरी मम्मी कोई न कोई बुराई ढूँढ ही लेती हैं और मेरा रिश्ता ठुकरा देती हैं। मेरे भाईयों का भी यही हाल है। कभी लड़का उनको पसंद नहीं आता और कभी उनके स्टेटस से मैच नहीं करता और कभी उसका अपना घर या सरकारी नौकरी न होने की वजह से रिश्ता वापस कर दिया जाता है।

मैं घर में बेकार बैठे-बैठे अब उकता गई हूँ और ख़ुदा से सिर्फ़ एक नेक, शरीफ़ और मुहब्बत करने वाले शौहर की दुआ करने के अलावा कुछ नहीं कर सकती हूँ। मसला ये है कि मेरी मम्मी मेरी परेशानी और तंहाई को नहीं समझती हैं।

उधर मेरे घर आने वाले लोग भी अब ताने देने लगे हैं और आपस में मेरे बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं। प्लीज़! आप मेरी मदद कीजिए और मेरी मम्मी और भाईयों को समझाइए कि मुझ पर एहसान करके मुझे मेरी इस तंहाई भरी ज़िंदगी से निजात दें! ख़ुदा की क़सम! मुझे न दौलत चाहिए है और न मेरे लिए लड़के की उम्र की कोई अहमियत है, मुझे सिर्फ़ एक ईमानदार और शरीफ़ शौहर चाहिए और कुछ नहीं।

मोहतरमा!

आपकी बेटी अब बड़ी हो गई है और उसकी उम्र गुज़र रही है। ऐसे में उसको एक साथी की बहुत सख़्त ज़रूरत है। इसलिए आपको उसकी इस नेचॅरल ज़रूरत को पूरा करने का कोई इंतेज़ाम करना चाहिए। उसके लिए आने वाले रिश्तों को सिर्फ़ झूठी शान और दौलत वग़ैरा के लिए मत ठुकराईए। अपनी बेटी से उसकी मर्ज़ी मालूम कीजिए और बिस्मिल्लाह कर दीजिए। अगर आपकी बेटी की उम्र ज़्यादा हो गई तो शादी की अस्ल उम्र ही निकल जाएगी और फिर शादीशुदा ज़िंदगी की लज़्ज़तें ख़त्म हो जाएंगी। यूँ भी आपको पता ही होगा कि कभी-कभी देर से शादी करने का अंजाम बहुत बुरा हो जाता है।

इमाम जवाद[अ] के एक सहाबी भी बिल्कुल आप ही की तरह सोचते थे और अपनी बेटी के लिए एक फ़रिश्ते की तलाश में थे जिसके अंदर दुनिया की सारी अच्छाईयां हों और वह आकर उनकी बेटी को जन्नत में लेकर चला जाए।

उन्होंने इमाम[अ] की ख़िदमत में एक ख़त लिखा कि में अपनी बेटी के लिए अभी तक कोई बहुत अच्छा रिश्ता तलाश नहीं कर सका हूँ जो हमारे बराबर और हमारे स्टेटस वाला हो।

इमाम ने उसके जवाब में लिखा, "जो कुछ तुमने अपनी बेटी के बारे में लिखा है मैंने उसे पढ़ा कि तुम्हें अभी तक कोई तुम्हारे जैसा और तुम्हारे बराबर का ऐसा कोई रिश्ता नहीं मिला है कि जिसके साथ तुम अपनी बेटी की शादी कर सको।

ख़ुदा तुम्हारे हाल पर रहम करे! इतनी सख़्ती मत करो क्योंकि रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया है कि जब कोई तुम्हारी औलाद के लिए रिश्ता लेकर आए और तुम उसके अख़लाक़ और दीन से मुतमइन हो तो उसके रिश्ते को क़ुबूल कर लो वरना ज़मीन पर बहुत ज़्यादा बुराईयां फैल जांएगी।"

ये बिल्कुल ठीक नहीं है कि आप कहें कि ये न सही कोई और रिश्ता आ जाएगा। हो सकता है कि कोई और रिश्ता ही न मिले या रिश्ता तो मिल जाए लेकिन उसके अंदर अख़लाक़ और ईमान न हो या झूठा या धोकेबाज़ हो। '*लड़के का ख़ानदान हमारे लायक़ नहीं है*' का क्या मतलब है?! इसका मतलब ये है कि हमारा कुफ़ो नहीं है यानी हमारे बराबर का नहीं है। जिसका मतलब ये हुआ कि ईमान और अख़लाक़ के एतेबार से इस लायक़ नहीं है कि उसके रिश्ते को क़ुबूल किया जाए।"

इमाम जाफ़र सादिक़[अ] फ़रमाते हैं, "कुफ़ो का मतलब ये है कि पाकदामन और अमानतदार हो और उसके पास इतना हो कि वह एक सादा ज़िंदगी गुज़ार सकता हो।

रसूले ख़ुदा[स] के एक सहाबी थे जोयबर जिनके पास न दौलत थी और न खूबसूरती। आपने जोयबर को एक ऊँचे ख़ानदान के शख़्स, ज़ियाद बिन वलीद के पास उसकी बेटी ज़ुल्फ़ा का रिश्ता लेकर भेज दिया। ज़ियाद बिन वलीद ने रिश्ता क़ुबूल करने में आना-कानी करना चाही तो रसूले ख़ुदा[स] ने फ़रमाया, "ऐ ज़ियाद! जोएबर मोमिन है और मोमिन, मोमिना का कुफ़ो होता है और कोई भी मुसलमान मर्द किसी भी मुसलमान औरत से शादी कर सकता है। इसलिए तुम जोएबर के साथ अपनी बेटी की शादी कर दो।" ये पूरा वाक़िआ शहीद मुतह्हरी की मशहूर किताब 'सच्ची कहानियां' में पढ़ा जा सकता है।

आख़िर में आपसे और आपके बेटों से सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूँ कि शरीअत के लिहाज़ से लड़की और उसके बाप की रज़ामंदी शादी के लिए काफ़ी है लेकिन सबसे अच्छा यही है कि पूरी फ़ैमिली की रज़ामंदी के साथ शादी हो। इसलिए आपको और उन भाईयों को जो शादी के क़ाबिल हैं, अपनी पाकदामन बहन की मुश्किलों को समझना चाहिए और उसके लिए आने वाले रिश्तों को ईमान और अख़लाक़ की कसौटी पर परखने के बाद क़ुबूल कर लेना चाहिए। अगर दौलत और दूसरी चीज़ें जो आती-जाती रहती हैं, नहीं भी हैं तो ख़ुदा मर्द की कोशिशों और उसकी मेहनत के हिसाब से उसकी रोज़ी में बरकत अता करेगा...इंशाअल्लह।

ईदे ग़दीर

18 ज़िलहिज्जा की तारीख़ थी, दोपहर का वक़्त था, सूरज की तपिश ने ग़दीरे ख़ुम के मैदान को झुलसा रखा था। लोगों की एक बड़ी तादाद जिसके बारे में 70 हज़ार से 120 हज़ार तक लिखा गया है, पैग़म्बर(स) के हुक्म से वहां पर पड़ाव डाले हुए थी, एक-एक आदमी उस दिन रूनुमा होने वाले किसी तारीख़ी वाक़ेए का इन्तिज़ार कर रहा था। गर्मी की शिद्दत का यह आलम था कि लोगों ने अपनी चादरें तह करके आधी सर पर और आधी पांव के नीचे रख रखी थीं।

इन हस्सास लम्हों में ज़ोहर की आज़ान की आवाज़ से सारा इलाक़ा गूंज उठा और लोग ज़ोहर की नमाज़ के लिए तैयार हो गए। पैग़म्बरे अकरम(स) ने लोगों के इस ठाठें मारते हुए समंदर को ज़ोहर की नमाज़ पढ़ाई। इसके बाद आप लोगों के बीच ऊँटों के कजावों से बने एक ऊँचे मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और बुलन्द आवाज़ से खुतबा देना शुरू किया और फ़रमाया, "सारी तारीफ़ें सिर्फ़ ख़ुदा के लिए है, हम उसी से मदद चाहते हैं और उसी पर ईमान रखते हैं, उसी पर भरोसा करते हैं, अपने नफ़्स और बुराईयों से महफ़ूज़ रहने के लिए उस ख़ुदा की पनाह चाहते हैं जिसके सिवा गुमराहों की हिदायत और राहनुमाई करने वाला कोई नहीं है। हम गवाही देते हैं कि जिसकी ख़ुदा वन्दे करीम हिदायत करे कोई उसे गुमराह नहीं कर सकता, हम उस ख़ुदा की गवाही देते हैं जिसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं है और मुहम्मद ख़ुदा का बंदा और उसका रसूल है। ऐ लोगो! ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि मैं जल्दी ही उसकी तरफ़ पलट जाने वाला और तुम सब से रुख़सत होने वाला हूँ। मैं ज़िम्मेदार हूं और तुम लोग भी ज़िम्मेदार हो, मेरे बारे में क्या सोचते हो?"

सारे सहाबियों ने एक आवाज़ होकर कहा, "हम गवाही देते हैं कि आपने ख़ुदा के दीन की तबलीग़ की, हमारे बारे में ख़ैर ख़्वाही की, हमें नसीहत फ़रमाई और इस राह में अपनी भरपूर कोशिशें कीं। ख़ुदा आपको इन सबका अच्छा बदला अता करे!"

मजमे पर ख़ामोशी छा गई तो पैग़म्बर(स) नें फ़रमाया, "क्या तुम लोग गवाही नहीं देते हो कि ख़ुदा के सिवा कोई ख़ुदा नहीं है और मुहम्मद ख़ुदा का बन्दा और उसका रसूल है, जन्नत, जहन्नम और मौत हक़ है। बेशक क़यामत आएगी और ख़ुदा ज़मीन में दफ़न लोगों को फिर से ज़िन्दा करेगा?"

सब ने कहा, "जी हां! हम गवाही देते हैं।"

इसके बाद पैग़म्बर(स) ने फ़रमाया, "मैं तुम लोगों के बीच दो बहुत क़ीमती चीज़ें छोड़ रहा हूं। तुम लोग उनके साथ कैसा बर्ताव करोगे?"

किसी शख़्स की आवाज़ आती है, "यह दो बहुत क़ीमती चीज़ें क्या हैं?"

पैग़म्बर(स) फ़रमाते हैं, "पहली बड़ी चीज़ ख़ुदा की किताब है कि इसका एक सिरा ख़ुदा से जुड़ा हुआ और दूसरा सिरा तुम्हारे हाथ में है। ख़ुदा की किताब को मज़बूती से पकड़े रहो ताकि गुमराह न हो और दूसरी बड़ी चीज़ मेरी इतरत और अहलेबैत(अ) हैं। ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि मेरी यह दो यादगारें क़यामत तक एक दूसरे से जुदा नहीं होंगी।"

"ऐ लोगो ख़बरदार रहना! ख़ुदा की किताब और मेरी इतरत से आगे बढ़ने की कोशिश न करना और न इनसे पीछे रहना ताकि बर्बादी से बचे रहो।"

इसके बाद पैग़म्बर(स) ने अली(अ) का हाथ पकड़ कर इतना बुलन्द किया कि सारे मजमे ने अली(अ) को पैग़म्बर के पहलू में देख लिया और उन्हें अच्छी तरह से पहचान लिया। सब समझ गए कि यहां इस चिलचिलाती धूप में जमा होने का मक़सद अली(अ) से जुड़ा हुआ कोई एलान है। सब बड़े शौक़ और बेताबी के साथ पैग़म्बर(स) की बात सुनने के इन्तिज़ार में थे।

इसके बाद पैग़म्बर(स) ने फ़रमाया, "ऐ लोगो! मोमिनों पर ख़ुद उनसे ज़्यादा हक़ कौन रखता है?"

सब ने कहा, "ख़ुदा और उसका पैग़म्बर(स) ज़्यादा बेहतर जानते हैं।"

पैग़म्बर(स), "ख़ुदा मेरा मौला है और मैं मोमिनों का मौला और उन पर ख़ुद उनसे ज़्यादा हक़ रखता हूं। ऐ लोगो! जिस-जिसका मैं मौला हूँ उस-उसके अली(अ) भी मौला हैं।" पैग़म्बर(स) ने इस बात को तीन बार दोहराया।

उसके बाद फ़रमाया, "परवरदिगार! उस-उसको दोस्त रखना जो अली(अ) को दोस्त रखे और उस-उसको दुश्मन रखना जो अली(अ) से दुश्मनी करे। ख़ुदाया! अली(अ) के दोस्तों की मदद फ़रमा और उनके दुश्मनों को ज़लीलो-ख़्वार फ़रमा..."

उसके बाद पैग़म्बर(स) ने फ़रमाया, "इस मजमे में जो-जो लोग हाज़िर हैं उन सबके लिए ज़रूरी है कि इस ख़बर को उन सब लागों तक पहुंचा दें जो इस वक़्त यहां नहीं हैं।"

अभी ग़दीर का ये मजमा अपनी जगह पर वैसे ही बाक़ी था कि जिब्रील नाज़िल हुए और पैग़म्बर(स) को ख़ुशख़बरी दी कि ख़ुदा वन्दे करीम फ़रमाता है, "मैंने आज तुम्हारे लिए दीन को पूरा कर दिया और अपनी नेमतों को तुम पर तमाम कर दिया और तुम्हारे लिए दीने इस्लाम को पसंदीदा बना दिया है।"[1]

ये ख़बर सुनते ही पैग़म्बरे इस्लाम(स) ने तकबीर की आवाज़ बुलन्द करते हुए फ़रमाया, "मैं ख़ुदा का शुक्रगुज़ार हूं कि उसने अपने दीन को पूरा कर दिया और अपनी नेमत तमाम कर दी और मेरी रिसालत और मेरे बाद अली(अ) की विलायत पर ख़ुश हुआ।"

पैग़म्बर(स) मिम्बर से नीचे तशरीफ़ लाए, आपके सहाबी एक-एक करके आगे बढ़े और अली(अ) को मुबारकबाद देने लगे और उन्हें अपने और तमाम मोमिनीनो-मोमिनात का मौला कहा।

इस मौक़े पर रसूले ख़ुदा(स) के शायर, हस्सान बिन साबित उठे और उन्होंने इस वाक़ेए को एक नज़्म में बयान करके हमेशा-हमेशा के लिए तारीख़ी बना दिया।

ख़ुदा का हकीमाना इरादा यही था कि ग़दीर का तारीख़ी वाक़ेआ हर ज़माने में एक ज़िन्दा तारीख़ की सूरत में बाक़ी रहे ताकि हर ज़माने के लोग उसकी तरफ़ खिंच सकें और हर ज़माने में तफ़सीर, हदीस, अक़ाएद और तारीख़ पर क़लम उठाने वाले इस अज़ीम वाक़ेए पर ज़रूर लिखें और मज़हबी तक़रीरों में वाज़ और नसीहत करने वाले इसे बयान करते हुए इसको इमाम(अ) के फ़ज़ाएल में शुमार करें। अदीब और शायर भी इस वाक़ेए को अपनी नज़्मों में मौला के लिए अपने जज़बात अलग-अलग ज़बानों में बेहतरीन अश्आर की सूरत में पेश करें।

बेशक इस वाक़ेए की हमेशा-हमेशा के लिए ज़िन्दा हो जाने की एक वजह यह भी है कि क़ुरआने मजीद में इस वाक़ेए से जुड़ी दो आयतें मौजूद हैं। अब चूंकि क़ुरआन भी हमेशा-हमेशा ज़िन्दा रहने वाली किताब है इसलिए यह वाक़ेआ भी कभी तारीख़ के पन्नों में छिपने वाला नहीं है।

तारीख़ पर एक हल्की सी निगाह डालने से साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि 18 ज़िलहिज्ज का दिन मुसलमानों के बीच ईदे ग़दीर के तौर पर मशहूर रहा है। इस दिन जश्न मनाने का सिलसिला उस दिन खुद पैग़म्बर(स) के अमल से शुरू हुआ है क्योंकि उस दिन पैग़म्बरे अकरम(स) ने मुहाजिरों और अंसार सभी को यहां तक कि अपनी बीवियों को भी हुक्म दिया था कि अली(अ) के पास जाकर उन्हें इस अज़ीम फ़ज़ीलत पर मुबारकबाद दें।

1-माएदा/3

शादी में मुश्किलें, रुकावटें और उनका हल

■ हुज्जतुल इस्लाम अली अकबर मज़ाहेरी

जब किसी जवान से कहा जाता है कि अब शादी कर लो तो वह फ़ौरन शादी की मुश्किलों और रुकावटों को गिनाने लगता है और पैसे को सबसे पहली मुश्किल बताता है। उसके बाद ही दूसरी मुश्किलों को बयान करता है।

इसमें कोई शक नहीं है कि शादी के लिए अब बेशुमार मुश्किलें पैदा हो गई हैं जिन्हें नज़रअंदाज़ भी नहीं किया जा सकता। यहां हम इन मुश्किलों के बारे में बात करेंगे और इनका हल भी पेश करने की कोशिश करेंगे।

मुश्किलें सच्ची हैं या हमारी बनाई हुई

अभी तक हमारा समाज अस्ली इस्लाम से बहुत दूर है। अभी तक बहुत से मसलों में इस्लाम के एहकाम पर अमल नहीं हो सका है और इस्लाम जिहालत-ख़ुराफ़ात और जाहिलाना रीती- रिवाज, हमारी अपनी मर्ज़ी और ख़्वाहिशों के पर्दे ही के पीछे छुपा हुआ है जिसकी वजह से समाज उसकी टीचिंग्स से फ़ायदा नहीं उठा पा रहा है।

अगर शादियों में इस्लाम को मद्देनज़र रखा जाता तो ज़्यादातर या सारी मुश्किलें ख़त्म हो जातीं लेकिन कौन सा इस्लाम?!

पैग़म्बर[ﷺ] ने एक ही बैठक में थोड़े से वक़्त में शादी के सारे मरहलों जैसे रिश्ता, मेहर और निकाह वग़ैरा को पूरा करके मियां-बीवी का हाथ एक दूसरे के हाथ में देकर उन्हें उनके घर भेज दिया था। यह कोई अफ़साना नहीं है बल्कि एक हक़ीक़त है। आज भी वही इस्लाम है और उसकी वही ताक़त और ख़ुसूसियत है लेकिन हम सच्चे मुसलमान नहीं हैं। जो बुराई है वह हमारे अंदर है, इस्लाम में कोई बुराई नहीं है।

हल क्या है?

हल दो तरह से तलाश किया जा सकता है। एक के लिए लम्बा वक़्त और दूसरे के लिए थोड़े वक़्त की ज़रूरत है। लम्बे वक़्त वाला तरीक़ा क़ौम के लीडरों और हुकूमत के ज़िम्मेदारों से जुड़ा है, उन्हें पूरे समाज की बेहतरी और भलाई के लिए ग़ौर करना चाहिए और थोड़े वक़्त वाला तरीक़ा ख़ुद नौजवानों और उनके पैरेंटस से जुड़ा है। उन्हें फ़ौरी तौर पर इसका हल तलाश करना चाहिए कि इन हालात में क्या किया जा सकता है?

फ़िलहाल लम्बे वक़्त वाले तरीक़े पर हम बात नहीं कर रहे हैं, इस वक़्त हमारी बहस थोड़े वक़्त वाले तरीक़े से है। असली मुश्किल ये है :-

पैसे की मुश्किल

यह मुश्किल ख़ुद हमारे समाज की पैदा की हुई है वरना शादी की मुश्किलों से इसका कोई ताअल्लुक़ नहीं है। अगर हमारी ज़िंदगी इस्लाम और इन्सानी नेचर के मुताबिक़ होती तो यह मुश्किल नहीं होती। ऐसे जवान बहुत कम पाए जाते जो इसकी वजह से शादी न कर पाते। बहरहाल इस वक़्त तो समाज में यह मुश्किल है, इसलिए इसका हल तलाश करना ज़रूरी है।

हल

ख़ुदाई मदद

ख़ुदा और इस्लाम के पेशवाओं ने इस सिलसिले में बहुत सी ख़ुशख़बरियां दी हैं और वादे किए हैं जो जवानों को पुरउम्मीद और मुतमईन बना सकते हैं।

इन ख़ुशख़बरियों और वादों पर ईमान लाना हमारे लिए वाजिब है क्योंकि उनका वादा ग़लत नहीं हो सकता। जो नौजवान शादी करना चाहते हैं और माली मुश्किल को शादी में रुकावट समझते हैं उनके लिए यह वादा बेहतरीन मददगार और उम्मीद बढ़ाने वाला है उनके ज़रिए इंसान के अंदर हिम्मत पैदा होती है। उनमें से कुछ वादे यह हैं :-

ख़ुदा का वादा

"अपने ग़ैर शादी शुदा आज़ाद लोगों और अपने ग़ुलामों और कनीज़ों में से बासलाहियत लोगों के निकाह का इंतेज़ाम करो। अगर वह फ़क़ीर भी होंगे तो ख़ुदा अपने फ़ज़्ल और करम से उन्हें मालदार बना देगा कि ख़ुदा बड़ी गुंजाइश वाला और इल्म वाला है।।" [1]

यह ख़ुदा का वादा और ज़मानत है, सामने की

बात है कि ख़ुदा से ज़्यादा किसकी ज़मानत पर यक़ीन किया जा सकता है?

इस वादे पर यक़ीन कीजिए। इंशाअल्लाह अच्छा नतीजा सामने आएगा। मैंने अपनी आंखों से इसके कुछ नमूने देखे हैं, मेरे 90% दोस्त शादी से पहले मालदार नहीं थे, शादी के बाद घर-बार वाले बने हैं। ऐसे दोस्त बहुत कम हैं जो शादी के वक़्त मालदार थे, मैं ऐसे बहुत से दोस्तों के नाम गिनवा सकता हूं जिन्होंने उस वक़्त शादी की थी जब न उनके पास पैसा था और न घर लेकिन शादी के बाद उन्होंने घर भी बना लिया और माली हालात भी अच्छे हो गए मगर जिन लोगों ने शादी से पहले घर बनाया और पैसे जमा किए और उसके बाद शादी की ऐसे लोग बहुत कम हैं। दो तीन ही लोगों के नाम गिनवा सकता हूं और दिलचस्प बात यह है कि यही दो तीन लोग कि जिन्होंने घर और पैसे की वजह से देर से शादी की थी, शादी शुदा ज़िंदगी में ख़ुशी न देख सके क्योंकि जब वह घर और पैसा जमा करने में कामयाब हुए उस वक़्त नौजवानी, जवानी, शादी की बहार का ज़माना गुज़र चुका था और ख़िज़ां का वक़्त आ गया था।

इस्लाम के पेशवाओं की ख़ुशख़बरियाँ

पैग़म्बरे अकरम[स०] ग़ैर शादी शुदा नौजवानों की ख़ुदाई मदद के सिलसिले में इस तरह फ़रमाते हैं, "अपने ग़ैर शादी शुदा लोगों की शादी करो क्योंकि ख़ुदा वंदे आलम शादी की वजह से उनके अख़लाक़ को संवारता है और उनके रिज़्क में बरकत देता है।" [2]

आप ही का इरशाद है, "जो शख़्स ग़रीबी के डर से शादी नहीं करता है वह ख़ुदा से बदगुमान है क्योंकि ख़ुदा वंदे आलम फ़रमाता है कि अगर ग़रीब हो तो मैं अपने फ़ज़्लो करम से तुम्हें बेनियाज़ कर दूंगा।" [3]

यह भी फ़रमाया, "शादी करो क्योंकि इससे रिज़्क ज़्यादा होता है।" [4]

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] का इरशाद है, "रोज़ी-रोटी बीवी बच्चों के साथ है।" [5]

कुछ मिसालें

एक ग़ैर शादी शुदा बहुत ही ग़रीब जवान रसूले ख़ुदा[स०] की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी ग़रीबी का शिकवा करके आप[स०] से कहा कि आप ही कोई रास्ता बताइए कि जिससे मेरी ग़रीबी दूर हो जाए?"

आप[स०] ने फ़रमाया कि शादी कर लो!

जवान को बहुत ताअज्जुब हुआ और अपने दिल में सोचने लगा कि मैं तो अपने ही ख़र्चे पूरे नहीं कर पाता हूं, शादी करके बीवी के ख़र्चे की कैसे ज़िम्मेदारी ले लूं?!

लेकिन चूंकि पैग़म्बर[स०] की बात पर यक़ीन था, इसलिए कर ली। धीरे-धीरे उसकी ज़िंदगी में ख़ुशहाली आ गई और ग़रीबी से छुटकारा मिल गया।

इन ख़ुशख़बरियों और सच्चे वादों पर गहरी तवज्जोह से इंसान के दिल में ख़ुदा की तरफ़ से मदद पहुंचने का यक़ीन पैदा होता है, इंसान की हिम्मत बंधती है और यह इस बात का ज़रिया होती है कि ग़ैर शादी शुदा जवान ख़ुदा पर भरोसा करके शादी में पहल करें और मुश्किलों और रुकावटों से डरें नहीं।

ज़ाहिर है कि जब इंसान ख़ुदा को राज़ी करने के लिए उसके हुक्म पर अमल और रूहानी-जिस्मानी बीमारियों से महफ़ूज़ रहने और कमाल व बुलन्दी हासिल करने के लिए शादी करता है तो ख़ुदा की रहमत उसके साथ होती है। ख़ुदा की मदद उस तक पहुंचती है और उसके पाक मक़सद में मददगार होती है।

नए मौक़े

शादी की वजह से इंसान के सामने नए-नए मौक़े आते हैं जो शादी से पहले नहीं थे क्योंकि इंसान शादी की वजह से ज़िम्मेदारी का ज़्यादा एहसास करता है, ख़ुद को नई ज़िंदगी चलाने और अपनी फ़ैमिली की इज़्ज़त-आबरू और उसके ख़र्च का ज़िम्मेदार समझता है। इस वजह से वह अपनी उन तमाम छुपी हुई सलाहियतों को सामने लाता है जिनका उस वक़्त तक कहीं पता नहीं था। शादी से पहले जो सलाहियतें उसके अंदर सोई हुई थीं वह जाग जाती हैं, अपने अंदर नई ताक़तों को लिए हुए नई शख़्सियत देखता है।

दूसरी तरफ़ जिंसी दबाव, तंहाई का जंजाल, एहसासे कमतरी की उलझनें वग़ैरा, शादी करने और लाईफ़ पार्टनर के आने से ये सब कुछ ख़त्म हो जाता है और इंसान के अंदर ज़ौक़-शौक़ और तरक़्क़ी करने का जज़्बा बढ़ जाता है और वह कामयाबी की तरफ़ बढ़ने लगता है।

हमने ऐसे बहुत से जवानों को देखा है जिन्होंने अच्छी और नेक बीवी से शादी करने की बदौलत अपनी नई शख़्सियत बनाई है और अब उनके सारे कामों में बेपनाह तेज़ी आ गई है।

इसी तरह नौकरी और बिज़नेस में इंसान को नए-नए मौक़े मिलते हैं और जवान ज़्यादा से ज़्यादा पैसा कमाने की राहें तलाश कर लेता है। नौकरी और बिज़नेस की वजह से बहादुर और हिम्मत वाला हो जाता है, इस तरह उसकी आमदनी ज़्यादा हो जाती है और एक के बाद एक माली मुश्किलें दूर हो जाती हैं। इसी तरह हर कामयाबी के बाद दूसरी बहुत सी कामयाबियां भी मिलती रहती हैं।

सहूलतें

बहुत से आफ़िसों, कारख़ानों और फैक्ट्रियों में शादी शुदा मुलाज़मीन को सहूलतें दी जाती हैं जबकि ग़ैर शादी शुदा को ऐसी कोई चीज़ नहीं दी जाती जिससे उनकी माली हालत काफ़ी हद तक संवर जाती है।

दूसरी मुश्किल

पढ़ाई जारी रखना

यह बहुत ख़ुशी की बात है कि आज के ज़्यादातर जवान पढ़ाई जारी रखना चाहते हैं और आम एजुकेशन को काफ़ी नहीं समझते हैं लेकिन इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि इस अच्छे

काम के कुछ निगेटिव पहलू भी हैं।

अस्ल मुश्किल

इल्म की ऊंची मन्ज़िलों तक पहुंचने के लिए ज़रूरी है कि लड़का-लड़की 25 साल या इससे भी ज़्यादा उम्र तक पढ़ते रहें। इसी वजह से वह शादी को एजुकेशन में रुकावट समझते हैं।

मुश्किल पर एक नज़र

शादी के सिलसिले में दूसरी रुकावटों और मुश्किलों की तरह यह मुश्किल भी सही नहीं है

> *जब इंसान ख़ुदा को राज़ी करने के लिए उसके हुक्म पर अमल करता है और रूहानी-जिस्मानी बीमारियों से बचे रहने और बुलन्दियां हासिल करने के लिए शादी करता है तो ख़ुदा की रहमत उसके साथ होती है, ख़ुदा की मदद उस तक पहुंचती है और उसके इस पाक मक़सद में मददगार होती है।*

बल्कि ये हमारी अपनी बनाई हुई है। इसलिए इसे प्रोग्रामिंग करके दूर किया जा सकता है बल्कि शादी को इल्मी तरक़्क़ी का ज़ीना बनाया जा सकता है।

मर्द-औरत एक दूसरे को पूरा करने का ज़रिया हैं और हर कामयाब मर्द के साथ एक अच्छी औरत और हर कामयाब औरत के साथ एक अच्छा मर्द रहा है। यही चीज़ पढ़ाई जारी रखने के लिए भी फ़ायदेमंद है। बहुत से स्कालर्स अपनी बीवी की मदद से ही ऊँचे-ऊँचे मुक़ाम पर पहुंचे हैं।

जनाब फ़ातिमा[अ०] की रुख़सती के बाद पैग़म्बरे अकरम[स०] बेटी और दामाद से मुलाक़ात के लिए गए और उन्हें मुबारकबाद पेश की। फिर हज़रत अली[अ०] से फ़रमाया कि अपनी बीवी को कैसा पाया? दामाद ने सर झुका कर कहा कि ख़ुदा का हुक्म मानने में बेहतरीन मददगार पाया। उसके बाद यही सवाल जनाबे फ़ातिमा[अ०] से किया और उन्होंने भी वही जवाब दिया जो शौहर ने दिया था।

इल्म हासिल करना ख़ुदा की बेहतरीन इबादत और इताअत है। इस सिलसिले में दोनों ही एक दूसरे की मदद कर सकते हैं और एक दूसरे को सहारा दे सकते हैं।

शादी की वजह से मियां बीवी दोनों ही में मेच्योरिटी आती है और यह चीज़ उनकी ऐजुकेशन के लिए बहुत फ़ायदेमंद है।

जो स्टूडेंट ये कहते हैं कि डिग्री मिलने तक सब्र करना चाहिए और फिर पैसा कमाकर अपनी ज़िंदगी को संवारना चाहिए उसके बाद शादी रचाना चाहिए, उन्हें इस अहम बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि शादी में देरी करने से मुमकिन है कि वह नफ़्सियाती और जिस्मानी मर्ज़ का शिकार हो जाएं और ज़्यादा वक़्त और उम्र गुज़रने के बाद वह सेहत न रहे जिस पर एक कामयाब ज़िंदगी की बुनियाद रखी जा सके।

इस मुश्किल के हल के भी दो तरीक़े हैं : एक कम वक़्त वाला और दूसरा ज़्यादा वक़्त वाला कि जिसका ताअल्लुक़ क़ौम के लीडरों और हुकूमत के ज़िम्मेदारों से है, इस वक़्त हम इसके बारे में बात नहीं करेंगे बल्कि कम वक़्त वाले को शुरू करते हैं जो कि ख़ुद स्टूडेंट और मां बाप से रिलेटेड है।

ज़ेहन से निकाल दें कि शादी एजुकेशन में रुकावट है

कोई भी काम ग़ौरो-फ़िक्र के बाद सामने आता है। अगर हम यही तय कर लेंगे कि पढ़ाई के साथ शादी नहीं की जा सकती तो यही हमारी बुनियादी मुश्किल है।

हर चीज़ से पहले हमें इस चीज़ को ज़ेहन से निकालना चाहिए। अगर हमनें इसे ज़ेहन से निकाल दिया तो फ़िर हमारे ज़ेहन में सही हल आ जाएगा और इस मुश्किल के ख़त्म होने का रास्ता खुल जाएगा।

इस बारे में कोई सही दलील नहीं है कि एजुकेशन को जारी रखने में शादी रुकावट है, बल्कि इसका उलटा सही है। अगर अच्छी लड़की से शादी हो जाए और दोनों कुफ़ो हों तो ये एजुकेशन को जारी रखने में बेहतरीन मदद होगी और मर्द बीवी की मदद से इल्म की ऊंची मज़िलों तक पहुंच जाएगा। यह चीज़ हमने कुछ दीनी और कुछ दूसरे उलूम के स्टूडेंट की ज़िंदगी में देखी है।

हां, अगर स्टूडेंट का लाइफ़-पार्टनर (लड़का हो या लड़की, किसी भी फ़ील्ड से जुड़े हों) उसके मिज़ाज का न होगा और दोनों की सोच और नज़रिए एक दूसरे से अलग होंगे तो यक़ीनन मुश्किलें खड़ी होंगी। इससे इंकार नहीं किया जा सकता। ये चीज़ ऐसी है जिसको लाईफ़ पार्टनर के चुनने में ग़ौर व फ़िक्र और कुछ उसूलों के ज़रिए हल किया जा सकता है।

शरई और क़ानूनी मंगनी

स्टूडेंट लड़का-लड़की सादा और कम ख़र्च के ज़रिए मंगनी और निकाह कर सकते हैं और शरई तौर पर एक दूसरे के लाईफ़ पार्टनर बन सकते हैं और शादी में देरी कर सकते हैं, एक दूसरे के पास आना-जाना, उठना-बैठना रखें और पढ़ाई जारी रखें और मुनासिब वक़्त पर रुख़सती और शादी कर लें। इस तरह वह कुंवारेपन के ख़तरों और नुक़्सानों से बचे रहेंगे और शादी शुदा ज़िंदगी से

सुकून भी हासिल करेंगे।

रूख़सती से पहले निकाह के ख़र्चे में फ़ुज़ूलख़र्ची करके लड़के-लड़की की परेशानी नहीं बढ़ाना चाहिएं। अगर निकाह का प्रोग्राम करना ही है तो उसे ज़्यादा ख़र्च से बचते हुए सादे तौर पर किया जा सकता है।

पैरेंटस को भी नौजवानों की मदद करना चाहिए। उनकी ज़िंदगी को डगर पर लगाने की कोशिश करना चाहिए और उनके कंधों पर ख़र्चों का बोझ नहीं लादना चाहिए और रीती-रिवाज के नाम पर उनकी राह में रुकावट नहीं ख़ड़ी करना चाहिए।

लड़के-लड़कियों के लिए पैरेंटस की मदद

मां बाप स्टूडेंट की शादी में बेहतरीन रोल अदा कर सकते हैं, वह इस तरह कि बच्चों की मदद करें ताकि वह अपनी एजुकेशन भी जारी रखें और शादी भी कर लें ताकि उन्हें शादी शुदा ज़िंदगी का सुकून भी मिल जाए और कुंवारेपन के नुक़्सानों से भी बचे रहें। यह काम इस तरह हो सकता है कि लड़के-लड़की के पैरेंटस संजीदगी से सोचें कि हम इस वक़्त इस लड़के या लड़की के ख़र्चे बर्दाश्त कर रहे हैं क्या हर्ज है कि हम इसकी शादी करके कुछ साल और उसके ख़र्चों को बरदाशत कर लें ताकि वह अपनी पढ़ाई भी पूरी कर ले और अपने पैरों पर ख़ड़ा होकर अपनी ज़िंदगी भी गुज़ार ले। अगर वह कुछ साल तक कुंवारे रहेंगे तब भी उनके ख़र्चों को वही बरदाशत करेंगे। बेहतर है कि शादी कर दें और कुछ साल तक इसी तरह ख़र्चों को बरदाशत करते रहें। यह शादी न होने और तन्हा रहने से बेहतर है। इस दौरान हमारे बच्चे 'शादी की बहार' से फ़ायदा उठाएंगे वरना ख़ुदा न-ख़ास्ता रूहानी और जिस्मानी मर्ज़ में फ़ंस जाएंगे।

अगर पैरेंटस इस तरह से सोचेंगे तो ज़रूर सही नतीजे पर पहुंच जाएंगे। लड़का-लड़की जिस मुश्किल और बुराई में फ़ंसते हैं, सीधे तौर पर मां-बाप भी उसके ज़िम्मेदार होते हैं। इसी तरह उनकी कामयाबी में भी पैरेंटस की सरबुलन्दी है। कितना अच्छा हो कि वह ख़ुदा की रिज़ा और बच्चों की कामयाबी और तरक़्क़ी और अपनी सरबुलंदी के लिए इस सिलसिले में बच्चों की मदद करें।

मां-बाप अपने बड़े लड़के-लड़कियों के साथ बैठें, आपस में बातचीत करें, एक प्रोग्राम बनाएं और एक दूसरे की मदद से अपने बच्चों के लिए कामयाब ज़िंदगी का रास्ता खोलें ताकि वह एक दूसरे के साथ कामयाब ज़िंदगी गुज़ार सकें और अपनी एजुकेशन को भी जारी रख सकें।

इस नेक काम पर ख़ुदा ने बहुत ज़्यादा सवाब का वादा किया है।

पढ़ाई के ज़माने में शादी होने से एक मुश्किल बच्चे की पैदाईश भी है

इस मुश्किल का आसान हल यह है कि पढ़ाई के ख़त्म होने तक दोनों तय कर लें कि बच्चे की पैदाईश को रोके रखें क्योंकि बच्चे पैदा न करने के बहुत से जाएज़ और सही तरीक़े मौजूद हैं।

यह भी ऐसी मुश्किल नहीं है जो पढ़ाई के ज़माने में शादी के लिए रुकावट हो।

पैरेंटस से गुज़ारिश

आज कल जब भी शादी की बात आती है तो पैरेंटस ख़ास तौर से लड़की के मां-बाप कहते हैं अभी बच्ची है, पढ़ना चाहती है, शादी के क़ाबिल नहीं है।

ये बात अक़्ल और इस्लाम के सरासर ख़िलाफ़ है। यहां तक कि आपकी औलाद की सोच और नज़रिए के भी ख़िलाफ़ है। क्या आप अपनी जवानी का ज़माना भूल गए हैं?! कभी आप भी इस उम्र से नहीं गुज़रे थे, क्या आप लाईफ़ पार्टनर अपनाना नहीं चाहते थे?! आपको वह ज़माना याद होगा, उसे नहीं भूलना चाहिए, तो फिर इन जवानों की शादी की क्यों मुख़ालिफ़त करते हैं? आप जानते हैं कि जो नुक़्सान उन्हें पहुंचेगा वह सीधे आप पर भी असर डालेगा? होशियार रहिए! आपके बच्चे ख़ासकर लड़कियां आपके सामने ज़बान खोलती हुए शरमाती हैं। साफ़ तौर पर नहीं कह सकतीं कि मैं शादी करना चाहती हूं। मुमकिन है कि ज़ाहिरी तौर पर वह 'नहीं-नहीं' कहें लेकिन उनके अंदर एक तूफ़ान बरपा हो। यह आपका एहतेराम और इज़्ज़त बाक़ी रखे हुए हैं, कुछ नहीं कहते लेकिन उन्हें सख़्तियों और बहानेबाज़ियों से तकलीफ़ होती है। इससे उनके दिलों में आपकी तरफ़ से नफ़रत पैदा हो सकती है। उनकी मदद कीजिए ताकि वह जवानी के ज़माने में शादी कर लें। ज़िंदगी की बहार से भी फ़ायदा उठाएं और एजुकेशन को भी जारी रखें।

1-सूरए नूर/32, 2-नवादिर रावन्दी/36, 3-वसाएल,3/5, 4-वसाएल, 3/7, 5-नूरुस सक़लैन, 3/599

क़ुरआन में शादी का मक़सद

शादी क्या है?

शादी मर्द और औरत की बीच एक ऐसा रिलेशन है जो एक दूसरे को कुछ अख़लाक़ी और क़ानूनी ज़िम्मेदारियों का पाबंद बनाता है और अगर इन ज़िम्मेदारियों को पूरा न किया जाए तो बहुत सी मुश्किलें पैदा हो सकती हैं।

शादी का मक़सद और उसके फ़ाएदे

क़ुरआन की बहुत सी आयतों में शादी के मक़सद और उसके फ़ाएदों के बारे में ज़िक्र हुआ है जिससे इस टॉपिक की अहमियत का अंदाज़ा आसानी से हो सकता है।

1- नसब की हिफ़ाज़त

अगर शादी और उसके उसूलों का ख़्याल रखा जाए तो इससे इंसान के नसब को महफ़ूज़ रखा जा सकता है। इस्लाम में शादी के अलावा भी नसब की हिफ़ाज़त के लिए बहुत से एहकाम बताए गए हैं जैसे शौहर की मौत के बाद बीवी का 4 महीने 10 दिन तक इद्दत में रहना, तलाक़ के बाद दूसरी शादी करने के लिए 3 बार पाक होने का इन्तिज़ार करना, प्रेगनेंट औरत का तलाक़ के बाद दूसरी शादी के लिए डिलेवरी तक इन्तिज़ार करना वग़ैरा। इसी तरह ज़िना करने और शादी शुदा औरत से शादी करने को इस्लाम ने हराम बताया है ताकि नसब महफ़ूज़ रह सके।

2- सुकून और इत्मिनान

जिस्मानी ज़रूरत से ज़्यादा इंसान की रूह को सुकून की ज़रूरत होती है। एक अच्छी बीवी या अच्छा शौहर ज़ेहनी सुकून का बहुत अच्छा सोर्स होते हैं। क़ुरआन ने इस चीज़ को इस तरह बयान किया है, "उसकी निशानियों में से ये भी है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम्हीं में से पैदा किया है ताकि तुम्हें उससे सुकून हासिल हो और फिर तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत पैदा की है। इसमें ग़ौर करने वालों के लिए बहुत सी निशानियां हैं।" [1]

इसी तरह क़ुरआन ने शौहर को बीवी और बीवी को शौहर का लिबास बताया है। कुछ मुफ़स्सिरों का कहना है कि यह भी उसी सुकून की तरफ़ इशारा है।

3- इंसानी नस्ल की हिफ़ाज़त

क़ुरआन ने शादी को इंसानी नस्ल की हिफ़ाज़त का ज़रिया भी बताया है। नाजाएज़ रिलेशंस के हराम होने की एक वजह ये भी है कि इन रिलेशंस से बचके पाकीज़ा इंसानी नस्ल को आगे बढ़ाया जा सकता है क्योंकि नाजाएज़ ताअल्लुक़ात के फैलने से इंसान निकाह करने से बचता है और शादी, बीवी-बच्चों का ख़र्च, मकान और ज़िंदगी की दूसरी ज़िम्मेदारियां उठाने के लिए तैयार नहीं होता जैसा कि इस वक़्त यूरोप, अमेरिका और दुनिया के बहुत से दूसरे मुल्क इस मुश्किल में बुरी तरह फंसे हुए हैं।

4- नेक औलाद

घर में नेक औलाद का होना और ऐसी औलाद का माँ-बाप बनना हर इंसान की आरज़ू होती है। क़ुरआन ने भी माल और औलाद को दुनियावी ज़िंदगी की ज़ीनत बताया है और दूसरी आयतों में कई तरह से नेक औलाद का ज़िक्र किया है।

5- मुहब्बत और रहमत

शादी का एक ख़ूबसूरत रिज़ल्ट वह मुहब्बत भी होती है जो मियां-बीवी के बीच पैदा हो जाती है। क़ुरआन कहता है कि यह मुहब्बत और उलफ़त अल्लाह ही ने तुम दोनों के बीच पैदा की है।

6- जिस्मानी ज़रूरत का पूरा होना

अल्लाह ने इंसान के जिस्म में कुछ ऐसी ज़रूरतें रखी हैं जिनका पूरा होना बहुत ज़रूरी है लेकिन उन्हें पूरा करने का जाएज़ और सही तरीक़ा सिर्फ़ शादी है। क़ुरआन ने मोमिनीन की क्वालिटीज़ बयान करते हुए उनकी एक सिफ़त यह बताई है कि वह अपनी पाकीज़गी और पाकदामनी की हिफ़ाज़त करते हैं। [2]

7- गुनाहों से दूरी

शादी का एक असर यह भी होता है कि इंसान शादी के ज़रिए बहुत से गुनाहों से बच जाता है। क़ुरआन ने शादी शुदा मर्द-औरत को 'मोहसिन' और 'मोहसिना' का नाम दिया है। 'हिस्न' क़िले को कहते हैं जिससे यह दोनों लफ़्ज़ 'मोहसिन' और 'मोहसिना' बने हैं। शादी के बाद चूंकि इंसान एक ऐसे मज़बूत क़िले में चला जाता है जिसके अंदर उस पर शैतान के हमलों का असर बहुत कम हो जाता है और वह अपनी पाकदामनी की हिफ़ाज़त आसानी से कर लेता है। इसीलिए शादी शुदा लोगों को क़ुरआन ने मोहसिन और मोहसिना कहा है।

यही वजह है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने भी फ़रमाया है कि जिसने शादी की उसने अपने आधे दीन को महफ़ूज़ कर लिया। शादी के बाद इंसान पर जो ज़िम्मेदारियां आती हैं उनकी वजह से भी इंसान बहुत से गुनाहों से बच जाता है।

8- रिज़्क़ में बरकत

आमतौर पर शादी न करने का एक बहाना ये पेश किया जाता है कि अभी तो कोई जॉब, कारोबार या नौकरी भी नहीं है लेकिन क़ुरआन जवानों को यह उम्मीद दिलाता है बल्कि वादा करता है कि शादी करो, अल्लाह तुम्हें अपने फ़ज़्लो करम से बेनियाज़ कर देगा। [3] इमाम सादिक़ अ० फ़रमाते हैं, अगर कोई भूख के डर से शादी न करे तो वह दरहक़ीक़त अल्लाह के बारे में बदगुमानी करता है।

1-सूरए रूम/21, मोमिनून/5, 3-सूरए नूर/32

मियां बीवी के झगड़ों की बुनियादें

■ सज्जाद हैदर

शादी के बाद कुछ मियां-बीवी की ज़िंदगी में बहुत सी मुश्किलें पेश आती हैं जिनकी वजह से उनकी ज़िंदगी धीरे-धीरे बिखरने लगती है और आख़िरकार बिल्कुल ढह जाती है। इन मुश्किलों में कुछ चीज़ें मियां या बीवी में से किसी एक के अंदर पाई जाने वाली वह अख़लाक़ी और साइकॉलोजिकल बीमारियां हैं जिनका असर दोनों की ज़िंदगयों पर पड़ता है और फिर साथ रहना उनके लिए अजीरन बन जाता है।

हम यहां इन्हीं अख़लाक़ी और साइकॉलोजिकल बीमारियों में से कुछ की तरफ़ इशारा कर रहे हैं ताकि हम एक अच्छी ज़िंदगी जीने के लिए इन बीमारियों से बचने की कोशिश करते रहें:

1- कंजूसी

अगर मियां-बीवी दोनों कंजूस हैं तो उनकी ज़िंदगी में कोई ख़ास मुश्किल पेश नहीं आएगी बल्कि वह एक दूसरे के मिज़ाज को समझते हुए आराम से अपनी शादीशुदा ज़िंदगी गुज़ार लेंगे। यह और बात है कि उनकी ज़िंदगी उस तरह के ऐशो-आराम में तो नहीं गुज़रेगी जिस तरह दोनों के कंजूसी छोड़ने पर गुज़र सकती है। लेकिन अगर मियां या बीवी दोनों में से कोई एक कंजूस है तो उस एक की वजह से न सिर्फ़ ये कि दोनों ज़ेहनी मुश्किलों का शिकार होंगे बल्कि उनकी ज़िंदगी बड़ी सख़्ती में गुज़रेगी क्योंकि किसी एक का कंजूस होना दूसरे के बहुत से कामों में रूकावटें पैदा करता रहेगा।

2- गुस्सा

गुस्सा एक ऐसी आग है जो मियां-बीवी में से किसी के अंदर भी हो, दोनों की ज़िंदगी को जला कर राख कर सकता है क्योंकि इसकी वजह से ऐसे बहुत से काम हो जाते हैं जो दूसरे को नाराज़ करते और उसका दिल तोड़ देते हैं। गुस्से की वजह से मियां बीवी के बीच बात-बात पर तू-तू, मैं-मैं, छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा, एक दसरे की तौहीन और अक्सर बेजा नाराज़गी पैदा हो जाती है। ऐसे मौक़े पर शैतान उन दोनों के बीच आ जाता है और इस आग को और भड़काने की कोशिश करने लगता है। इसलिए जब भी दोनों में से किसी एक को गुस्सा आए तो दूसरा उस गुस्से को ठंडा करने और कम करने की कोशिश करे।

3- दोरुख़ी

वह मियां-बीवी जो दो चेहरों के साथ एक दूसरे से रूबरू होते हैं, कभी कामयाब ज़िंदगी नहीं बसर कर सकते क्योंकि जब तक उनका ज़ाहिर और बातिन एक नहीं होगा उनकी ज़िंदगी में ख़ुशियों का रंग नहीं भर सकता। जिस ज़िंदगी में सच्चाई और भरोसे की फ़िजा नहीं होती वहां ख़ुशियों के फूल नहीं खिल सकते बल्कि हमेशा बेचैनी और शक के कांटे चुभन बनते रहते हैं।

4- झूठ

ये एक बहुत ख़तरनाक बीमारी है जो ज़िंदगी में पेश आने वाली तमाम मुश्किलों की जड़ है। इस बीमारी का शिकार इंसान हर काम और हर बात को अपने फ़ाएदे और अपने बचाव के लिए इस तरह बदलता है जैसे सामने वाला बेवक़ूफ़ हो। जब यही काम मियां-बीवी अपनी ज़िंदगी में एक दूसरे के साथ करते हैं तो एक न एक दिन हक़ीक़त खुल कर सामने आ ही जाती है और जब ऐसा होता है तो ज़िंदगी में एक ऐसा ज़हर घुल जाता है जिसका इलाज क़रीब-क़रीब नामुमकिन हो जाता है।

5- छुप कर काम करना

जब मियां-बीवी में से कोई एक दूसरे की ग़ैर मौजूदगी में कोई काम करता है और दूसरे को उसकी भनक भी नहीं लगने देता तो इसका सबसे बड़ा नुक़्सान ये होता है कि आपसी भरोसा ख़त्म हो जाता है। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि वह काम अच्छा है या बुरा, दूसरे के नफ़े में है या नुक़्सान में लेकिन दूसरे को बताए बग़ैर कोई काम करने का नुक़्सान यही है कि उसके दिल में यह ख़्याल आ सकता है कि उसके लाइफ़-पार्टनर को उस पर भरोसा नहीं है या वह उसको कोई अहमियत नहीं देता। जिसका नतीजा ये होता है कि मियां बीवी के बीच एक दूसरे के बारे में बदगुमानियां पैदा हो जाती हैं और फिर सामने वाला भी उसके बदले में वैसा ही करने की कोशिश करने लगता है।

6- हठधर्मी

शादीशुदा लोगों की ज़िंदगी में दरार पैदा करने वाली एक और चीज़ हठधर्मी है। यह हालत अक्सर उस वक़्त पैदा होती है जब मियां बीवी एक दूसरे की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई क़दम उठाएं या उनमें से एक दूसरे की बात न माने। जिसके नतीजे में दूसरा भी उसकी ज़िद में अपनी हरकतों पर उतर आता है। ये इतनी ख़तरनाक चीज़ है कि इससे इन दोनों में जुदाई भी हो सकती है।

7- ख़ुद पर फ़ख़्र करना और दूसरे को नीची निगाह से देखना

जिन लोगों में कांफ़िडेंस की कमी होती है वह ख़ुद को दूसरों से कमज़ोर और छोटा समझते हैं और जो लोग ख़ुद को बड़ा समझते हैं वह ग़रूर, ख़ुदग़र्ज़ी वग़ैरा का शिकार होते हैं। इन दोनों तरह के लोगों की कोशिश सिर्फ़ और सिर्फ़ ये होती है कि दूसरों के सामने किसी भी तरह ख़ुद को बड़ा साबित कर दें। इनकी नज़र में दूसरों की न कोई अहमियत होती है और न ही औक़ात। कभी-कभी मियां बीवी भी इस बीमारी का शिकार हो जाते हैं। वह शौहर जो ख़ुद को बीवी से अच्छा और बड़ा समझता है, हमेशा अपनी तारीफ़ के पुल बांधता रहता है और बीवी को गिरी हुई निगाहों से देखता है। ये शख़्स ख़ुद अपने

पैरों पर कुल्हाड़ी मार कर अपनी ज़िंदगी को तबाह कर लेता है। इसी तरह अगर बीवी ख़ुद को अपने शौहर से बेहतर समझती हो और उसकी इज़्ज़त न करती हो तो वह भी ख़ुद ही अपने घर को अपने हाथों से बर्बाद कर लेती है।

8- फूहड़पन

मियां-बीवी में से अगर कोई भी टाइम और पंक्चुआलिटी का पाबंद नहीं है तो दूसरे के ऐतराज़ों और तानों का निशाना ज़रूर बनेगा क्योंकि उससे दूसरे की ज़िंदगी और कामों पर बुरा असर पड़ता है और ज़िंदगी काफ़ी हद तक बद्तर हो जाती है। वह शौहर जो रात में देर से घर वापस आता है और अपने बीवी बच्चों की तफ़रीह, सफ़र और उनके साथ बैठकर बातें करने और कुछ वक़्त गुज़ारने को अहमियत नहीं देता वह एक कामयाब शौहर या बाप नहीं कहला सकता।

मियां-बीवी में पाए जाने वाले फ़र्क़

आपको दुनिया में कोई भी दो ऐसे लोग नहीं मिलेंगे जो हर पहलू से एक जैसे हों। दुनिया में हर इंसान किसी न किसी ऐतबार से दूसरों से अलग होता है और हर शख़्स में कोई न कोई चीज़ ऐसी ज़रूर पाई जाती है जो उसे दूसरों से अलग बना देती है। मिज़ाज, आदतें और कुछ दूसरी चीज़ों का फ़र्क़ इंसान के नेचर में शामिल है। इसीलिए यह फ़र्क़ बुरा नहीं माना जाता। शायद यही वजह है कि मिज़ाज, फ़िक्र और सलीक़े के फ़र्क़ के बावजूद सारे इंसान एक दूसरे के साथ मिलकर ज़िंदगी बसर करते हैं। हाँ, अगर यह फ़र्क़ 180 डिग्री का फ़र्क़ होगा तो बहुत सी मुश्किलें सामने आ जाएंगी।

शादी दो ऐसे इंसानों के मिलन का नाम है जिनमें जिस्मानी बनावट के अलावा भी किसी न किसी ऐतबार से फ़र्क़ पाया जाता है जैसे मियां-बीवी के मिज़ाज में फ़र्क़, सलीक़ों में फ़र्क़, सोच का अलग होना वग़ैरा। अगर मियां-बीवी में बहुत ज़्यादा फ़र्क़ न पाए जाते हों तो किसी हद तक समझौता करते हुए और हालात को मद्देनज़र रखते हुए ज़िंदगी बसर करना कोई मुश्किल काम नहीं है लेकिन अगर यह डिफ़्रेंसेज़ और फ़र्क़ बिल्कुल 180 डिग्री पर हों तो ज़िंदगी की इस पटरी पर एक साथ चलना नामुमकिन न भी सही लेकिन मुश्किल और बहुत मुश्किल बहरहाल होता है।

मियां-बीवी के बीच पाए जाने वाले कुछ फ़र्क़ और डिफ़्रेंसेज़ को हम ख़ुलासे के तौर पर यहां बयान कर रहे हैं:

1- पसंद-नापसंद का फ़र्क़

लाइफ़-पार्टनर को चुनने में एक चीज़ जिसका ख़्याल ज़रूर रखना चाहिए वह फ़्युचर में दोनों के बीच पसंद और नापसंद का फ़र्क़ है। अगर यह फ़र्क़ थोड़ा-बहुत होगा तो नए जोड़े के लिए ख़ास मुश्किल पैदा नहीं करेगा वरना उन्हें इस बारे में अच्छी तरह सोच-समझ लेना चाहिए।

2- मिज़ाज और सलीक़े का फ़र्क़

इंसानों के बीच जो नेचरल फ़र्क़ पाए जाते हैं उनमें से एक मिज़ाज और सलीक़े का फ़र्क़ है। मियां बीवी के बीच अगर इस फ़र्क़ में बैलेंस नहीं होगा तो यह भी उनके फ़्युचर के लिए मुश्किल बन सकता है। इसलिए इसमें बीच का रास्ता चुनना बहुत ज़रूरी है।

3- नज़रिए का फ़र्क़

शादी के बंधन में बंधने वाले जोड़े के अंदर नज़रिए के ऐतबार से फ़र्क़ के पाए जाने के बहुत ज़्यादा चांसेज़ होते हैं। हो सकता है कि इन दोनों की सोच एक दूसरे से बिल्कुल अलग हो या कुछ चीज़ों में एक जैसा सोचते हों और कुछ चीज़ों में उनकी सोच में फ़र्क़ हो। यह भी हो सकता है कि उनकी आरज़ूएं भी अलग-अलग हों और ऐसी हों कि जिन तक पहुंचना तो चाहते हों लेकिन पहुंचना उनके बस में न हो। अगर उनके नज़रिए और आरज़ूओं का फ़र्क़ इतना ज़्यादा हो कि दोनों किसी एक प्वाइंट पर आ ही न सकें तो यह भी उनकी ज़िंदगी का एक बड़ा मसला बन सकता है।

4- आदतों का फ़र्क़

इस लिहाज़ से भी इंसान दो तरह के होते हैं, कुछ गुस्से वाले, अक्ख़ड़ मिज़ाज, मग़रूर, ख़ुदग़र्ज़ और कुछ नर्म मिज़ाज, मेहरबान और प्यार-मुहब्बत वाले। इसलिए रिश्ता करते वक़्त दोनों की अख़्लाक़ी आदतों और मिज़ाज का ख़्याल रखना भी ज़रूरी है ताकि यह फ़र्क़ उनकी ज़िंदगी को तल्ख़ न बना दे।

5- ज़िहानत में फ़र्क़

मियां-बीवी के बीच अगर सलाहियत और ज़िहानत का फ़र्क़ बहुत ज़्यादा होगा तो हो सकता है कि उनके लिए बहुत सी मुश्किलें पैदा हो जाएं। इसलिए रिश्ते के वक़्त इस चीज़ को ध्यान में रखना भी बुरा नहीं है।

6-अक़ाएद और दीनदारी का फ़र्क़

वह मियां-बीवी जिनमें दीन और शरीअत की पाबंदी के लिहाज़ से फ़र्क़ पाया जाता है उनकी ज़िंदगी भी अजीब तरह की उलझनों में गुज़रती है। अगर उनमें से एक दीनदार और शरीअत का पाबंद है और दूसरा इस बारे में लापरवाह है तो ज़िंदगी में सुकून का मिल पाना बहुत मुश्किल है। इसलिए शादी से पहले यह देखना बहुत ज़रूरी है कि लड़के और लड़की में दीनदारी किस हद तक पाई जाती है।

ईदे मुबाहिला

मुन्तज़िर मूसवी

हिजरत का नवां साल है। शहरे मक्का फ़तह हो चुका है। यमन, ओमान और उसके आस-पास के इलाक़ो में भी इस्लाम फैल चुका हैं। इस बीच हिजाज़ और यमन के बीच वाले इलाक़े, नजरान के ईसाईयों में तौहीद के परचम तले आने का जज़बा नज़र नहीं आता। रहमतुल लिल आलमीन[स०] उन पर मेहरबान हो रहे हैं। ईसाईयों के बड़े पादरी के नाम अपना ख़त रवाना करते हैं जिसमें ईसाईयों को इस्लाम क़ुबूल करने की दावत दी जाती है। रसूल[स०] का ख़त एक डेलिगेशन के साथ नजरान रवाना होता है। मदीने से रसूले इस्लाम[स०] का सफ़ीर ख़त लेकर नजरान पहुंचता है जहां वह वहां के बड़े पादरी अबू हारिसा के सामने आपका का ख़त पेश करता है। अबू हारिसा ख़त खोल कर निहायत परेशानी के साथ पढ़ने लगता है और गहरी सोच में डूब जाता है। इस बीच अपने ख़ास और माहिर लोगों को बुलवा लेता है। सभी आपस में बातचीत करने लगते हैं। जिसका नतीजा ये निकलता है कि साठ लोगों की एक टीम हालात और हक़ीक़त को समझने के लिए मदीने भेज दी जाती है।

नजरान का यह क़ाफ़िला बड़ी शान-शौकत और अच्छे क़िस्म के लिबास पहने मदीने में आता है। क़ाफ़िला सालार पैग़म्बर[स०] के घर का पता पूछता है। बताया जाता है कि पैग़म्बर[स०] अपनी मस्जिद में हैं।

कारवां मस्जिद में दाख़िल होता है और सभी की नज़रें उस पर टिक जाती हैं। पैग़म्बर[स०] ने इन लोगों की तरफ़ से बेरुख़ी ज़ाहिर की जिससे सब को बहुत ताज्जुब हुआ क्योंकि पैग़म्बर[स०] हर एक से बहुत मुहब्बत और मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ मिलते थे।

हमेशा की तरह इस बार भी हज़रत अली[अ०] ने इस गुत्थी को सुलझाया। ईसाईयों से कहा कि तुम शान-शौकत और सोने जवाहिरात के बग़ैर आम लिबास में रसूल[स०] के पास आओ। अब कारवां वाले आम लिबास में हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए। पैग़म्बर[स०] ने उनका बड़ी गर्म जोशी से इस्तेक़बाल किया और उन्हें अपने पास बिठाया। कारवां के सरदार ने गुफ़्तगू शुरू की, "आपका ख़त मिला था इसलिए मिलने के लिए आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए ताकि आपसे गुफ़्तगू करें।"

"हां! वह ख़त मैंने ही भेजा है और दूसरे बादशाहों के नाम भी ख़त भेज चुका हूं और सभी लोगों से एक बात के अलावा कुछ नहीं मांगा है और वह ये कि शिर्क को छोड़ कर ख़ुदाए वाहिद के फ़रमान को क़ुबूल करके दीने इस्लाम को क़ुबूल करें।" रसूल ने कहा।

अबू हारिसा ने कहा, "अगर आप इस्लाम क़ुबूल करने के लिए एक ख़ुदा पर ईमान लाने को कहते हैं तो हम पहले से ही एक ख़ुदा पर ईमान रखते हैं।"

रसूल ने कहा, "अगर आप ख़ुदा पर ईमान रखते हैं तो ईसा मसीह को क्यों ख़ुदा मानते हैं?"

"इस बारे में हमारे पास बहुत सी दलीलें हैं । जैसे ईसा मसीह मुर्दों को ज़िन्दा करते थे, मरीज़ों को शिफ़ा देते थे वग़ैरा।"

इस पर रसूल ने कहा कि आपने ईसा[अ०] के जिन मोजिज़ों को गिनाया, वह सही हैं लेकिन ये सब ख़ुदा ने उन्हें दिए थे। इसलिए ईसा की इबादत करने के बजाए उनके ख़ुदा की इबादत करनी चाहिए।

पादरी यह जवाब सुनकर ख़ामोश हो गया और इस दौरान कारवां में शरीक किसी और ने इस ख़ामोशी को तोड़ा और कहा कि ईसा, ख़ुदा के बेटे हैं क्योंकि उनकी मां मरयम ने किसी के साथ निकाह किए बग़ैर उन्हें जन्म दिया है।

इस बीच अल्लाह ने अपने रसूल को उसका जवाब 'वही' के ज़रिए नाज़िल फ़रमाया, "ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम जैसी है कि उन्हें मिट्टी से पैदा किया।" (1)

इस पर अचानक ख़ामोशी छा गई। आख़िरकार इस रुसवाई से अपने आपको बचाने के लिए वह सब बहानेबाज़ी पर उतर आए और कहने लगे इन बातों से हम मुतमईन नहीं हुए हैं। इसलिए ज़रूरी है कि सच को साबित करने के लिए मुबाहिला किया जाए यानी ख़ुदा की बारगाह में दुआ के लिए हाथ उठा के झूठों पर अज़ाब की बद-दुआ की जाए।

उनका ख़्याल था कि इन बातों को पैग़म्बर[स०] नहीं मानेंगे लेकिन उनके होश उड़ गए जब उन्होंने सुना कि ठीक है, तुम अपने बेटों, औरतों और ख़ुद को ले आओ ताकि झूठों पर लानत करें।

तय यह हुआ कि कल सूरज निकलने के बाद शहर से बाहर के इलाक़े में मिलते हैं। यह ख़बर सारे इलाक़े में फ़ैल गई। लोग मुबाहिला शुरू होने से पहले ही पहुंच गए। नजरान वाले आपस में कह रहे थे कि अगर आज मुहम्मद[स०] अपने सरदारों और सिपाहियों के साथ मैदान में आते हैं तो इसका मतलब है कि वह हक़ पर नहीं है और अगर वह अपने रिश्तेदारों को लेकर आते हैं तो वह अपने दावे में सच्चे हैं।

सभी की नज़रें शहर के दरवाज़े पर टिकी हैं। दूर से एक साया नज़र आने लगा जिससे देखने वालों का ताज्जुब बढ़ गया। पैग़म्बर[स०] गोद में हुसैन[अ०] को लिए हुए हैं और दूसरे हाथ में हसन[अ०] की उंगली थामे हुए हैं। पीछे-पीछे आपकी बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[अ०] चल रही हैं और उन सब के पीछे हज़रत अली[अ०] हैं।

जंगल में कानाफूसी की आवाज़े बुलन्द होने लगीं। इस बीच बड़े पादरी ने कहा, "अगर उन्होंने दुआ के लिए हाथ उठा दिए तो उसी लम्हे हम इस जंगल में ख़ुदा के अज़ाब में गिरफ़्तार हो जाएंगे।" दूसरे ने कहा तो फिर क्या किया जाए?

जवाब मिला कि सुलोह करेंगे और कहेंगे कि हम टैक्स देंगे और ऐसा ही किया भी गया। इस तरह बातिल की हार हुई और हक़ जीत गया।

1-आले इमरान/59

इस्तेख़ारा

■ अली अकबर मज़ाहिरी

अगर इस्लाम के क़ानूनों को सही तरीक़े से समझ लिया जाए और सही तरीक़े से उन पर अमल किया जाए तो इंसान को निजात मिल सकती है। लेकिन अगर उनके समझने में ग़लती हो जाए और सही तरीक़े से उनको अंजाम न दिया जाए तो न सिर्फ़ यह कि वह हमारे लिए फ़ायदेमंद नहीं होंगे बल्कि नुक़्सानदेह होंगे।

हमारे समाज के बहुत से लोग अक्सर इस्लाम की एक चीज़, इस्तेख़ारे को समझने में ग़लती करते हैं और ग़लत तरीक़े से इस पर अमल होता है।

इस आर्टिकिल में इस्तेख़ारे के सारे मसलों पर बात नहीं की जा सकती लेकिन चूंकि इस्तेख़ारे को शादी में सबसे ज़्यादा इस्तेमाल किया जाता है इसलिए इस बारे में कुछ बातें करना ज़रूरी हैं।

इस्तेख़ारे की दो क़िस्में हैं

ख़ुदा से अपने लिए भलाई और हिदायत मांगने को इस्तेख़ारा कहते हैं। हक़ीक़त ये है कि इस्तेख़ारा हर काम में, खास कर अच्छे रिश्ते के चुनाव में ख़ुदा से दुआ और मदद मांगना है।

इस बारे में आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी ने लिखा है, ''इमाम अली[अ] इस्तेख़ारे के लिए दो रकअत नमाज़ पढ़ते थे और नमाज़ के बाद सौ बार 'मैं ख़ुदा से भलाई चाहता हूं' कहते थे और इसके बाद ये दुआ पढ़ते थे, 'ऐ अल्लाह मैं फ़ुलां काम करना चाहता हूं। अगर दीन और दुनिया में मेरे लिए इसमें भलाई है तो इसे करने के लिए वसीला फ़राहम कर दे और अगर दीन और दुनिया के एतेबार से ये मेरे लिए नुक़्सानदेह है तो मुझे इससे दूर रख, चाहे मुझे इससे लगाव हो या ये मुझे नापसंद हो क्योंकि तू हक़ीक़ी मसलेहतों का जानने वाला है जिन्हें मैं नहीं जानता।[1] इसके बाद उस काम को शुरू कर देते थे।

इमाम सज्जाद[अ] के सहीफ़ए सज्जादिया में तीसरी दुआ से भी इस्तेख़ारे का यही मतलब समझ में आता है यानी ख़ुदा से अपनी भलाई चाहना।

हमारे समाज में पाया जाने वाला इस्तेख़ारा

लोग अपने कामों को करने के लिए क़ुरआन और तस्बीह से इस्तेख़ारा करते हैं।

कुछ रिवायतों में इस इस्तेख़ारा का ज़िक्र है लेकिन अफ़सोस! इसमें कुछ बदलाव आ गए हैं। कभी तो इसको बिल्कुल उलट दिया जाता है और ग़ौरो-फ़िक्र, तहक़ीक़ और मशवेरे के बजाए इस्तेख़ारे ही से काम लिया जाता है। इसीलिए कभी-कभी फ़ाएदे के बजाए नुक़्सान होता है। रिश्तों के मौक़े पर भी इस्तेख़ारा किया जाता है और कभी-कभी इससे बहुत बड़ा नुक़्सान उठाना पड़ जाता है।

इस्तेख़ारे का सही इस्तेमाल

अगर कोई किसी काम को करना चाहता है और उसमें उसे अपनी भलाई भी दिख रही हो तो ख़ुदा पर भरोसा करके उस काम को शुरू कर देना चाहिए। ऐसे में इस्तेख़ारे की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर किसी काम को न करने में भलाई समझ में आ रही हो तो उस काम को छोड़ देना चाहिए। यहां भी इस्तेख़ारे की ज़रूरत नहीं है लेकिन अगर भलाई समझ में न आ रही हो और उसको करने या न करने, दोनों में शक हो तो फिर तहक़ीक़, ग़ौरो-फ़िक्र और मशवेरे से काम लेना चाहिए, अच्छी तरह छानबीन करना चाहिए। उसके बाद अगर 70% लगे कि इस काम को करना चाहिए और 30% लगे कि नहीं करना चाहिए तो इस काम को कर लेना चाहिए। यहां भी इस्तेख़ारे की ज़रूरत नहीं है लेकिन अगर इन्सान ग़ौरो-फ़िक्र, तहक़ीक़ और मशवेरे के बाद भी किसी नतीजे तक न पहुंच सके, दोराहे पर हैरान-परेशान ख़ड़ा रहे और कोई भी बात समझ में न आ रही हो तो ये मौक़ा इस्तेख़ारा का मौक़ा है।

इस जगह अगर इस्तेख़ारा देखा जाए तो इंसान अपनी हैरानी और परेशानी से निजात पा सकता है। इस इस्तेख़ारे की वजह से इंसान पर कोई फ़रीज़ा नहीं बनता है बल्कि इससे सिर्फ़ ये फाएदा होता है कि इससे इंसान को रास्ता मालूम हो जाता है और चूंकि इस इस्तेख़ारे से कोई ज़िम्मेदारी आएद नहीं होती इसलिए इस बात की भी कोई गारंटी नहीं होती कि जो रास्ता इस्तेख़ारे ने तय किया है वह सही और दूसरा बिल्कुल ग़लत है।

फिर इस्तेख़ारा भी हर किसी का काम नहीं है कि वह एक तस्बीह ले ले या क़ुरआन खोल ले

और उस वक़्त तक तस्बीह घुमाए जब तक उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेख़ारा न आ जाए।

बेजा इस्तेख़ारे का एक अफ़सोसनाक वाक़ेआ

आदिल एक नेक और मोमिन स्टूडेंट था। वह एक अच्छी लड़की से शादी करना चाहता था। कई बार कोशिश के बाद भी उसे कोई मुनासिब लड़की नहीं मिल सकी। दोस्तों ने एक लड़की का पता बताया तो तहक़ीक़ शुरू हुई। लड़की के रिश्तेदारों में से किसी से आदिल की दोस्ती थी। उससे भी मशवेरा लिया गया तो उसने भी लड़की के बारे में अच्छी राय दी। जो लोग लड़की को पहचानते थे जैसे टीचर और क्लास-मेट वग़ैरा, उनसे भी मालूम किया गया। तहक़ीक़ और छानबीन से लग रहा था कि यह रिश्ता पक्का है।

जब सारी छानबीन हो गई और मालूम हो गया कि सब चीज़ें सही हैं, उनकी शादी में कोई रुकावट नहीं है और लड़की के घर जाने का प्रोग्राम तय हो गया तो लड़की के पैरेंट्स की तरफ़ से ख़बर मिली कि इस्तेख़ारा मना आ गया है।

इस ख़बर से मुझे बहुत अफ़सोस हुआ क्योंकि मैं भी इस काम में शरीक था और उम्मीद थी कि आपसी बातचीत में अब कोई मुश्किल पेश नहीं आएगी क्योंकि लड़की के बारे में मुझे अच्छी ख़बरें मिली थीं। उधर आदिल को तो मैं अच्छी तरह से जानता ही था। मैं लड़की वालों से बातचीत करके शादी कराना चाहता था लेकिन उनके जान-पहचान के लोगों ने बताया कि वह इस्तेख़ारे पर अक़ीदा रखते हैं और इस्तेख़ारा मना आ गया है। अब अगर इसके ख़िलाफ़ अमल करेंगे तो उन पर मुसीबत टूट पड़ेगी और यह शादी टूट जाएगी।

मैंने अपने ज़ेहन में लड़की और उसके घर वालों से कहा कि ये तुमने ये क्या कर डाला? क्या यह अच्छा लड़का नहीं था जिसे तुमने बेवजह ठुकरा दिया? क्या तुम जानते हो कि तुम्हारा इस तरह का इस्तेख़ारा इस्लाम के ख़िलाफ़ है। तुमने एक ऐसे इस्तेख़ारे की वजह से जिसका यहां कोई मौक़ा नहीं था, इस मोमिन और नेक लड़के के रिश्ते को ठुकरा दिया। हाए रे! जिहालत...

अक्सर देखने में आता है कि लड़का लड़की कुफ़ो थे लेकिन बेजा इस्तेख़ारों की वजह से शादी नहीं हुई और बेतुका रिश्ता करके तबाह हो गए।

एक और वाक़ेआ

एक लड़की के बाप ने किसी से न मशवेरा किया और न छानबीन बल्कि इसकी जगह किसी से इस्तेख़ारा कराया जो बेहतर आया। उसने उसी लड़के से अपनी लड़की की शादी कर दी। कुछ दिनों बाद मालूम हुआ कि लड़का सही नहीं है और मियाँ बीवी के बीच कोई मेल नहीं है। लेकिन वक़्त निकल चुका था, शादी हो चुकी थी और मुश्किलें ख़ड़ी हो चुकी थीं।

लड़की का बाप अफ़सोस के साथ कहता था कि ग़लती फ़ुलां शख़्स और उसके इस्तेख़ारे की है जिससे मेरी लड़की बर्बाद हुई। उस बाप से यह कहना चाहिए कि ग़लती तुम्हारे ग़लत अक़ीदे और जिहालत की है। उधर इस्तेख़ारा करने वाले की भी ग़लती है कि उसने इस्तेख़ारे का सही मौक़ा नहीं बताया। शायद वह ख़ुद भी सही इस्तेख़ारे को नहीं जानता था।

इमाम ख़ुमैनी फ़रमाते हैं, "इस्तेख़ारे के बारे में जो हदीसें बयान हुई हैं, उनमें इस बात का वादा नहीं किया गया है कि वह हमेशा तुम्हें तुम्हारे मक़सद तक पहुंचा ही देंगी बल्कि यह कहा गया है कि जो ख़ुदा से अपने लिए अच्छाई और भलाई मांगता है तो वह उसे बेहतरी अता करता है। अगर इस दुनिया में सलाह होगी तो यहां अता करेगा वरना आख़िरत में उसका हिस्सा दिया जाएगा।" [2]

ईरान के एक बहुत बड़े आलिम, आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी फ़रमाते हैं, "लाइफ़ पार्टनर के लिए लड़के, लड़की और उनके घर वालों को समझने और पहचानने की कोशिश करना चाहिए और इसके बाद भी शक हो तो जो लोग जानने वाले हैं उनसे मशवेरा करना चाहिए। अगर छानबीन से किसी नतीजे पर पहुंच जाएं तो बिस्मिल्लाह कर देनी चाहिए। इस्तेख़ारा वहां करना चाहिए जहां तहक़ीक़ और मशवेरे के बाद भी किसी नतीजे पर न पहुंच सकें और यह समझ में न आए कि क्या करें...छानबीन और मशवेरा इस्तेख़ारे से पहले होना चाहिए। अगर आप की छानबीन का नतीजा पॉज़िटिव है तो काम शुरू कीजिए, इस्तेख़ारे की कोई ज़रूरत नहीं है। कुछ लोग हर काम के लिए इस्तेख़ारा करते हैं जबकि बेजा इस्तेख़ारा काम में रुकावट और परेशानी की वजह बन जाता है।" [3]

ख़ुलासा यह है कि आयतुल्लाह जवादी आमुली की यह बात हमेशा याद रखना चाहिए जिसमें वह फ़रमाते हैं, "इस्लाम में हमें इस्तेख़ारे की तरफ़ कोई शौक़ नहीं दिलाया गया है। बल्कि इस्तेख़ारा तो उस वक़्त के लिए होता है जब इंसान हैरान-परेशान किसी दोराहे पर खड़ा हो।"

1-इंतेख़ाबे हमसर/166, मकारिमुल अख़्लाक़/369, 2-कशफ़ुल असरार/93, 3-इंतेख़ाबे हमसर/166, 168

तलाक़

तलाक़ नेचर और ख़ुदा की सुन्नत के ख़िलाफ़ उठाया जाने वाला एक क़दम है। जिस समाज में तलाक़ बढ़ जाए तो समझ लेना चाहिए कि वह समाज नेचॅरल ज़िंदगी के रास्ते से भटक गया है।

आज के बहुत से सोशलोजिस्ट्स की राय है कि तलाक़ देने की वजह से घराने पर बुरा असर पड़ता है, घर का माहौल उलट-पलट जाता है और बच्चे तरह-तरह की ज़ेहनी और रूही मुश्किलों का शिकार हो जाते हैं। इसलिए उनका कहना है कि बहुत ज़्यादा मजबूरी के अलावा दूसरी किसी भी सूरत में तलाक़ पर बैन लगा देना चाहिए, जिसपर सख़्ती से अमल भी करना चाहिए ताकि कोई शख़्स तलाक़ के बारे में सोच ही न सके।

सोशालोजी के इन एक्सपर्टस की राय एक हद तक मुनासिब है मगर कुछ मौक़ों पर अख़लाक़ी या रूही लिहाज़ से तलाक़ ज़रूरी भी हो जाती है। ऐसी सूरत में तलाक़ न देना घर को तबाही के रास्ते पर लाकर खड़ा कर सकता है। ज़रा सोचिए! अगर मियाँ-बीवी के रिलेशंस के अच्छा होने का कोई रास्ता नज़र ही न आ रहा हो तो उस वक़्त क्या किया जा सकता है? क्या उस वक़्त फ़ैमिली को इसी तरह जहन्नम में जलने दिया जाए या इस मसले का हल तलाक़ के ज़रिए निकालना चाहिए ताकि वह लोग घरेलू कशमकश और ज़ेहनी तकलीफ़ से बच सकें? सवाल ये है कि इन दोनों रास्तों में कौन सा रास्ता इस जहन्नम से बचा सकता है?

इस तरह के मौक़ों पर हमारे मज़हब ने कुछ ख़ास शर्तों के साथ तलाक़ को जाएज़ क़रार दिया है ताकि फ़ैमिली को इस आग से बचाया जा सके।

अगर हालात बहुत ख़राब हो जाएं और मेल-जोल की कोई सूरत बाक़ी न बचे तो फिर तलाक़ दे देना ही बेहतर है क्योंकि तलाक़ न देने की सूरत में झगड़े कम होने के बजाए बढ़ेंगे और उधर मियाँ-बीवी का एक साथ रहना भी मुसीबत बन जाएगा। इसलिए इस मौक़े पर हक़ीक़त को क़ुबूल कर लेना ही चाहिए और हलाल चीज़ों में सबसे ख़राब चीज़ यानी तलाक़ को मजबूरी की वजह से अपना लेना ही मुनासिब है और बहुत मुमकिन है कि तलाक़ के बाद मियाँ-बीवी की सोच बदल जाए, अपने किए पर शर्मिंदा हों और नयी तरह से ज़िंदगी की गाड़ी को खींचने पर तैयार हो जाएं। इसके लिए भी दीन ने गुंजाइश बाक़ी रखी है कि 'इद्दत' के ज़माने में दोनों 'रुजू' कर सकते हैं यानी साथ रहने के लिए वापस आ सकते हैं।

इस्लाम की नज़र में शादी और फ़ैमिली की मज़बूती बहुत ज़रूरी चीज़ है। इसीलिए घरेलू ज़िंदगी को मज़बूत करने के लिए कुछ आज़ादियों पर पाबंदी लगा दी है और तलाक़ के मसले में औरत को पूरी छूट नहीं दी है बल्कि कुछ इख़्तियार देकर औरत के लिए अच्छाई चाही है क्योंकि अगर मर्द-औरत दोनों को तलाक़ का हक़ दे दिया जाए तो तलाक़ के चांसेज़ दुगने हो जाएंगे। इसलिए ये हक़ किसी एक ही के हाथ में होना चाहिए और चूँकि शौहर के चुनने में औरत को पूरी आज़ादी दी गई है इसलिए इंसाफ़ की ख़ातिर तलाक़ का हक़ मर्द को मिलना चाहिए और इस्लाम ने भी यही किया है।

मर्द और औरत के जिस्म की बनावट एक जैसी नहीं है और दोनों का नेचॅर भी अलग-अलग है। जिसकी सबसे बड़ी मिसाल ये है कि मर्द में रैशनल और अक़्ली एपरोच ज़्यादा पाई जाती है लेकिन औरत के अंदर सेंटिमेंट्स और

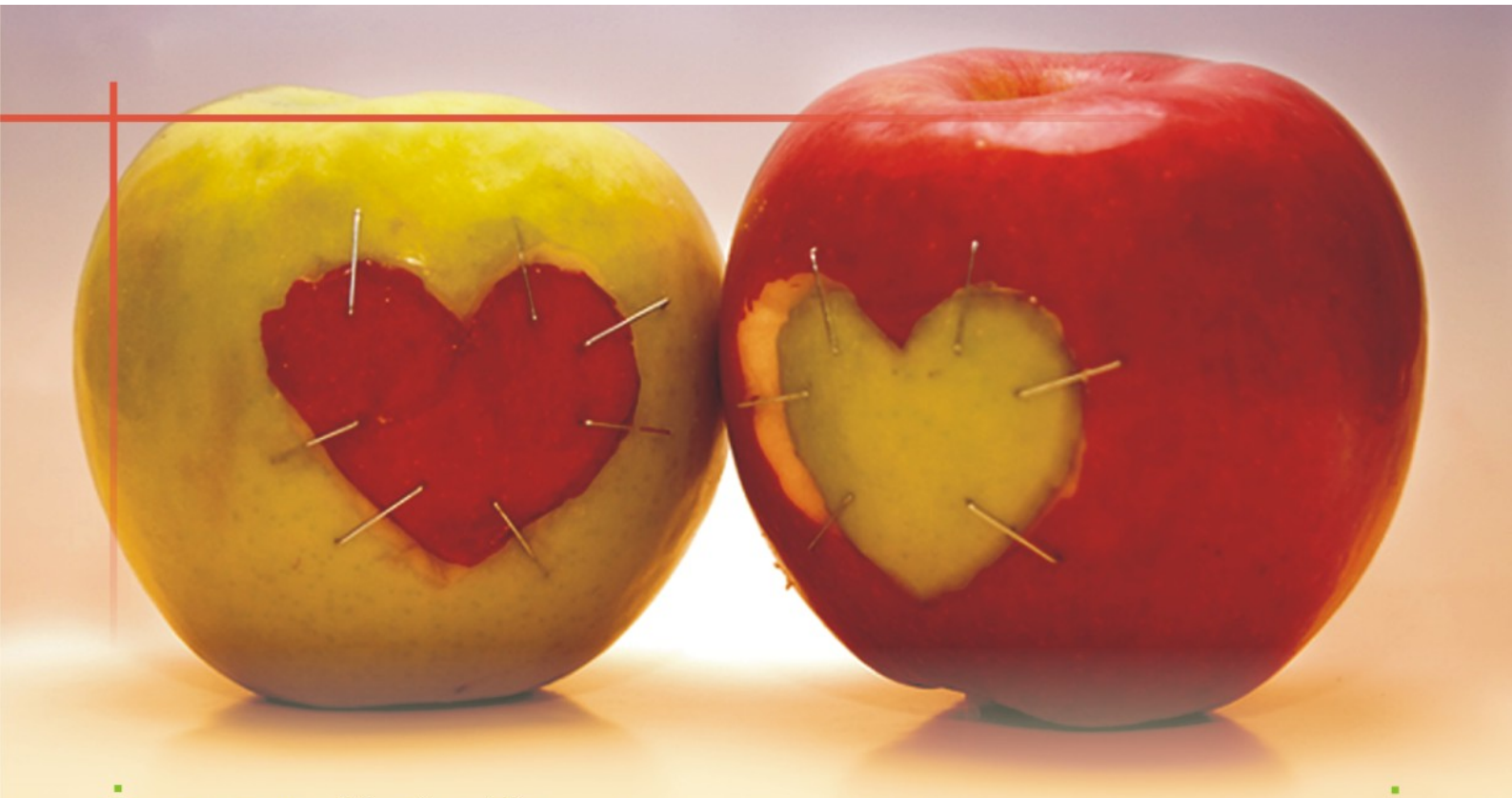

जज़बात ज़्यादा पाए जाते हैं। इसीलिए एलेक्सेस कार्ल कहते हैं, ''मर्द-औरत के बदन के सारे हिस्से ख़ास कर दिल-दिमाग़ और सोच अपनी-अपनी पहचान ख़ुद ही कराते हैं। इसीलिए बच्चों के एक्सपर्ट और उनकी परवरिश के माहिरों को मर्द-औरत के इस फ़र्क़ और उनकी नेचॅरल ज़िम्मेदारियों को ज़रूर ध्यान में रखना चाहिए।''

इस बुनियादी नुक्ते की तरफ़ ध्यान देना हमारे आने वाले कल्चर के संवरने में बहुत अहम रोल अदा कर सकता है और इस अहम बात की तरफ़ ध्यान न देने की वजह से नुक़्सान ये होता है कि औरतों की तरक़्क़ी के तरफ़दार लोग, मर्द-औरत के लिए एक ही तरह की एजुकेशन के बारे में सोचते हैं और दोनों के काम-काज, इख़्तियार और ज़िम्मेदारियों को भी एक ही तरह का चाहते हैं।

ऊपर लिखी हुई बातों से औरत-मर्द के हक़ और ज़िम्मेदारियों के फ़र्क़ को अच्छी तरह समझा जा सकता है। इन्हीं बातों को ज़हन में रखते हुए इस्लाम ने तलाक़ का हक़ मर्द को दिया है।

जिस तरह इस्लाम ने फ़ैमिली को बनाने के लिए हर तरह की सहूलतें दी हैं, उसमें पेश आने वाली मुश्किलों और रुकावटों को ख़त्म किया है उसी तरह तलाक़ देने और फ़ैमिली के सुकून को ग़ारत कर देने वाली चीज़ों को रोकने के लिए भी बहुत ज़्यादा सख़्ती बरती है। इस्लाम किसी भी क़ीमत पर मियाँ-बीवी के रिश्ते को तोड़ने और घर के सुकून को ख़त्म करने पर तैयार नहीं है।

इस्लाम चाहता है कि हर फ़ैमिली सूकून से रहे, दिलों को सुकून रहे और मर्द-औरत अंडरस्टेंडिंग के साथ ज़िंदगी बसर करें। इसीलिए इस्लाम शुरू में ही अपनी सारी कोशिश इस बात पर लगा देता है कि निकाह मज़बूत से मज़बूत हो। हाँ, अगर दोनों में मेल के सारे रास्ते ही बंद हो जाएं तो बात दूसरी है।

> *जिस तरह इस्लाम ने फ़ैमिली को बनाने के लिए हर तरह की सहूलतें दी हैं, उसमें पेश आने वाली मुश्किलों और रुकावटों को ख़त्म किया है उसी तरह तलाक़ देने और फ़ैमिली के सुकून को ग़ारत कर देने वाली चीज़ों को रोकने के लिए भी बहुत ज़्यादा सख़्ती बरती है। इस्लाम किसी भी क़ीमत पर मियाँ–बीवी के रिश्ते को तोड़ने और घर के सुकून को ख़त्म करने पर तैयार नहीं है।*

यही वजह है कि एक तरफ़ मर्दों से क़ुरआन कहता है, ''औरतों के साथ अच्छा सुलूक करो। अब अगर तुम उन्हें नापसंद भी करते हो तो हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करते हो और ख़ुदा उसी में बड़ी भलाई रखे।'' [1]

हक़ीक़त में नफ़रत के शोलों को बुझाने और नाराज़गी को दूर करने, साथ ही मर्दों के एहसास को जगाने के लिए इस्लाम मर्दों को इस नापसंदीदा अमल पर सब्र करने को कहता है कि जिन औरतों को नापसंद करते हैं उनको छोड़ न दें क्योंकि हो सकता है कि उन औरतों में ही बरकत हो और लोगों को पता न हो। दूसरी तरफ़ औरतों से क़ुरआन कहता है, ''अगर कोई औरत शौहर के हक़ अदा न कर सके या उसकी किनाराकशी से तलाक़ का ख़तरा महसूस करे तो दोनों के लिए कोई हरज नहीं है कि किसी तरह आपस में सुलह कर लें कि सुलह में बेहतरी है...'' [2]

हमारे मासूम इमामों ने भी तलाक़ को बहुत नापसंदीदा काम बताया है और जगह-जगह उसको बुरा कहा है। मासूम[अ] का इरशाद है, ''जो औरत बग़ैर किसी ख़ास ज़रूरत के अपने शौहर से तलाक़ माँगे तो ख़ुदा उसको अपनी रहमत और इनायत से महरूम कर देगा।''

दूसरी जगह इरशाद है, ''शादी करो मगर तलाक़ न दो क्योंकि तलाक़ अर्शे इलाही को हिला देती है...''

इस्लाम ने मर्दों को तलाक़ का हक़ तो ज़रूर दिया है मगर इस हक़ से ग़लत फ़ायदा हासिल करने पर पाबंदी लगा दी है और इख़्तियारों को भी एक ख़ास दायरे में बांध दिया है। जैसे मर्द ज़ुल्म या सताने की नियत से औरत को तलाक़ नहीं दे सकता। इसी तरह अगर तलाक़ से बुराईयों और ख़तरों का यक़ीन हो तो तलाक़ की इजाज़त नहीं

है। इस्लाम ने जो शर्तें तलाक़ के लिए रखी हैं उनसे तलाक़ में बहुत हद तक कमी आ सकती है।

औरत-मर्द के झगड़ों को दूर करने के लिए सबसे पहला क़दम घरेलू अदालत है और ये चीज़ सिर्फ़ इस्लाम ने ही पेश की है। इस घरेलू अदालत का मतलब ये है कि औरत-मर्द दोनों की तरफ़ से एक-एक ऐसा आदमी चुना जाए जिसमें फ़ैसला करने की कैपेसिटी हो। फिर ये दोनों बैठकर सारे हालात पर ग़ौर करें और सोचें। फिर एक ऐसा फ़ैसला दें जो दोनों के लिए अच्छा हो। इस बारे में क़ुरआन फ़रमाता है, "अगर दोनों के बीच झगड़े का ख़तरा हो तो एक शख़्स मर्द की तरफ़ से फ़ैसला करने वाला बने और एक औरत वाला भेजो। फिर वह सुधार चाहेंगे तो ख़ुदा उनके दरमियान सुलह करा देगा। बेशक ख़ुदा ख़बर रखने वाला और जानने वाला है।" (3)

लेकिन अगर झगड़ा बहुत ज़्यादा हो और सुलह का कोई रास्ता न बचा हो तो फिर दोनों अपन-अपना रास्ता अलग कर लें। लेकिन आम तौर पर अदालतों को इन मसलों में डालना बहुत नुक़्सानदेह है क्योंकि ये बात तजुर्बे में आ चुकी है कि आम अदालतों के दख़ल देने से मियाँ-बीवी के बीच के हालात और ज़्यादा ख़राब हो जाते हैं क्योंकि आम अदालतों की ज़िम्मेदारी है कि वह क़ानून के तहत दोनों तरफ़ की दलीलों को सुनकर फ़ैसला करें। अब जिसकी दलील मज़बूत होगी उसी के हक़ में फ़ैसला हो जाएगा। वह लोग झगड़े की आग को बुझाने की कोशिश नहीं करेंगे और न झगड़े की वजह दूर करने की कोशिश करेंगे। इसके अलावा एक बड़ी ख़राबी ये भी है कि दोनों तरफ़ के लोग अपनी बिल्कुल निजी और घरेलू बातों को अपना दावा साबित करने के लिए ग़ैर लोगों के सामने पेश करने पर मजबूर होंगे जिससे मर्द-औरत के जज़बात को ठेस पहुंचती है, उनकी पर्सनालिटी पर बुरा असर पड़ता है और फिर झगड़ा कम होने के बजाए बढ़ जाता है।

तलाक़ की शर्तों में से एक शर्त ये भी है कि दो आदिल लोगों के सामने तलाक़ के सीग़े पढ़े जाएं। अगर दो आदिलों के बग़ैर तलाक़ के सीग़े जारी किए गए तो तलाक़ बातिल है। तलाक़ में दो आदिलों की शर्त का फ़ायदा ये है कि जब उनके सामने मसला आएगा तो वह अपने आदिल होने की वजह से इस बात पर मजबूर होंगे कि कोशिश करके मियाँ-बीवी के झगड़े को ख़त्म करा दें और जहां तक हो सके तलाक़ न होने दें लेकिन तलाक़ के बाद अगर शौहर फिर से अपनी बीवी को अपनाना चाहे तो फिर इसके लिए कोई शर्त नहीं है। यहाँ मामला तलाक़ से बिल्कुल उलटा है क्योंकि इस्लाम का नज़रिया ये है कि मेल-जोल और मियाँ-बीवी के रिश्ते को जोड़ने में ज़रा सी भी देर नहीं होना चाहिए। झगड़ा ख़त्म करने और प्यार-मुहब्बत पैदा करने के लिए इस्लाम ने बहुत सी सहूलतें दी हैं।

इसके अलावा हर वक़्त दो आदिलों का मिलना भी आसान नहीं है। इसलिए भी तलाक़ में कमी हो सकती है क्योंकि जब तक दो आदिलों के बारे में तहक़ीक़ न हो जाए, मर्द चाहने के बाद भी तलाक़ नहीं दे सकता। इसी तरह तलाक़ के लिए औरत का पीरियड्स और निफ़ास यानी बच्चे की पैदाइश के बाद आने वाले खून से पाक होना भी शर्त है। यही वजह है कि बहुत बार ऐसा होता है कि मर्द तलाक़ देना चाहता है लेकिन औरत का पीरिड्स और निफ़ास से पाक न होना रूकावट बन जाता है और बात कुछ दिनों के लिए टल जाती है। बहुत मुमकिन है कि इतने दिनों में शौहर का इरादा बदल जाए और वह तलाक़ न दे।

सबसे बड़ी बात ये है कि जब बीवी के साथ ज़िंदगी मर्द के लिए मुश्किल हो जाए और बीवी से बेज़ारी की वजह से मर्द तलाक़ देना चाहे तो तलाक़ के बाद भी शादी का बंधन नहीं टूटता और शरई तौर से मियाँ-बीवी एक दूसरे से जुदा नहीं होते बल्कि इद्दत ख़त्म होने से पहले-पहले जिस वक़्त भी मर्द चाहे फिर से उसी तरह अपनी बीवी के साथ रह सकता है।

आख़िरी क़दम जो इस्लाम ने तलाक़ को रोकने के लिए उठाया है वह ये है कि 'तलाक़े रजई' देने के बाद भी मर्द इद्दत के ज़माने यानी तीन महीने कुछ दिन तक औरत को घर से बाहर नहीं निकाल सकता और औरत खुद भी किसी बहुत ज़रूरी काम के बग़ैर घर से बाहर नहीं निकल सकती।

क़ुरआन फ़रमाता है, "ख़बरदार! उन्हें उनके घरों से न निकालना और न वह खुद निकलें जब तक कोई खुला हुआ गुनाह न करें, ये खुदा की बताई हुई हदें हैं और जो खुदा की हदों से आगे बढ़ेगा उसने अपने ही नफ़्स पर जुल्म किया है तुम्हें नहीं मालूम कि शायद खुदा इसके बाद कोई नई बात ईजाद कर दे।"

तीन महीने और कुछ दिन की मुद्दत जिसमें औरत को अपने शौहर के घर ही में रहना चाहिए, मर्द को तलाक़ देने पर शर्मिंदा और पशेमान भी

बना सकती है और बहुत मुमकिन है कि इस मुद्दत में मुहब्बत फिर से पैदा हो जाए और दोबारा मर्द अपनी बीवी के साथ रहने पर राज़ी हो जाए। इसी बात की तरफ़ आयत का आख़िरी हिस्सा इशारा कर रहा है यानी इस हुक्म का फ़लसफ़ा बता रहा है कि औरत इद्दत में क्यों

> *सबसे बड़ी बात ये है कि जब बीवी के साथ ज़िंदगी मर्द के लिए मुश्किल हो जाए और बीवी से बेज़ारी की वजह से मर्द तलाक़ देना चाहे तो तलाक़ के बाद भी शादी का बंधन नहीं टूटता और शरई तौर से मियाँ–बीवी एक दूसरे से जुदा नहीं होते बल्कि इद्दत ख़त्म होने से पहले–पहले जिस वक़्त भी मर्द चाहे फिर से उसी तरह अपनी बीवी के साथ रह सकता है।*

शौहर के घर पर रहे। इसमें ख़ूबी ये है कि रजई तलाक़ की इद्दत में शौहर के दोबारा अपनी बीवी के साथ रहने पर रज़ामंदी के लिए किसी ख़ास एहतेमाम की ज़रूरत नहीं है बल्कि मर्द के निकाह को बाक़ी रखने के लिए मामूली सी ख़्वाहिश भी इस बात के लिए काफ़ी है। 'रुजू' में इतनी सहूलत देना इस बात की दलील है कि इस्लाम फ़ैमिली के रिश्तों को हर क़ीमत पर बाक़ी रखना चाहता है और तलाक़ या जुदाई को बिल्कुल पसंद नहीं करता है।

इसी तरह ख़ुल्अ् है जिसमें औरत मर्द को नापसंद करने की वजह से उसे माल देकर उससे जुदाई हासिल कर लेती है। इसमें भी ये बात ध्यान में रखी गई है कि अगर औरत ख़ुल्अ् लेने पर शर्मिंदा हो तो अपने दिए हुए माल को वापस लेकर फिर से शौहर को ये हक़ देती है कि वह चाहे तो रुजू कर ले और ज़िंदगी भर पहले की तरह एक साथ रह ले।

इस्लाम ने इस तरह के क़ानूनों के ज़रिए कोशिश की है कि मियाँ-बीवी का रिश्ता हमेशा बाक़ी रहे और कभी न टूटे। ऐसे रास्ते निकाले हैं जिनसे शौहर और बीवी के लिए अपने जल्दी के फ़ैसलों और ग़ुस्से में की गई ग़लतियों को सुधारने और दोबारा एक मुहब्बत भरी ज़िंदगी गुज़ारने का मौक़ा बाक़ी रहे। अगर निकाह और तलाक़ के बारे में इस्लामी क़ानूनों की सही से पाबंदी की जाए तो समाज में कामयाब शादीशुदा ज़िंदगियों को बढ़ाया जा सकता है और तलाक़ जैसी मनहूस चीज़ में बहुत हद तक कमी की जा सकती है।

इन सारी बातों को देखते हुए कोई भी इंसाफ़ पसंद ये मानने पर मजबूर हो जाएगा कि दुनिया के हर सिस्टम से ज़्यादा इस्लाम ने शादीशुदा ज़िंदगी को कामयाब बनाने की कोशिश की है।

जहाँ औरतों का हक़ छिन जाने का ख़तरा हो जाए वहाँ इस्लाम ने औरत की क़ानूनी हिमायत की है और ऐसी सिचुएशन के लिए औरत को रास्ते बताए गए हैं ताकि वह ऐसे हालात में अपने को इस माहौल से अलग कर सके। जैसे:

1- निकाह के वक़्त औरत मर्द से शर्त बांध सकती है कि अगर मर्द ने उसके साथ बुरा सुलूक किया या ज़रूरी ख़र्च देने में आना-कानी की या लम्बा सफ़र किया या दूसरी शादी की तो वह ख़ुद मर्द से तलाक़ ले सकती है।

2- औरत जिस्मानी रिश्तों को पूरा करने में टाल-मटोल से काम ले ताकि शौहर ख़ुद ही उसको तलाक़ दे दे।

3- अगर शौहर ज़रूरी ख़र्च न दे सकता हो या जिस्मानी रिश्ता बाक़ी न रखे या उसके दूसरे वाजिब राइट्स और हक़ों को पूरा न करे तो ऐसी सूरत में हाकिमे शरअ से शिकायत कर सकती है। अब अगर हाकिमे शरअ के सामने औरत का दावा सही साबित हो जाता है तो वह शौहर को इंसाफ़ के साथ रहने और उसक हक़ अदा करने पर मजबूर करेगा और अगर शौहर फिर भी नहीं मानता तो हाकिमे शरअ उसको तलाक़ पर मजबूर करेगा। अगर तलाक़ भी न दे तो हाकिमे शरअ् ख़ुद तलाक़ जारी कर देगा।

4- अगर शौहर औरत पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाए और बच्चे का इंकार कर दे कि ये मेरा नहीं है तो औरत को हक़ है कि शरई अदालत में जाए। अगर शौहर अपने दावे को साबित न कर सके तो ख़ास शर्तों में क़ाज़ी के हुक्म से दोनों में तलाक़ हो जाएगी।

5- अगर मियाँ-बीवी दोनों एक दूसरे से नफ़रत करते हों तो यहाँ भी बहुत आसानी से तलाक़ हो सकती है, इस तरह कि औरत अपने महर को ख़त्म करे और मर्द को इद्दत के ज़माने के ख़र्च से माफ़ किया जाए तो ऐसी सूरत में भी औरत महर का मुतालबा किए बग़ैर और शौहर इद्दत के ज़माने का ख़र्च दिए बग़ैर आपस में तलाक़ ले सकते हैं।

6- अगर शौहर की कोई ख़बर न हो और औरत ज़िंदगी के ज़रूरी ख़र्चों या फिर दुसरी बातों की वजह से सख़्ती और परेशानी में हो तो वह शरई अदालत में जाकर तलाक़ ले सकती है।

1-निसा/19, 2-निसा/128, 3-निसा/35

नजिस चीज़े

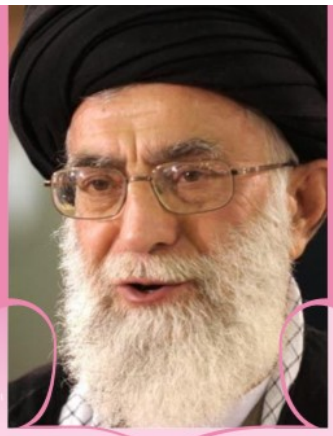

मैं अपनी दोस्त समीना के साथ गर्मी की छुट्टियों में 3-4 दिन गुज़ारने के लिए उसके घर आगरा जा रही थी। हम लोग चारबाग़ रेलवे स्टेशन से ट्रेन में सवार हुए और अपनी बर्थ पर पहुंचे और जैसे ही मैं अपनी बर्थ पर बैठने लगी, समीना ने मेरा हाथ पकड़ कर रोक लिया और बैग से एक अख़बार निकाल कर सीट पर बिछा दिया और कहा कि अब बैठ जाओ।

मैंने पूछा कि यह पेपर क्यों बिछाया है?

बोली, ''अरे भई! सीट तो नजिस ही होगी ना क्योंकि पता नहीं कौन-कौन बैठा होगा?''

मैं पेपर हटाकर बैठ गई और कहा कि ये सिर्फ़ तुम्हारा शक है, तुम्हारे पास इसके नजिस होने का कोई सुबूत नहीं है, न ही तुमने इस सीट को नजिस होते देखा है और न ही ये ऐने-निजासत में से है और शरीअत का उसूल है कि *जब तक किसी चीज़ के नजिस होने का यक़ीन न हो वह हमारे लिए पाक है।*

''अच्छा! यह तो मुझे नहीं पता था, मगर यह 'ऐने-निजासत' क्या होती है?''

मैंने कहा, ''यह वह चीज़ें हैं जो ज़ाती तौर ही पर नजिस होती हैं यानी जितना भी पाक करने की कोशिश करो यह पाक नहीं हो सकतीं।''

इस पर समीना बोली, ''अगर ऐसा है तब तो यह ज़रूर बताओ कि यह कितनी और कौन-कौन सी चीज़ें हैं?''

मैंने कहा, ''ठीक है। मैं गिना रही हूं, तुम गिनती रहो और समझती भी रहो।''

पेशाब-पाख़ाना : इंसान और हर उस जानवर का पेशाब-पाख़ाना नजिस है जिसका गोश्त खाना हराम हो और जो ख़ूने जहिंदा वाला हो जैसे बिल्ली।

समीना बोली, ''एक मिनट, एक मिनट! ज़रा यह तो बताओ कि ये ख़ूने जहिंदा क्या होता है?''

मैंने कहा कि जब किसी हैवान की गर्दन काटी जाए और ख़ून उछल कर निकले तो उसको ख़ूने जहिंदा कहते हैं। जैसे मुर्ग़े, बकरे, भैंस वग़ैरा का ख़ून।

समीना कहने लगी कि हां-हां वह तो हमने देखा है, बक़रीद में जब हमारे यहां बकरा कटा था तो ऐसे ही ख़ून निकला था मगर क्या बग़ैर उछले भी ख़ून निकलता है?

मैंने कहा, ''क्यों नहीं, जैसे मछली का।''

मुरदारः इंसान और हर उस हैवान का मुरदार जिसका ख़ून उछल कर निकलता हो, चाहे उसका गोश्त खाना हलाल ही क्यों न हो।

समीना ने पूछा, ''ये मुरदार क्या होता है?''

मैंने कहा कि इस्लाम में जो ज़िबह करने का तरीक़ा है अगर उसके बग़ैर कोई मर जाए तो उसको मुरदार कहते हैं जैसे हैवान किसी बीमारी की वजह से खुद बखुद मर जाए या ग़ैर इस्लामी तरीक़े से काट दिया जाए।

मनीः यह भी इंसान और उस हैवान की जिस में ख़ूने जहिंदा हो, चाहे उसका गोश्त खाना हलाल ही क्यों न हो।

ख़ूनः इंसान और उस हैवान का जिसमें ख़ूने जहिंदा हो लेकिन अगर किसी हैवान में ख़ूने जहिंदा नहीं है तो उसका ख़ून पाक है जैसे मछली का।

समीना बोली, ''हां! सही कह रही हो। मछली के ख़ून से तो परहेज़ नहीं किया जाता। लेकिन जो गोश्त हम लोग ख़रीद कर लाते हैं और उसमें जो ख़ून लगा होता है उसका क्या मसला है?''

मैंने मुस्कुरा कर जवाब दिया कि वह पाक है क्योंकि जानवर को ज़िबह करने के बाद नार्मल तरीक़े से जो ख़ून बह जाता है उसके बाद जो भी ख़ून उसके बदन में रह जाए वह पाक है।

कुत्ता और सुअरः वह जो ख़ुश्क़ी पर रहते हैं और इनके जिस्म का हर हिस्सा नजिस है चाहे ज़िंदा हों या मुर्दा।

''तो क्या कुत्ते और सुअर पानी में भी रहते हैं?'' समीना ने बोली।

मैंने कहा कि हां-हां! बिल्कुल दरियाई कुत्ता भी होता हैं मगर वह नजिस नहीं है, पाक है।

शराबः शराब या उसके जैसी दूसरी चीज़ें जैसे अलकोहल वाली बियर।

निजासत खाने वाले जानवर का पसीनाः ये भी नजिस है।

इसी तरह वह लोग जो ख़ुदा और उसके आख़िरी रसूल[स॰] पर ईमान नहीं रखते, वह भी नजिस हैं।

बस यही वह चीज़ें हैं जो ऐने-नजिस हैं यानी इनमें से अगर कोई चीज़ किसी पाक चीज़ से छू जाए और दोनों या कोई एक इतनी गीली हो कि उसकी तरी दूसरे तक पहुंच जाए तो पाक चीज़ भी नजिस हो जाती है।

''और अगर दोनों सूखी हों तो...''

मैंने कहा कि दोनों सूखी हों तो पाक चीज़ नजिस नहीं होगी।

समीना बोली, ''मज़ा आ गया। तुमने तो बड़ी आसानी से ये सब कुछ समझा दिया। लेकिन अभी भी कुछ सवाल मेरे दिमाग़ में पैदा हो रहे हैं। प्लीज़! उन्हें भी क्लियर कर दो।''

मैंने कहा कि हां-हां! जितना मुझे पता है उतना ज़रूर बता दूंगी।

''ठीक है। ये बताओ कि जिन हैवानों का गोश्त हलाल है जैसे भैंस, गाय, भेड़, बकरी, मुर्ग़ा या चिड़िया वग़ैरा, क्या यह खुद भी पाक हैं?'' समीना ने पूछा।

मैंने कहा, ''हां! ये सब पाक हैं।''

''अच्छा! चमगादड़ का पाख़ाना या पेशाब?''

''ये भी पाक है।''

समीना कुछ देर रूक कर बोली, ''मुरदार के

बाल, नाख़ून, सींग, दांत, पंजे यानी वह सारी चीज़ें जिनमें जान नहीं होती, क्या वह भी पाक हैं या नजिस हैं?''

मैंने कहा कि हां! ये सबके सब पाक हैं।

''जंगली और घरेलू चूहों के पाख़ाने के बारे में शरीअत का क्या हुक्म है?''

मैंने जवाब दिया कि नजिस हैं क्योंकि उनमें ख़ूने जहिंदा होता है।

चलो! ठीक है। अब ये बताओ कि अगर मुझे पहले से किसी चीज़ के पाक होने का यक़ीन हो और बाद में शक होने लगे कि कहीं नजिस तो नहीं हो गई जैसे मेरा हाथ पाक था, बाद में शक होने लगे कि कहीं नजिस तो नहीं हो गया, अब इसे पाक माना जाए या नजिस?''

मैंने कहा कि इस सूरत में पाक माना जाएगा।

''और अगर इसका उल्टा हो जाए। मान लो कि किसी चीज़ के नजिस होने का यक़ीन हो और बाद में शक होने लगे कि कहीं पाक तो नहीं कर लिया है जैसे मेरा हाथ या कपड़ा नजिस था। बाद में मुझे शक हुआ कि शायद पाक कर लिया है। ऐसे में क्या हुक्म है?''

मैं बोली, ''ऐसा है तो नजिस माना जाएगा।''

चाय पीते-पीते समीना पूछने लगी कि वह चीज़ जिसके बारे में हमें पता ही न हो कि नजिस थी या पाक तो उसको क्या समझेंगे, जैसे हमारी यह बर्थ।

अरे भई! जिन चीज़ों के बारे में मालूम ही न हो, वह पाक हैं।''

''अच्छा! चलो अब बस करो। अब लेटा जाए।'' मैंने कहा।

हां! सही कह रही हो। वैसे तुम्हारी आज की बातों से मैंने बहुत कुछ सीखा है। जो बातें रह गईं है उन्हें वापसी में पूछूंगी। सच ये है कि आज की हमारी बातों से हमारा ये सफ़र यादगारी हो गया है। मैं इस सफ़र को कभी नहीं भूलूंगी। ●

शादी से पहले की दोस्ती

शादी से पहले अगर लड़के और लड़की में दोस्ती हो तो वह दोनों एक दूसरे को ज़्यादा अच्छे तरीक़े से पहचान सकते हैं, सवाल ये है कि क्या इस तरह की दोस्ती में कोई हर्ज है?

शादी से पहले होने वाली दोस्तियां ख़ुद लड़कों और लड़कियों के लिए बहुत सी मुश्किलें पैदा कर देती हैं, उनकी ज़िन्दगी में बहुत सी ख़राबियां पैदा कर देती हैं और इसके साथ ही साथ इसमें कुछ और परेशानियां भी हैं जो इस तरह हैं:-

1- इस तरह की दोस्तियों से ख़ास तौर पर लड़कियों को ज़्यादा ख़तरा होता है। दोनों जवान अपनी उमंगों और जज़बात में डूबे हुए होते हैं। बहुत सी जगहों पर इस बात का ख़तरा होता है कि वह किसी ग़लत रास्ते पर न चले जाएं जिससे लड़की की इज़्ज़त-आबरू ख़तरे में पड़ जाए।

इसी वजह से क़ुरआन और हदीसों में इस तरह की दोस्तियों की मुख़ालिफ़त की गई है। ख़ुदा ने क़ुरआन में लड़कों और लड़कियों को अकेले एक दूसरे से मिलने से मना किया है। इसके लिए सूरए बक़रा की आयत 235, सूरए माएदा की आयत 5 और सूरे निसा को देखा जा सकता है।

इस बारे में रसूले ख़ुदा[स०] फ़रमाते हैं, ''कोई भी आदमी किसी नामहरम औरत के साथ न रहे क्योंकि जब भी कोई आदमी किसी नामहरम औरत के साथ रहता है तो वहां पर तीसरा शैतान होता है।[1]

इसी वजह से हमारे उलमा भी कहते हैं कि अगर नामहरम मर्द और औरत किसी ऐसी जगह पर हों जहां कोई तीसरा न आ सकता हो और उन्हें हराम में पड़ने का ख़तरा हो तो उनके लिए ज़रूरी है कि वह उस जगह से बाहर निकल जाएं और उनका वहां पर रुकना हराम है। इसी तरह नामहरम से ज़रूरत से ज़्यादा बात करना भी मकरूह है। यह सब इसीलिए है ताकि बुराई, बेइज़्ज़ती और गुनाह का मौक़ा न आए और फ़ैमिली सिस्टम को नुक़्सान न पहुंचे।

2- ऐसी दोस्तियों की वजह से तोहमत लगने का ख़तरा होता है क्योंकि दूसरे लोग लड़के और लड़की को एक साथ देखेंगे तो यही समझेंगे कि उनमें आपस में ग़लत ताअल्लुक़ात हैं जो ख़ास तौर पर लड़की के लिए बहुत नुक़्सानदेह है।

3- इस तरह की दोस्ती में एक दूसरे को अच्छी तरह नहीं पहचाना जा सकता क्योंकि दोनों एक दूसरे के साथ बहुत संभल-संभल कर रहते हैं और अपनी कमियां ज़ाहिर नहीं करते हैं।

4- अगर इस तरह की दोस्ती के बाद शादी हो जाए तो मर्द अपनी ग़ैरत की वजह से यह ज़रूर सोचेगा कि मेरी बीवी ने शादी से पहले मुझसे दोस्ती क्यों की, कहीं ऐसा न हो कि वह मुझसे पहले भी दूसरों के साथ इस तरह के ताअल्लुक़ात रख चुकी हो। जिससे उसका भरोसा ख़त्म हो सकता है जो कि शादी के बाद सबसे अहम चीज़ है।

5- अगर दोस्ती के बाद शादी न हो जैसा कि आमतौर पर ऐसा ही होता है क्योंकि हालात बदल जाते हैं और बहुत सी ऐसी दूसरी बातें आ जाती हैं जिसकी वजह से ऐसी दोस्तियों के नतीजे में शादी नहीं हो पाती। ऐसी सूरत में ख़ास तौर पर लड़की को बेइज़्ज़ती का एहसास होता है वह मर्दों से नफ़रत करने लगती है और शादी से दूर भागती है।

सवाल :- मेरी एक लड़की से दोस्ती है और मैं उससे शादी करना चाहता हूं। मेरा यह इश्क़ पाको-पाकीज़ा है और किसी ग़लत ख़्वाहिश या हवस के लिए भी नहीं है, क्या इस तरह की दोस्ती में कोई हर्ज है?

जवाब :-आपको इस बात की तरफ़ ध्यान रखना चाहिए कि यह ज़ाहिरी इश्क़, सेक्चुअल डिज़ायर्स की बुनियाद पर है। यह एहसासात जो देखने में पाक हैं, कहीं आपको धोखा न दें। आज हमारे सामने बहुत सी ऐसी मिसालें हैं कि इस तरह के ज़्यादातर ताअल्लुक़ात का अंजाम ग़लत होता है जो शराफ़त और पाकीज़गी के ख़िलाफ़ है।

आपको इस बात का एहसास होना चाहिए कि आप जवान हैं, आप में जवानी की उमंगें हैं, जज़बात हैं। आप हज़रत अली[अ०] से ज़्यादा पाकीज़ा किरदार वाले तो बिल्कुल नहीं हैं जो जवान औरतों को सलाम नहीं करते थे और फ़रमाते थे कि मुझे इस बात का डर है कि कहीं उनकी आवाज़ मुझे अच्छी न लगे।[2] आप हज़रत मूसा[अ०] से भी ज़्यादा मोमिन नहीं हैं जो जनाबे शुऐब की लड़कियों के साथ उनके घर की तरफ़ जाते हुए उन लड़कियों के आगे-आगे चल रहे थे और लड़कियां पीछे से अपने घर का रास्ता बता रही थीं ताकि उनकी निगाहें उन लड़कियों पर न पड़ें।

आप हज़रते यूसुफ़[अ०] से भी ज़्यादा पाकीज़ा किरदार वाले नहीं हैं जिनके बारे में क़ुरआन में है कि अगर हज़रत यूसुफ़ की इसमत, नबुव्वत और ख़ुदा की मदद न होती तो वह ज़ुलैख़ा के जाल में गिरफ़्तार हो सकते थे।[3] हमारी लड़कियां बहेरहाल जनाबे मरयम[अ०] से ज़्यादा पाकीज़ा किरदार वाली नहीं हैं कि जब जिब्रील उनके सामने एक ख़ूबसूरत जवान की शक्ल में ज़ाहिर हुए तो उन्होंने फ़रमाया कि मैं तुमसे ख़ुदा की पनाह चाहती हूँ।[4]

इन दोस्तियों में एक दूसरे से नज़दीक होने और जज़बात की वजह से बहरहाल आपसे ग़लती हो सकती है और आपकी शराफ़त पर आंच आ सकती है। इन सारी बातों के अलावा चूंकि आप इन दोस्तियों में अपने जज़बात का इस्तेमाल करते हैं तो अगर आप की शादी हो जाए तो शादी के बाद इस तरह से इश्क़ और मुहब्बत से पेश नहीं आ सकते हैं जबकि शादी के बाद की ज़िन्दगी में मियां-बीवी में इश्क़ और मुहब्बत सबसे अहम रोल अदा करता है और अगर इसमें कमी हो जाए तो ज़िन्दगी बर्बाद हो जाती है।

1- दआएमुल इस्लाम, जि० 2, स० २14, 2-उसूले काफ़ी, जि० 2, स० 648, 3-सूरए यूसुफ़/24, 4-सूरए मरयम/18 ●

ये रस्में...?

अख़तर अब्बास जौन

आपसी ज़िन्दगी के असर

जब दो कल्चर, दो मज़हब यहां तक कि दो ज़बान के लोग एक दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारते हैं तो एक दूसरे पर उनके ज़िंदगी का असर कहीं न कहीं ज़रूर पड़ता है। यह एक ऐसी हक़ीक़त है जिससे इंकार नहीं किया जा सकता। यह असर कभी एक दूसरे के लिए पॉज़िटिव और फ़ाएदेमंद होते हैं और कभी निगेटिव और नुक़सानदेह।

नुक़सानदेह असर अगर थोड़े-बहुत हों तो उन्हें बर्दाश्त भी किया जा सकता है और किसी बड़े मक़सद पर उन्हें क़ुरबान भी किया जा सकता है लेकिन अगर इनका असर बड़े पैमाने पर हो तो फिर समाज के हर मिम्बर, ख़ास कर लीडर्स को इस बारे में संजीदगी से ग़ौर करना पड़ेगा।

दीन को खोखला करने वाली रस्में

अगर हमारी दीनी रस्मों पर दूसरे मज़हबों और दूसरे कल्चर्स का इस बुरी तरह से असर पड़ रहा हो कि हमारी दीनी रस्मों में हमारे अस्ली दीन की रूह ही बाक़ी न रह जाए तो यह एक बड़ा नुक़सान है और यह एक ऐसा मसला नहीं है जिसे छोटा सा समझ कर टाल दिया जाए। नामुनासिब रस्मों का दीन में दाख़िल होना इंसान की दीनदारी को अंदर से खोखला कर देता है और हर इंसान की नज़र में सिर्फ़ कुछ रस्में रह जाती हैं जिनमें हो सकता है कि कुछ ऐसी रस्में भी हों जिनका दीन से कोई रिश्ता ही न हो बल्कि ऐसा भी देखने में आया है कि दीन के नाम पर इस तरह की रस्में अंजाम देकर इंसान इतना मुतमईन हो जाता है कि फिर अगर उसके सामने हक़ीक़ी दीन और उसके उसूलों का मज़ाक़ भी उड़ाया जाए तो उसे ज़रा सी भी परवाह नहीं होती। यह एक बड़ा नुक़सान है जिसकी तरफ़ हमारा ध्यान बहुत कम जाता है।

ऐसे ही बड़े नुक़सानों में से एक शादी-बियाह से रिलेटेड बहुत सी ऐसी रस्में हैं जिनकी कोई बुनियाद नहीं है और जो कभी-कभी बहुत से घरानों की कमर भी तोड़ देती हैं, ऐसी रस्में जिनका इस्लाम से दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं होता।

आसान शादी

शादी इंसान की एक बुनियादी ज़रूरत है जिसे इस्लाम ने अमली तौर पर बहुत आसान बनाकर पेश किया है। रसूले ख़ुदा[स०] और इमामों[अ०] की ज़िंदगी हमारे लिए एक आइडियल है जिसके बाद हमें किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं है। क़ुरआन ने भी रसूल[स०] को हमारे लिए इसी तरह से पहनचवाया है, "रसूल अल्लाह[स०] की ज़ात में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूनए अमल है।"

रसूल अल्लाह[स०] ने जनाबे ज़हरा[अ०] की शादी जिस सादगी से की उसको हम सब जानते हैं। इसके अलावा मदीने में जब भी किसी को शादी करना होती थी तो वह मस्जिद में आता था और रसूल[स०] मस्जिद में नमाज़े जमाअत के बाद मोमिनीन के बीच उसका निकाह पढ़ देते थे और इस तरह आसानी से शादी हो जाती थी। अगर कोई मोमिनीन और ग़रीबों को खाना खिलाने की ताक़त भी रखता था तो वह खिला देता था। खाना खिलाना एक मुस्तहब काम है जिसके लिए इंसान को क़र्ज़ लेने, अपनी ज़रूरत की प्रापर्टी को बेचने और दूसरों के सामने हाथ फैला कर ख़ुद को ज़लील करवाने जैसे कामों की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि ख़ुद को ज़लील करना हराम है जबकि खाना खिलाना सिर्फ़ एक मुस्तहब काम है।

ज़िन्दा मिसालें

अभी भी कुछ मुल्कों में देखने में आता है कि वहां जितनी भी शादियां होती हैं वह शहर की मस्जिद में होती हैं और अगर किसी की हैसियत होती है तो वह मस्जिद में आने वाले लोगों को खाना खिला देता है, अपने रिश्तदारों को भी वहीं दावत दे देता है और अगर दावत नहीं दे सकता है तो मिठाई बांट देता है और मस्जिद ही से लड़के वाले लड़की को बग़ैर किसी ग़लत रस्म के अपने घर लेकर चले जाते हैं। इस तरह वह ख़ुद को बहुत से गुनाहों से भी बचा लेते हैं।

एक रूहानी बीमारी

ज़्यादा से ज़्यादा जहेज़ देना, दसियों क़िस्म के ख़ाने पकवा कर खाने की बर्बादी के साथ-साथ इंसान के पेट को भी ख़राब करना, बड़े-बड़े मैरिज हालों में शादी करना और उसके ज़रिए अपनी शान-शौकत में इज़ाफ़ा करने की फ़िक्र करना दरहक़ीक़त एक रूहानी बीमारी है जो बहरहाल नुक़सानदेह है। जब किसी को छुआ-छूत की बीमारी होती है तो लोग ख़ुद को उससे बचाते हैं। झूटी इज़्ज़त हासिल करना भी एक ऐसी ही नुक़सानदेह बीमारी है जिससे हर एक को बचना चाहिए। ऐसे बीमार इंसान की अक़्ल पर रहम खाते हुए उसे भी सही मश्वरे देना चाहिएं ताकि वह भी ख़ुद को बचा सके।

जहेज़ मांगने वाले

जो लोग जहेज़ मांगते हैं उन पर तो कुछ ज़्यादा ही रहम ख़ाने की ज़रूरत है क्योंकि उन्होंने अपनी ज़िंदगी का सबसे बड़ा सरमाया खो दिया है जिसे मज़हबी ज़बान में 'इज़्ज़ते नफ़्स' और आम ज़बान में सेल्फ़-प्रस्टिज कहते हैं।

इज़्ज़ते नफ़्स न हो तो इंसान ख़ुद को हर तरह की ज़िल्लत क़ुबूल करने के लिए तैयार कर लेता है। इन्हीं ज़िल्लतों में से एक ज़िल्लत जहेज़ मांगना है, वह भी एक ऐसे इंसान से जो ख़ुद भी शादी और दूसरी तरह-तरह की मुश्किलों में फ़सा हुआ है। जबकि परेशान हाल लोगों से फ़क़ीर भी भीख़ नहीं मांगते।

बेचारे फ़क़ीर

इस्लाम की नज़र में और साथ ही लोगों की निगाह में भी मांगने और सवाल करने वाले सारे इंसान एक जैसे हैं चाहे वह जहेज़ मांगें या फ़ुटपाथ पर बैठ कर एक सिक्का मांगें क्योंकि दोनों मांगने वाले जो कुछ मांग रहे हैं उसके बदले में उससे कहीं ज़्यादा क़ीमती चीज़ अपने हाथ से खो रहे हैं और वह क़ीमती चीज़ इंसान की अपनी इज़्ज़ते नफ़्स है, ये मांगने वाला चाहे ज़रूरतमंद ही क्यों न हो। इमाम बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं, "अपनी ज़रूरतों के लिए दूसरों से सवाल करना इंसानी इज़्ज़त को बर्बाद और हया को ख़त्म कर देता है।" [1]

ऐसी रस्में क्यों?

हमारी शादियों में कुछ ऐसी रस्में भी हैं जो हलाल-हराम, मेहरम-नामेहरम, सवाब-अज़ाब के फ़र्क़ को मिटा देती हैं और ये वह हालत है जिसमें इंसान को इस दुनिया से ज़्यादा आख़िरत में ज़िल्लत का सामना करना पड़ सकता है...

1-वसाएलुश शिया, जि० 6, स० 314

वह ग़लतियां जो शौहर-बीवी के झगड़े को बद से बद्तर बना देती हैं

■ ज़ेबा ज़ैदी

अब तक की रिसर्च से यह बात सामने आई है कि मियां-बीवी का एक दूसरे के साथ अच्छा बर्ताव न सिर्फ़ यह कि उनके आपसी मेलजोल को अच्छा बनाता है बल्कि उनके बीच मुहब्बत, भरोसे और एक दूसरे की मदद करने के जज़्बे को भी बढ़ाता है, जबकि बुरा बर्ताव उनके आपसी मेलजोल और मुहब्बत को ख़त्म कर देता है जिसकी वजह से आपस में एक दूसरे पर भरोसा बाक़ी नहीं रहता है। हम यहां पर मियां-बीवी के बीच कुछ ऐसे नमूनों को पेश कर रहे हैं जो एक छोटी सी बात को भी बड़ी लड़ाई में बदल देते हैं।

कुछ देर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर न करना

कुछ लोग एक अच्छे माहौल में बैठ कर बात करने के बजाए कोशिश करते हैं कि अपनी नाराज़गी के बारे में किसी तरह की कोई भी बात सामने वाले से न करें और बाद में अचानक गुस्से की हालत में अपनी बातें कह कर दिल की भड़ास निकाल लें। हक़ीक़त में ऐसा करने से न सिर्फ़ यह कि आदमी हल्का नहीं होता बल्कि दूसरी बड़ी उलझनों में फंस जाता है। इसलिए ऐसा तरीक़ा अपनाने से दोनों को गुस्सा आता है और वह गुस्सा एक भयानक टकराव में बदल जाता है। इसलिए सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि सुकून से बैठकर आपस में बात-चीत करके अपनी मुश्किलों का हल निकालने की कोशिश करें।

शख़्सियत पर हमला

कभी-कभी कुछ लोग सामने वाले की छोटी-छोटी बातों को अहमियत देकर बड़ा बना देते हैं जैसे शौहर घर आकर अपने मोज़ों को इधर-उधर फैंक देता है तो बीवी उसको एक बहुत बुरा ऐब समझती है और अपने शौहर को काहिल का नाम दे देती है। याद रहे कि हर हाल में सामने वाले की शख़्सियत का एहतेराम कीजिए, यहां तक कि अगर उसकी कोई बात पसंद न भी हो।

मुश्किल के वक़्त अपना दामन झाड़ना

कभी-कभी शौहर और बीवी में से कोई एक अगर किसी मुश्किल के बारे में सामने वाले से बात करना चाहता है तो सामने वाला उसकी बात को अनसुना कर देता है और बेपरवाह हो जाता है। हक़ीक़त में ये सामने वाले की तौहीन है जो एक छोटी सी बात को लड़ाई की शक्ल दे देती है। इसलिए बेहतर है कि मुहब्बत और एहतेराम के साथ सामने वाले की बात को सुनिए।

बेवजह अपनी सफ़ाई देना

कुछ लोग सामने वाले की शिकायतों को सुनने और उसकी राय को समझने के बजाए इस बात की कोशिश करते हैं कि अपनी हर ग़लती से इंकार कर दें और अपना दामन झाड़ कर अलग हो जाएं। ऐसे लोग किसी भी क़ीमत पर दबना नहीं चाहते, जबकि हो सकता है कि उन्होंने ही मुश्किल ख़ड़ी की हो। शायद अपनी ग़लती न मानना थोड़ी देर के लिए मुश्किल को हल कर दे लेकिन यही कभी-कभी बड़ी मुश्किलों की वजह बन जाता है।

छोटी सी बात को बड़ा बनाना

याद रखिए कि लड़ाई के वक़्त कभी भी *'तुम हमेशा...'* या *'तुम कभी भी...'* जैसे लफ़्ज़ों से अपनी बात शुरू न करें जैसे *'तुम हमेशा देर से घर आते हो'* या *'तुम कभी भी मेरा ख़्याल नहीं करते'*। ज़रा ठंडे दिमाग़ से सोचिए कि क्या यह जुमला सही है। इसी तरह कभी भी पुरानी मुश्किलों का सहारा लेकर किसी छोटी सी मुश्किल को बड़ा मत बनाइए।

इंसाफ़ का ख़्याल न रखना

अगर आप यह सोचती हैं कि हर काम सही तरीक़े से भी हो सकता है और ग़लत तरीक़े से भी और आपका तरीक़ा हमेशा सही होता है तो इस तरह आपसी रिश्ता ख़राब हो जाएगा। कभी भी यह मत सोचिए कि सामने वाला भी आप ही की तरह सोचे। अगर सामने वाले की राय आपकी राय से अलग हो तो लड़ाई-झगड़ा शुरू मत कीजिए। ज़रूरी नहीं है कि दो लोगों की अलग-अलग राय में एक राय सही हो और दूसरी ग़लत क्योंकि हो सकता है दोनों की राय अपनी-अपनी जगह पर सही हो।

बदगुमानी

कुछ लोग समझते हैं कि वह सामने वाले की फ़िक्र और एहसास को अच्छी तरह समझते हैं जबकि यह उनकी ग़लतफ़हमी होती है। जैसे मियां बीवी आपस में यह तय करते हैं कि फ़ुलां दिन फ़ुलां जगह घूमने जाना है लेकिन उस दिन किसी वजह से उनमें से कोई एक वहां जाने से मना कर देता है। ऐसे में अगर दूसरा यह सोचे कि यह इसलिए नहीं जा रहा है क्योंकि उसकी नज़र में मेरी कोई अहमियत नहीं है तो जान लीजिए कि इस तरह की बदगुमानियों से आपसी भरोसा ख़त्म हो जाएगा।

एक दूसरे की बात को ग़ौर से न सुनना

कुछ लोग सामने वाले की बात समझने के बजाए उसकी बातें काट कर अपनी बातें शुरू कर देते हैं या फिर इधर-उधर देखकर सामने वाले की बात की अहमियत ख़त्म करना चाहते हैं। नतीजे में यह समझना मुश्किल हो जाता है कि सामने वाला क्या सोच रहा है और क्या चाहता है। इसलिए हमेशा सामने वाले की बात को ग़ौर से सुनें और उसे अहमियत देने की कोशिश करें।

अपनी ग़लती दूसरों के सर मढ़ना

कुछ लोग सामने वाले की बात को ग़लत साबित करके उसको क़ुसूरवार समझते हैं जिसकी वजह से बाद में मुश्किलें पैदा हो जाती हैं। ये लोग अपनी ग़लतियों को नहीं मानते और अपनी बात पर अड़े रहते हैं क्योंकि वह ये समझते हैं कि अपनी ग़लती और कमी को क़ुबूल करके उनकी नाक कट जाएगी। ये सही नहीं है, इसके बजाए कोशिश करें कि हर लड़ाई-झगड़े को सिर्फ़ एक लड़ाई समझने के बजाए मुश्किल के हल के लिए एक मुनासिब मौक़ा समझें।

आपसी लड़ाई में बाज़ी मारने की कोशिश

दो लोगों का आपस में बहस करने का मक़सद एक दूसरे को समझना या फिर मुश्किल का हल निकालना होना चाहिए जिसमें दोनों की ज़रूरतों को सामने रखा जाए। अगर आपकी कोशिश यह हो कि सामने वाले की ग़लती को पकड़ा जाए और सिर्फ़ अपनी राय को दूसरों पर थोपा जाए तो जान लें कि आपने ग़लत रास्ता चुना है। ●

कहीं ऐसे हम तो नहीं...

■ बाक़िर काज़मी

कुछ लोगों से इस्लाम लड़की की शादी करने को मना करता है, जैसे फ़ासिक़, शराबी, पागल या बदकिरदार वग़ैरा और इस तरह से इस्लाम लड़की की इज़्ज़त और हैसियत की हिफ़ाज़त करता है। इसी तरह इस्लाम एक शरीफ़ मोमिन और दीनदार लड़के को ऐसी लड़की के साथ शादी करने से भी रोकता है जिसमें इस्लामी सिफ़तें न हों।

इस बारे में कुछ हदीसों को हम यहां पेश कर रहे हैं :-

रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं, "बेवक़ूफ़ और अहमक़ औरत से शादी मत करो, उसके साथ रहने से ज़िंदगी बर्बाद हो जाती है। उसकी औलाद दूसरों पर ज़्यादती करती है।"

एक और हदीस में पैग़म्बर[स०] फ़रमाते हैं, "उन ख़ूबसूरत लड़कियों से शादी मत करो जो बुरे और गंदे माहौल में पलती हैं।"

रसूले खुदा[स०] यूं दुआ करते हैं:-

१-मुझे ऐसी औलाद न दे जो मेरी बात मानने के बजाए मेरे ऊपर हुक्म चलाए।

२-मुझे ऐसी औलाद न दे जो फ़ायदा पहुंचाने से पहले ही बर्बाद हो जाए।

३-ऐसी बीवी से बचा जो वक़्त से पहले मुझे (अपनी हरकतों से) बूढ़ा कर दे।

४-मुझे मक्कार और धोख़ेबाज़ दोस्त से बचा।

एक और हदीस में पैग़म्बर[स०] फ़रमाते हैं, "सबसे बुरी औरतें वह हैं जो बच्चे पैदा नहीं कर सकतीं, सफ़ाई का ख़्याल नहीं रखतीं, झक्की और नाफ़रमान होती हैं, रिश्तेदारों में ज़लील लेकिन ग़ैरों में इज़्ज़तदार होती हैं। शौहर की नहीं सुनतीं लेकिन दूसरों की बात ख़ूब सुनती हैं।"

एक दूसरी हदीस में आप[स०] फ़रमाते हैं, "तीन चीज़ों में नहूसत हो सकती है: औरत, सवारी (घोड़ा, खच्चर) और घर।

वह औरत जिसका महर ज़्यादा हो लेकिन वह बच्चे पैदा न कर सकती हो।

वह घोड़ा जो ज़्यादा बीमार होता हो और साथ ही सरकश भी हो।

ऐसा घर जो छोटा हो और उसके साथ ही उसके पड़ोसी भी बुरे हों।"

एक और हदीस में रसूल[स०] फ़रमाते हैं, "सबसे बुरी चीज़, बुरी औरत है।"

हज़रत अली[अ०] एक हदीस में फ़रमाते हैं, "सबसे बुरी बीवी वह है जिसकी अपने शौहर से नहीं बनती (और आये दिन घर में झगड़ा होता है)।"

एक दिन रसूल[स०] ने लोगों से फ़रमाया, "मैं तुम्हें बुरी बीवीयों और औरतों के बारे में बताता हूँ : वह औरत जो रिश्तेदारों की नज़र में ज़लील और शौहर के सामने घमंडी होती है, दिल में कीना रखती है और बच्चे पैदा नहीं कर सकती। जब शौहर घर में नहीं होता तो मेक-अप करती हैं और होता है तो अपने को नहीं संवारती, न उसकी बात सुनती है और न उसका कहा मानती है। जब शौहर के साथ अकेली होती हैं तो उसके पास नहीं जाती। अगर शौहर कोई ग़लती कर देता है तो उसे नहीं बख़्शती और उसकी बात नहीं सुनती।"

एक अच्छा घराना और अच्छा समाज एक औरत की मुट्ठी में होता है। हमारे मासूमीन[अ०] ने हुक्म दिया है कि हमें अपने अंदर अच्छी आदतें पैदा करने और बुरी आदतों से बचने का हुक्म दिया है क्योंकि बुरी आदतों और बुरे कामों की वजह से हमें बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।

बुरा ख़ानदान एक बीमार की तरह होता है और इस ख़तरनाक बीमारी से बचने का नुस्ख़ा हमारे पास है। अगर हम इस नुस्ख़े पर लिखी दवा खाएंगे तभी फ़ायदा हो सकता है और अगर नहीं ख़ाएंगे या कोई दूसरी दवा ख़ाएंगे तो फिर...जो होगा वह सब जानते हैं।

एक पढ़ा-लिखा, बाअदब और ख़ूबसूरत समाज हम और आप सब की तमन्ना है।

ईदे ग़दीर

के मौक़े पर

TAHA FOUNDATION

आपको दिली मुबारकबाद पेश करता है।

TAHA TV

MOHARRAM 2011

TAHA TV: 9936 653 509, 9453 826 444
Email: tahatv@gmail.com